वन्दना

* वन्दना प्रकाशन परिवार *

श्री हुक्मीचन्द मालू
प्रकाशक

वकील
श्री सुल्तानमल जैन
सलाहाकार

भूरचन्द जैन
सम्पादक

श्री उदयराज जैन
व्यवस्थापक

श्री लूणकरण संखलेचा
कोषाध्यक्ष

प्रकाशकीय–

राजस्थान का पश्चिमी सीमावर्ती बाड़मेर जिला जो पाकिस्तान की सीमा से सटा होने के कारण अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा है। जिले का मुख्यावास बाड़मेर नगर जैन धर्मावलम्बियों की प्रमुख बस्ती है। जैन धर्म के प्रचार एवं प्रसार में यहां के जैन समुदाय सदैव सक्रिय योगदान देते रहे है। वर्ष १९७३ में बाडमेर के जैन समाज ने पूज्यवर श्री विचक्षण श्री श्री महाराज साहिबा की प्रेरणा से उनकी सुशिष्या पूज्यवर मनोहर श्री जी महाराज साहिबा ढाणा ६ की निश्रा में बाड़मेर नगर में ग्रीष्मकालिन जैन धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक १० जून ७३ से २४ जून ७३ तक किया। इस प्रकार का जैन धार्मिक शिक्षण शिविर बाड़मेर के इतिहास में पहली बार ही आयोजित किया गया था। जो महत्वपूर्ण उपलब्धियों के साथ सफलीभूत रहा। शिविर में विद्यार्थियों को धार्मिक एवं आध्यात्मिक शिक्षण देने के अतिरिक्त शिष्टाचार की शिक्षा देने में महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस प्रकार के शिविर से बच्चों के ग्रीष्मकाल के अवकाश के सदुपयोग के साथ साथ उनमें जैन धर्म के अंकुर बोने का अच्छा अवसर मिलता है।

बाड़मेर ग्रीष्मकालिन जैन धार्मिक शिक्षण शिविर को सफलीभूत बनाने में दानदाताओं का अमूल्य सहयोग सदैव स्मरणीय रहेगा। शिविर समिति की सेवा भावना ने शिविर को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिविर के बच्चों के पढ़ने एवं अन्य व्यवस्था में श्री वर्द्धमान जैन मंडल का अनुकरणीय योगदान रहा। इसी शिविर की स्मृति को चिर स्थाई बनाने के लिये स्मारिका का प्रकाशन करना भी नितान्त आवश्यक था, लेकिन कुछ परिस्थितियों के कारण शिविर समिति एवं श्री वर्द्धमान जैन मंडल ने स्मारिका के प्रकाशन को हाथ में नहीं लिया तब इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिये पूज्यवर मनोहर श्री जी महाराज साहिब की प्रेरणा से कुछ मित्रों ने इस कार्य को पूरा करने का बीड़ा उठाया। मित्रों ने मिलकर वन्दना प्रकाशन समिति का गठन किया जिसके सलाहाकर श्री सुल्तानमल जैन एडवोकेट, प्रकाशक-हुक्मी चन्द मालू, सम्पादक श्री भूरचन्द जैन, व्यवस्थापक श्री उदयराज जैन, एवं कोषाध्यक्ष श्री लूणकरण संखलेचा ने मिलकर स्मारिका के प्रकाशन का कार्यभार अपने कन्धों पर लिया। स्मारिका का नाम करण 'वन्दना' रखा गया जिसके लिये इस समिति के कार्यकर्ताओं द्वारा स्मारिका के लिये रचनाएँ, विज्ञापन, कागज आदि जुटाने का प्रयास किया। समिति के सदस्यों ने कागज, ब्लोकों एवं अन्य प्रकार के पूर्व के खर्चों को अपने निजी तौर पर विज्ञापनों से एकत्रित करके जो अनुकरणीय योग दिया उसके लिये आभार प्रदर्शित करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

स्मारिका के प्रकाशन के लिये सम्पादन के महत्वपूर्ण कार्य के लिये मैं अपने मित्र श्री भूरचन्द जैन का अन्त:करण से अत्यन्त ही आभारी हूँ जिन्होंने दिन रात अथक परिश्रम करके इसे पूर्ण करने में सक्रिय योगदान दिया।

कुछ आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक अड़चनों के बीच में बाड़मेर में सन् १९७३ में आयोजित ग्रीष्म–कालिन जैन धार्मिक शिक्षण शिविर की स्मृतियों को सदैव तरोताजा रखने में यह वन्दना स्मारिका महत्वपूर्ण स्मृति बनी रहेगी।

स्मारिका प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में जिन महानुभावों ने सहयोग दिया है उसके लिये मैं और वन्दना प्रकाशन समिति आभार प्रदर्शित करते है। यह प्रकाशन मात्र जैन धर्म के व्यापक प्रचार एवं शिविर स्मृति के लिये किया गया है फिर भी कई त्रुटियां अशुद्धियां आदि रह गई हो तो हम क्षमा प्रार्थी है।

'वन्दना' स्मारिका पूज्यवर मनोहर श्री जी महाराज साहिबा एवं उनके साथ विचरण करने वाली साध्वी समुदाय के आशीर्वाद एवं प्रेरणा का प्रतीक मात्र है। इन पूज्यवर साध्वी समुदाय के हम अत्यन्त ही

☞

बाड़मेर (राजस्थान) में जैन श्री संघ की ओर से वर्ष १९७३ में जैन विद्यार्थियों का ग्रीष्मकालिन जैन धार्मिक शिक्षण शिविर पूज्यवर श्री विचक्षण श्री जी महाराज साहिबा की प्रेरणा से पूज्यवर मनोहर श्री जी महाराज साहिबा एवं आपके साथ विचरण करने वाली अन्य साध्वि समुदाय के तत्वाधान में लगा। शिविर में शिविर समिति एवं श्री वर्द्धमान जैन मंडल के कार्य-कर्त्ताओं के साथ मुझे भी सेवा करने का सौभाग्य मिला। शिविर की धार्मिक गतिविधियों, धार्मिक शिक्षण एवं अन्य गतिविधियों का जब स्मरण करता हूँ तब मन मयूर नाच उठता है। ऐसे शिविर ही बच्चों में आध्यात्मिक, धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसी शिविर की चिरकाल तक स्मृति बनाने के लिये पूज्यवर मनोहर श्री जी महाराज साहिबा आदि ठाणा ६ की प्रेरणा से हमें 'वन्दना' स्मारिका प्रकाशित करने का अवसर मिला।

'वन्दना' स्मारिका के लिये वन्दना प्रकाशन समिति का गठन किया गया जिन्होंने दिन रात अथक परिश्रम कर इस स्मारिका को सुन्दर और उपयोगी बनाने का भरसक प्रयास किया।

स्मारिका में शिविर सम्बन्धी गति विधियों, शिक्षा सम्बन्धी रचनाओं, जैन धर्म प्रचार सम्बन्धी निबन्ध एवं भगवान महावीर स्वामी के सम्बन्ध में भी कुछ पढ़नीय सामग्री देने का हमारा पूरा प्रयास रहा है लेकिन हम कितना कर सके है यह पाठकों के लिये विचारणीय है। बाड़मेर नगर में चलने वाली विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के परिचय देने का प्रथम बार प्रयास किया है। यद्यपि सामग्री जुटाने एवं प्रकाशन करने में हमारी पूर्ण सतर्कता रही है फिर भी कुछ अशुद्धियें, त्रुटियें एवं भूले हुई ही है जिसके लिये मैं एवं वन्दना प्रकाशन समिति इस अभाव आदि के लिये क्षमा प्रार्थी हैं।

स्मारिका के सम्पादन में जिन लेखकों एवं कवियों ने अपनी अमूल्य कृतियें प्रकाशनार्थ प्रेषित की है उनके हम आभारी है। इस प्रकाशन कार्य के प्रूफ देखने में श्री मोहन मेहता का भी हमें सहयोग मिला, हम इनके भी आभारी है।

भूरचन्द जैन
सम्पादक
'वन्दना' स्मारिका

आभारी है जिन्होंने हमें प्रेरित कर इस महत्वपूर्ण कार्य को पूर्ण करने का अवसर प्रदान किया।

रामावत प्रिन्टिंग प्रेस के मालिक श्री ओमप्रकाश रामावत, मशीनमैन कुन्जविहारी, कम्पोजिटर श्री भानाराम चौधरी एवं श्री मोतीलाल यादव ब्लॉक मेकर–सरदार ब्लॉक मेकर, जोधपुर एवं विज्ञापनदाताओं आदि के हम अत्यन्त ही आभारी है जिन्होंने स्मारिका को सुन्दर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अन्त में मैं व्यक्तिगत तौर से एवं समिति की ओर से भूल, त्रुटियों एवं अशुद्धियों के लिये क्षमा चाहता हुआ निवेदन करूंगा कि आप इस 'वन्दना' स्मारिका का पठन कर अपने विचारों से अवगत करावें। जयजिनेन्द्र।

हुकमीचन्द मालू
प्रकाशक
वन्दना प्रकाशन समिति
बाड़मेर (राजस्थान)

बाड़मेर नगर में वर्ष १९७३ में
इन साध्वी समुदाय के चतुर्मास से जैन धर्म प्रचार का व्यापक
कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।
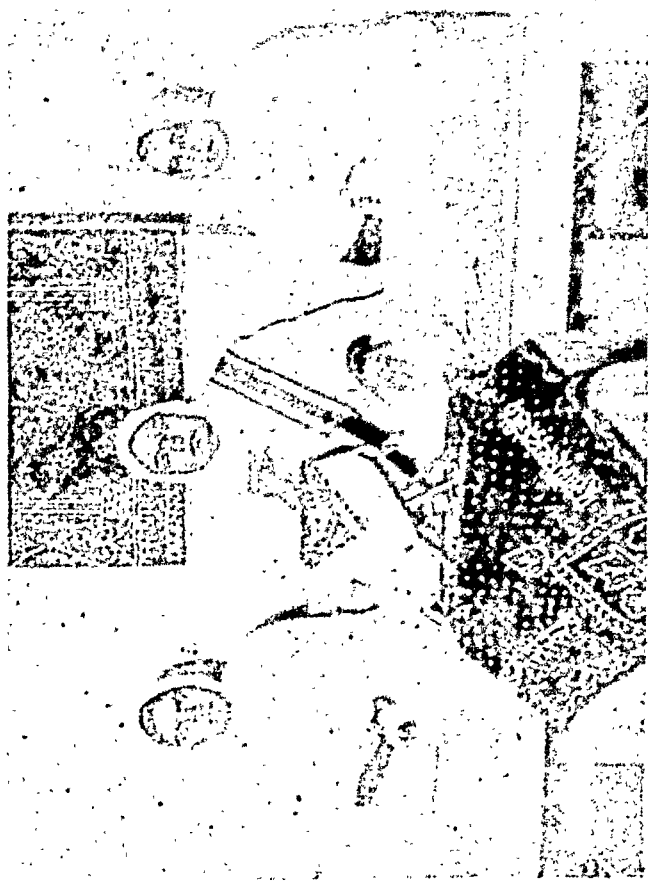
अनुक्रमणिका

१. अहिंसा और अनेकान्तवाद	—	पूज्यवर श्री विचक्षण श्री जी म० सा०	
२. शिविर शिक्षण से जीवन सर्जन	—	पूज्यवर श्री मनोहरश्री जी म० सा०	—१
३. जैन धार्मिक शिक्षण शिविर की आवश्यकता क्यों ?	—	श्री अगरचन्द नाहटा	— ३
४. क्रान्ति क्या और कैसे ?	—	श्री फूलचन्द बाफना	— ७
५. मानव मानव से दुखी क्यों ?	—	पूज्यवर श्री सुदर्शना श्री जी म० सा०	—११
६. अतीत के अविस्मृत क्षण	—	सुश्री सुधा संचेती	—१५
७. भगवान करे तुम मनुष्य बनो	—	पूज्यवर मुक्ति प्रभा श्री जी म० सा०	—१७
८. आत्मकल्याण का मार्ग चिन्तनमनन	—	श्री बुधसिंह बाफना	—१९
९. गुजरात के भारत विख्यात जैन तीर्थ	—	चित्रावली	
१०. अवसर से फायदा उठाना ज्वार से मोती पाना	—	पूज्यवर श्री मणिप्रभा श्री जी	—२१
११. जीवन सफल बनाएँ (कविता)	—	श्री धनराज चौपड़ा	—२३
१२. प्रभू भक्ति की महिमा	—	श्री राजरूप टांक	—२५
१३. आत्म कल्याण कैसे करें ?	—	श्रीमती भंवरी बाई रामपुरिया	—२७
१४. प्रगति के पथ पर	—	सुश्री आभा टांक	—२९
१५. शुद्ध संकल्पना	—	पूज्यवर श्री चन्द्रप्रभा श्री म० सा०	—३१
१६ मानवता का दुर्गम पथ (कविता)	—	श्री एम. सी. भंडारी	—३२
१७. जैन दर्शन का स्वास्थ्य से सम्बन्ध	—	डॉ० सुश्री एच. के. जैन	—३३
१८. जैन धर्म भूत और भविष्य	—	श्री मानचन्द भंडारी	—३५
१९. धर्म बिना विद्या अधूरी (कविता)	—	श्री धनराज चौपड़ा	—३६
२०. त्याग की सफलता	—	पूज्यवर श्री महेन्द्रश्रीजी	—३७
२१. नवांगी वृतिकार श्री अभयदेवसूरिजी	—	श्री कानूराम बाफना	—४१
२२. राजस्थान का भारत विख्यात जैन तीर्थ	—	माउन्ट आबू चित्रावली	
२३. ज्ञानोपार्जन में शिक्षण शिविर	—	श्री वंशीधर तातेड़	—४५
२४. हम है कौन ?	—	पूज्यवर श्री मणिप्रभा श्री जी म० सा०	—४७
२५. बाड़मेर जैन धार्मिक शिक्षण शिविर	—	चित्रावली	—४९
२६. बाड़मेर जैन धार्मिक शिक्षण शिविर समिति	—	सूची	—६१
२७. बाड़मेर जैन धार्मिक शिक्षण शिविर दानदाता	—	सूची	—६२
२८. जैन धार्मिक शिक्षण शिविर का सिंहावलोकन	—	भूरचन्द जैन	—६५
२९. जैन धार्मिक शिक्षण शिविर	—	प्रतियोगिता परिणाम सूची	—६९
३०. जैन धार्मिक शिक्षण शिविर	—	भाग लेने वाले विद्यार्थियों की सूची	—७१
३१. श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ	—	परिचय	—७५
३२. जैसलमेर जैन तीर्थ	—	चित्रावली	—७६
३३. कर्म	—	श्री मांगीलाल संखलेचा	—७९

३४. रात्रि भोजन — ,, बाबूलाल पढ़ाईया —८३
३५. राजा शिवि का धर्म प्रेम — ,, जगदीश छाजेड़ —८५
३६. सा विद्या या विमुक्तिये — पूज्यवर श्री विचक्षण श्री जी मा० सा० —८७
३७. भगवान महावीर और जैन धर्म — श्री बाबूलाल जैन —८९
३८. समाजवादी भगवान महावीर — ,, ओमप्रकाश बाँठिया —९१
३९. महावीर स्वामी की विश्व को देन — ,, मांगीलाल वडेरा —९३
४०. भगवान महावीर का जीवन चरित्र — ,, पुखराज छाजेड़ —९५
४१. बाड़मेर का श्री पार्श्वनाथ जिनालय — ,, वंशीधर बोहरा —९९
४२. बाड़मेर का प्राचीन श्री आदेश्वर जैन मन्दिर — ,, लूणकरण संखलेचा —१०१
४३. जैन धर्म का राष्ट्रीय स्वरूप — ,, मोहनलाल धारीवाल —१०३
४४. श्री बालवीर मंडल — परिचय —१०५
४५. महावीर तेरे वन्दे हम (कविता) — श्री मोहनलाल मेहता —१०६
४६. श्री वर्द्धमान जैन मंडल — परिचय —१०७
४७. श्री विचक्षण महिला मंडल — परिचय —१११
४८. श्री आदेश्वर जैन मंडल — परिचय —११३
४९. श्री पार्श्व जैन मंडल — परिचय —११५
५०. श्री वर्द्धमान जैन उद्योगशाला एक उपलब्धि — श्री देवीचन्द गुलेच्छा —११६
५१. भगवान महावीर की २५००वीं निर्वाण महोत्सव समिति बाड़मेर परिचय — श्री उदयराज जैन —१२३
५२. बाड़मेर से लोद्रवा तीर्थ-पैदल संघ यात्रा — श्री हुक्मीचन्द मालू —१२६
५३. श्री वर्द्धमान जैन उद्योगशाला — उद्घाटन चित्रावली —१३३
५४. श्री विचक्षण महिला मंडल — सांस्कृतिक कार्यक्रम चित्रावली —१३५

भगवान महावीर का २५०० वां निर्वाण महोत्सव मनाने में प्रत्येक देशवासी तन, मन और धन से हार्दिक सहयोग दें—

भूरचन्द जैन
सम्पादक

अहिंसा और अनेकान्त

विश्व प्रेम प्रचारिका व्याख्यान भारती जैन कोकिला
समन्वय साधिका बाल ब्रह्मचारिणी आर्यारत्न
पूज्य श्री विचक्षण श्री जी महाराज साहब

भगवान महावीर का जन्म आज से ढ़ाई हजार वर्ष पूर्व एक ऐसे समय में हुआ था, जब स्थूल-क्रियाकांड, तथा यज्ञ में पशुबलि देने का बोलबाला था। दास प्रथा द्वारा मानव का शोषण किया जा रहा था। स्त्रियों को पाँव की जूती समझा जाता था और छुआछूत का भेद अपनी चरम सीमा पर था।

भगवान महावीर ने ३० वर्ष की आयु में भोग-विलास को तिलांजलि देकर राज्य-वैभव को ठुकरा कर सभी सांसारिक सुखों को त्याग कर युवावस्था में दीक्षा ग्रहण की। बारह वर्षो तक भयंकर कष्टों को सहन किया, कठोर तपस्या की। इस साधना के काल में आप पर विपत्तियों के पहाड़ टूटे, पर आप शान्त और मौन रहे। देवराज इन्द्र ने वीर प्रभू की सेवा में आकर उपसर्गो से रक्षा करने की आज्ञा मांगी, पर प्रभू ने एक ही उत्तर दिया कि साधना की सफलता के लिये साधक को अपने आन्तरिक बल पर ही निर्भर रहना चाहिये। किसी अन्य पर निर्भर रह कर साधना नहीं की जा सकती है।

भगवान महावीर बड़े उदार हृदय थे, उनकी करूणा दृष्टि मानवों तक ही सीमित नहीं थी, वे प्राणी मात्र के कल्याण की भावना रखते थे। उसके विरोधी उनके अपार प्रेम, शान्ति और क्षमा-शीलता को देख कर नत मस्तक हो जाते थे। चंडकौशिक सर्प ने जब क्रोधित होकर बार-बार उन्हें डसा तो भी भगवान ने उस पर दया करके अमृतमय शीतल वचनों से उसका उद्धार किया संगमदेव ने छः महीनों तक अनेक प्रकार के प्रलोभन देकर यातनायें देकर प्रभू को विचलित करने का प्रयास किया, परन्तु अन्त में उसको भी हार माननी पड़ी। भगवान महावीर ने उसे कहा कि हे संगम ! तुमने मुझे कितने ही कष्ट दिये, प्रलोभनों द्वारा साधना से विचलित करने के अनेक प्रयास किये, परन्तु इससे मेरा कुछ भी नहीं बिगड़ा

मेरे हृदय में तो इस बात का दर्द हो रहा हैं कि अज्ञान वश तुमने जो दुष्कर्म किये है, उनका कितना दुःख तुम्हें भोगना पड़ेगा ? तुम्हारे भविष्य का ध्यान करके मुझे आंसू आ रहे हैं। जिस संगम देव ने प्रभू को इतना कष्ट दिया, उसके लिये प्रभू का दिल तड़फ रहा है। पराकाष्ठ थी यह करुणा की, दया की, क्षमा की और सहानुभूति की।

आज तो हम दो पुस्तकें पढ़कर उपदेश देने लगते है, पर भगवान ने साढे बारह वर्ष तक अपने साधनाकाल में मौन रखा और केवल ज्ञान प्राप्त होने के बाद ही उन्होंने संसार को प्रकाश देने के लिये उपदेश देना आरंभ किया। भगवान महावीर का नाम लेते ही जैन संस्कृत और जैन दर्शन के दो अनमोल रत्न अहिंसा और अनेकान्तवाद, हमारी आंखों के सामने आ जाते हैं !

संसार के सभी धर्मो ने अहिंसा के महत्व को माना है। परन्तु भगवान महावीर ने केवल मानव ही नहीं बल्कि चर-अचर सभी प्राणियों के लिये अहिंसा का अति सूक्षम और गहन विवेचन किया हैं। भगवान महा-वीर ने अहिंसा को भगवती कहा है। जब भगवती अहिंसा मानव के मन में प्रतिष्ठित हो जाती है तो धर्म की ज्योति जलने लगती है, प्रेम का स्रोत बहने लगता हैं और मानव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से प्रेरित होकर विश्व के समस्त प्राणियों के साथ मैत्री भाव स्थापित कर लेता है।

कहा भी है :—

अहिंसा परमो धर्मस्तथाऽहिंसा परो दमः।
अहिंसा परमं दानमहिंसा परमं तपः॥
अहिंसा परमो यज्ञस्तथाऽहिंसा परमं फलं।
अहिंसा परमं मित्रमहिंसा परमं सुखम्॥
अहिंसा परमं ध्यानमहिंसा परमं तपः।
अहिंसा परमं ज्ञानमहिंसा परमं पदम्॥

अहिंसा परम धर्म है, अहिंसा परम दान है और अहिंसा परम तप है। अहिंसा परम यज्ञ है, अहिंसा परम फल है, अहिंसा परम मित्र है और अहिंसा परम सुख है। अहिंसा परम ध्यान है, अहिंसा परम ज्ञान हैं और अहिंसा ही परम पद हैं।

हिंसा दो प्रकार की होती है— द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा। प्राणनाशादि स्थूल हिंसा द्रव्य हिंसा है। भाव हिंसा मानसिक हिंसा है। हिंसा का संकल्प करना ही भाव हिंसा है। भाव हिंसा से दूसरों की हिंसा हो या न हो, अपना स्वयं का तो हनन हो ही जाता हैं। जैसे दियासलाई रगड़ खाकर स्वयं जल जाती है, फिर भले ही वह दूसरे को जलावे या नहीं। जब हमारे मन में किसी के प्रति राग होता है, द्वेष होता हैं, चोरी करने या व्यभिचार करने की असद् भावना उत्पन्न होती है तो उसे हम भाव हिंसा कहते हैं। तत्वार्थ सूत्र में कहा है कि

"प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा।"

प्रमत्त योग द्वारा किसी के प्राणों का अपहरण करना हिंसा है। प्रमाद पन्द्रह प्रकार का होता है चार विकथा (स्त्री कथा, भोजन कथा, राष्ट्र कथा, राज कथा) चार कषाय (क्रोध, मान, माया और लोभ) पाँच इन्द्रियां (स्पर्श, रस, घ्राण, चक्षु तथा श्रोत) एक निद्रा और एक प्रणय (स्नेह)। इन पन्द्रह प्रकारों के प्रमाद के वश होकर मन, वचन, काया से प्राणों का वियोग करने को हिंसा कहते हैं।

किसी को कष्ट नहीं देना यह अहिंसा का एक पहलू है। अपने पास शक्ति, संपत्ति और साधन होते हुए भी अगर हम दूसरों का कष्ट दूर नहीं करे तो यह भी हिंसा हैं। इसलिये दूसरों की सेवा करना, गरीबों का दुःख दूर करना, तड़फते हुओं के आंसू पोंछना यह अहिंसा का दूसरा पहलू है। कहा भी हैं कि "धन और प्राणों से परोपकार करना चाहिये, क्योंकि परोपकार के पुण्य के बराबर सौ यज्ञों का भी पुण्य नहीं है। परोपकार शून्य मनुष्यों का जीना भी धिक्कार है।"

मनुष्य समाज के अन्दर रहता है, वह समाज से बाहर नहीं रह सकता है। इसलिये जब समाज में पाप फैला हुआ है, गरीबों का शोषण हो रहा है, तब उनकी ओर उदासीन रहना भी हिंसा हैं और हम भी उसके भागीदार हैं। इसलिये समाज की सेवा करना, मानव की

सेवा करना, अहिंसा देवी के चरणों की पूजा करना है। कहा भी है कि "मानव की सेवा करना, ईश्वर की सेवा करना है।" परन्तु आज तो हम चींटी की रक्षा करते हैं, मानव की नहीं !

अहिंसा को जीवन में अपनाओ। जीवन को पवित्र करने के लिये अहिंसा गंगा के समान हैं, इसमें स्नान करने से मनुष्य मानवता की पूर्णता, को प्राप्त करता हैं। पातांजल योग शास्त्र में कहा हैं —

अहिंसा प्रतिष्ठायां तत् सन्निधौ वैर-त्याग;

जिसने अहिंसा को अपना लिया है, उसके पास वैर कभी नहीं टिकता है।

जब तक हमारे विचार शुद्ध नहीं होंगे, मन में ममता का भाव नहीं होगा, तब तक हमारे लिये अहिंसा का आचरण करना मुश्किल होगा। विचारों की अहिंसा का नाम अनेकान्तवाद है। अनेकान्तवाद वह शस्त्र हैं जिसके द्वारा हम आपसी कलह, साम्प्रदायिक द्वेष और क्लेश को मिटा कर प्रेम और सद्भाना की नदी बहा सकते हैं। हमारी मान्यता ही ठीक है, हमारे विचार ही ठीक हैं और दुनियां की सभी मान्यतायें असत्य है, सारे अन्य विचार गलत हैं, यह ऐकान्तिक आग्रही दृष्टि ही दुनियां के सारे झगड़ों के मूल में है। भगवान महावीर स्वामी एक ऐसे युग में उत्पन्न हुये थे जब इस प्रकार का एकान्तवाद अपनी चरम सीमा पर था। करूणानाथ भगवान महावीर ने समझाया कि दृष्टिकोण अलग-अलग हो सकते हैं, उन्हें समझने का प्रयत्न करो, दृष्टिकोण की भिन्नता को झगड़े का कारण मत बनाओ। भगवान ने समझाया कि सत्य एक और अखण्ड है। मानव उसके विभिन्न स्वरूपों को विभिन्न रूप से नहीं देखता है। एक दूसरा व्यक्ति उसके दूसरे रूप को देखता है। यह बात एक उदाहरण देकर स्पष्ट रूप से समझाती हूँ "एक गांव में कुछ अन्धे रहते थे। एक दिन वहां एक हाथी आया। अन्धे भी वहां पहुँचे और लगे उसे टटोलने। किसी ने उसकी सूंड पकड़ी, किसी ने पूछ, किसी ने उसके कान पकड़े और किसी ने उसके पांव। वापस लौटकर वे हाथी का वर्णन करने लगे। जिसने पूंछ पकड़ी थी वह बोला हाथी रस्सी के समान है, जिसने सूंड पकड़ी थी वह बोला हाथी मूसल के समान है, जिसने कान पकड़ा था वह बोला हाथी सूपड़ा जैसा है और पांव पकड़ा था वह बोला हाथी खंभे जैसा है। सब एक दूसरे को झूठा कह कर आपस में लड़ने लगे। तब एक समझदार व्यक्ति ने सारी बात सुनकर कहा कि तुम सब सच्चे हो, परन्तु तुम में से हर एक व्यक्ति ने हाथी का एक अंग टटोला है, पूरा हाथी किसी ने नहीं टटोला है। इसलिये लड़ने का कोई कारण नहीं है। संसार में जितने भी एकान्तिक आग्रह करने वाले हैं, वे पदार्थ के एक अंश को ही पूरा पदार्थ समझते हैं। अनेकान्तवाद आपसी संघर्ष को मिटाने का एक सशक्त अनूठा, अहिंसात्मक तरीका है। आचार्य हेमचन्द्र ने कहा कि स्याद्वाद का सिक्का सारे जगत में चलता है. इसकी मर्यादा के बाहर कोई वस्तु नहीं रह सकती।"

हम अपने आपको जैन कहते हैं, भगवान महावीर के पुत्र कहते हैं, उनके अनेकान्तवाद में विश्वास करते हैं, फिर भी अपने में गच्छ-गच्छ के झगड़े हैं, सम्प्रदाय-सम्प्रदाय के झगड़े हैं. श्वेताम्बर-श्वेताम्बर में झगड़े है स्थानकवासी-स्थानकवासी में झगड़े हैं। याद रखिये ! मार्ग भिन्न-भिन्न हो सकते हैं, पर धर्म एक है। परम्पराओं में, क्रिया-काण्डों में, मान्यताओं में परिवर्तन हो सकता है, पर धर्म तो त्रिकाल में नहीं बदलता है। आज हम यह समझ बैठे हैं कि अमुक मान्यता को मानने से ही मुक्ति होगी, पर यह धारणा गलत है कहा भी हैं —

नाशाम्बरत्वे न सिताम्बरत्वे न तर्कवादे न च तत्ववादे
न पक्षसेवाश्रयणेन मुक्तिः कषायमुक्तिः किल मुक्तिरेव

न दिगंबर बन जाने से मोक्ष मिलता है और न श्वेतांबर बन जाने से मोक्ष मिलता है न दुनिया भर के तर्क या तत्ववादों से मुक्ति मिलती है। जब क्रोध, मांन, माया, लोभ से छुटकारा हो जायगा तभी मुक्ति मिलेगी।

इसलिये भाइयों ! हृदय की संकीर्णता हटाओ, दिल की दिवालें तोड़ दो और मानव-मानव गले लग जाओ।

उत्तराध्ययन सूत्र में कहा है 'अप्पा कत्ता, विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।' आत्मा स्वयं ही सुख और दुख का कर्ता है और स्वयं ही उसका भोक्ता है

(वन्दना

वाहर की कोई भी शक्ति उसे दुख-सुख नहीं पहुंचा सकती सच्चा सुख आत्मा में है। हमारे अन्दर ही सुख का भण्डार हैं, एक ऐसा सुख का प्रवाह है, जो कभी नहीं सूखता। भगवान महावीर ने वाहरी सुखों को शहद लगी हुई तलवार के समान वतलाया है। शहद चाटने जावोगे तो जवान कटेगी ही। पहले सुख और वाद में दुख प्राप्त होता है। वाहरी सुख क्षणिक है, हमारी इच्छायें अनन्त हैं और वे कभी पूरी नहीं हो सकती हैं। तृष्णा दुख का मूल कारण है। नीतिकार ने कहा है 'चेहरे पर झुरियें पड़ गई, सिर के वाल सफेद हो गये, पर तृष्णा जवान होती जाती है।' इसलिये इच्छाओं को सीमित करना चाहिये। सच्चा सुख त्याग में हैं, भोग में नहीं।

जब बरसात के दिनों में नदी पूर आती है तो वह किनारे का सारा कूड़ा-करकट वहाकर ले जाती है। हमारे अन्दर, भी स्नेह की धारा सूख गई हैं, जिससे हम में निन्दा का, आलोचना का द्वेष, का, घृणा का, एक दूसरे को पराया समझने का कचरा इकट्टा हो गया है। आप प्रेम की ऐसी गंगा वहाओ कि यह सब कचरा धुल जावे और भगवान के वचन 'मित्ती में सव्व भुएसु वैरं मज्झं न केणई' विश्व में मेरी सवसे मैत्री है, किसी से वैर नहीं है सार्थक कर सको।

वन्दना)

शिविर शिक्षण से जीवन सर्जन

卐卐
卐卐

~ साध्वी श्री मनोहर श्री जी ~
साहित्य रत्न

आज के युग में ज्ञान का विकास दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है, प्रत्येक व्यक्ति ज्ञान की उच्च शिक्षा को लेने में लगा है, यहां तक कि सामान्य जाति का व्यक्ति भी बी० ए० में पढ़ा हुआ मिलेगा।

स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली विद्या केवल हमारे जीवन निर्वाह का साधन रह गई है। यह लक्ष्य रह गया है कि स्कूलों की पढ़ाई से हम भौतिक विकास कर सकें एवं उससे जीवन निर्वाह भी चलता रहे।

शिक्षण का अर्थ साधारणतः साहित्यिक ज्ञान समझा जाता है, लोगों का यही केवल विचार रहा है कि शिक्षण काल में शिक्षार्थी को आज के युग के समान केवल जीवन का निर्वाह होता रहे; उतना ही ज्ञान यथार्त है, किन्तु भौतिक विकास एवं जीवन निर्वाह के लिए पढ़ी जाने वाली शिक्षा व विद्या विना नींव का महल है। विना नींव का महल कुछ दिनों में या कुछ ही वर्षों में धराशायी हो जाता है। ठीक ऐसे ही, आत्मिक विकास के विना, शिक्षा विना नींव का महल है। वह कब और कैसे गिर जायगा कह नहीं सकते।

ज्ञान का अर्थ है कि किसी वस्तु के अन्तर बाह्य को जान लेना और जानकर इसका यथोचित्त उपयोग करना। यथोचित्त उपयोग नहीं कर सकता है तो, समझना होगा कि उसका ज्ञान अधूरा है। वह विकृत ज्ञान है। इस

प्रकार का ज्ञान केवल पुस्तकी ज्ञान है। वह ज्ञान वस्तुत: ज्ञान नही है, क्योंकि व्यक्ति के हृदय में जो ज्ञान घुस न पाया हो, जीवन के अंत स्थल तक पहुँच न सका हो, तो वह ज्ञान नहीं पेशा है। वल्कि जीवनोपार्जन का एक मात्र सावन है। जहां ज्ञान में ज्ञानेन्द्रियां तथा कर्मेन्द्रियां उसके ज्ञान के विरुद्ध काम करती है, वह ज्ञान वस्तुत: अज्ञान या अविद्या है।

शिक्षा का तात्पर्य यह है कि जो आध्यात्मिक विद्या पढता है, या पढाता है, वही उच्चता को प्राप्त कर सकता है। आत्मज्ञान तथा जगत के रहस्यों के ज्ञानार्जन में पूर्ण रीति से जो लग चुका हैं, ऐसे ही व्यक्ति के जीवन में विशुद्ध ज्ञान का आलोक होगा तथा आचरण में जीव मात्र के प्रति उसे निजत्व एवं आत्म ज्ञान का आभास होता जायगा। शिक्षा मनुष्य को मोह और शोक से मुक्त करती है। जो उसे वन्धन रहित और स्वतन्त्र कर देती हो वही शिक्षा वास्तविक शिक्षा है। जो शिक्षा व्यक्ति के जीवन को वन्धित करने वाली हो जिससे उसमें मोह अज्ञान शोक एवं आशक्ति पैदा होती हो, उसे हम सद् शिक्षा रुप कहेंगे ? कभी नहीं ? वर्तमान में देखते है कि कई ऐसे वहुत ही उच्च विध्द्वता को पाये हुए विद्वान होंगे। किन्तु उनका जीवन देखते है, तो विल्कुल ही निम्न तल पर व्यतीत करते दिखाई देता हैं। वे जीविका के लिए अपने मौलिक जीवन को वेच देते हैं व धन की तृष्णा ने उनकी आत्मा को दुर्वल वना दिया है। जिस आत्मा में अनन्त शक्ति भरी पड़ी होती है, उस शक्ति को तुच्छ जीवन के सुखों में खो दिया जाता है। ऐसी शिक्षा व विद्या से क्या कि जीवन गिर जाय। जैसे वाजार की दुकानों में वस्तुओं की विक्री होती है, वैसे ही उनका ज्ञान वेचा जाता हैं। ठीक है, जीवन निर्वाह के विना चले नहीं, इसलिए ऐसा करना पड़ता है। किन्तु उसका तात्पर्य यह नहीं कि केवल वाहरी ज्ञान रहे। वाहरी ज्ञान से क्या होता है ? ऐसे ज्ञान वाले वे स्वयं वन्घन में पड़ते है, और दूसरों को भी वन्वन में डालते है। क्योंकि वाहरी ज्ञान वाले में विवेक की कमी रहती है। जहां अविवेक है, वहां ज्ञान की असीम गरिमा का प्रकाश उनके अन्तर में समुचा वुझा हुआ रहता है।

ज्ञान एक वहुत वड़ी शक्ति है, किन्तु आज का व्यक्ति शक्तिहीन, जीवनहीन व ज्ञान का प्रकाशहीन हो गया है। अहंकारी वना है, अहंकार के कारण अपने आपको वुद्धिमान भले ही समभले, किन्तु अन्त तो गत्वा उसे अज्ञानत के अन्धेरे में इस रूप से भटकना पड़ता है, कि उसे कई प्रकार की दुखानुभूति भी महशूश होने लगती है। जिस मनुष्य में विवेक उत्पन्न नही होता, वह ज्ञान ज्ञानसे वस्तुत: अज्ञान है। सद्ज्ञान सदैव चित्त को शुद्ध और निर्मल करता है। और श्रेय एवं भले वुरे को समझकर भलाइयों को ग्रहण कर अन्यों के लिये वही ग्रहण करने की प्रेरणा देता है।

अल्प व्यक्ति वाह्य भौतिक सुखों के पीछे पड़ा रहता है, उसी में अपना जीवन नष्ट प्राय: कर देता है। किन्तु विवेकवान की विद्या उसे मृत्यु अन्धकार के वन्धनों से ऊपर उठाती है। कर्म जड़ है। ज्ञान चैतन्य एक उज्जवल शक्ति रुप है। जिसका जीवन कर्मज्ञान से शासित है, उसका ही जीवन पूर्ण प्रकाश मय रहता है। वह नितान्त सत्य है, ऐसा वोध कराती है।

महापुरुषों की वाणी है, "सा विद्या या विमुक्तये"। विद्या वही है, जो हमें मुक्त कराती है, स्वतन्त्रता देती है स्वतन्त्रता यानि मन और वुद्धि को स्वतन्त्र वनावे। जिससे जो हमें नीचे गिराने वाला मूढ विश्वास, अज्ञान और भ्रम है। उन दुष्प्रवृत्तियों के वन्धनों से मुक्त कराती है, निर्लिप्त वनाती है, वही सद् शिक्षा वह सविद्या है।

जो ज्ञान मानव को आत्मस्त करता है, श्रेय मार्ग पर लाता है, उच्च आदर्शो और कर्तव्यों के लिए प्रेरित करता है। एवं हमें स्वार्थ से ऊपर उठाकर एक दूर सुदूर अखण्ड आनन्द की ओर एवं दिव्य आलोक की ओर ले जाता है, वहीं सत्य मय ज्ञान है। वही ज्ञान जहां जहां धार्मिक शिक्षण शिविर लगाये जाते है, वहां प्राप्त होता है। वास्तव में धार्मिक शिक्षण शिविर से सुन्दर जीवन का सृजन होता है। आत्मा और परमात्मा क्या है, वह जानने की क्षमता उन विद्यार्थियों में पैदा होती है। वे विद्यार्थी जड़ और चेतन के भेद को समझने लगते हैं। अन्त में उन विद्यार्थियों का जीवन एक दिन ज्ञानमय वनकर एक आदर्श व्यक्ति के रुप में संसार के सामने उभर आता है। धार्मिक ज्ञान सुन्दर आलोक को देने वालों एवं असीम अखण्ड आनन्द को देने वाला है।

जैन धार्मिक शिक्षण शिविर की आवश्यकता क्यों ?

★ श्री अगरचन्द नाहटा

इधर कुछ वर्षों से शिक्षा का प्रचार तो वहुत वढ़ गया है पर धार्मिक शिक्षण प्राय: उठ सा गया है। इसका एक प्रधान कारण तो यह है कि अधिकांश शिक्षण संस्थाए सरकारी ऐड लेना चाहती है और भारत सरकार ने धर्म निरपेक्ष राज्य की उल्टी गंगा वहादी है। उसका उद्देश्य तो यह था कि किसी धर्म–विशेष का शिक्षण देकर उसे प्रोत्साहित नहीं किया जाय क्योंकि साम्प्रदायिक वातों को लेकर एकता खण्डित होती रहती है। पर इसका अर्थ यह ले लिया गया कि धर्म का शिक्षण दिया ही नहीं जाय। इसी का यह भयंकर परिणाम भारत सरकार और शिक्षण संस्थाओं को भुगतना पड़ रहा है कि विद्यार्थी दिनों दिन उच्छंखल होते जा रहे हैं। उनमें अनैतिक वातों का अधिक प्रचार हो रहा है। तोड़–फोड़ और हड़ताल आदि तो एक आम चीज हो गयी है। अध्यापकों की मारपीट करना भी मामूली सी वात हो गई हैं। अध्यापक तो क्या ? पुलिस और सरकारी–तंत्र भी इनके रोक थाम में असफल हो रहा है। शिक्षा विभाग की ओर से वर्तमान शिक्षा पद्धति में सुधार के लिए कई आयोग गठित किये गये और उन सव की प्राय:यही राय रही कि शिक्षा में नीति और धर्म का स्थान होना ही चाहिये। उस अंकुश के उठ जाने से स्वेच्छाचार और बुरी प्रवृतियां वढ़ने लगी हैं। आप किसी भी संस्कृत या धार्मिक विद्यालय की, आधुनिक हिन्दी-अंग्रेजी पढ़ाये जाने वाले विद्यालयों से तुलना करिये तो दोनों के विनय–व्यवहार अनुशासन एवं संस्कार आदि में वहुत वड़ा अन्तर मिलेगा। यह इस वात का ज्वलंत और प्रवल प्रमाण है कि जहां जहां नीति और धर्म की शिक्षा दी जाती है, वहां की छात्र–छात्रायें विनीत और अनुशासित तथा सुसंस्कार वाली अधिक मिलेंगी। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में नम्रता अधिक मिलेगी। क्योंकि परंपरागत संस्कारों का प्रभाव उन पर अधिक होता है।

नैतिक और धार्मिक शिक्षा की ओर माता-पिताओं का भी अव वैसा लक्ष्य नहीं रहा है जैसा कि कुछ वर्षो पहले था। घर के वातावरण में वहुत अन्तर आ गया है। वच्चों को जो घर में संस्कार मिलते थे, वे भी नहीं मिल रहे हैं। इधर विद्यार्थियों पर पाठ्यक्रम का वोझ इतना वढ़ गया है कि धार्मिक शिक्षण के लिए यह कहकर टाल दिया जाता है कि उन्हे उसके लिए समय ही कहाँ है ? पर जव अन्य ऐसे इतने विषयों का शिक्षण दिया जाता हे, जिनमें से कुछ का तो आगे चलकर कोई उपयोग ही नहीं होता तो केवल नैतिक एवं धार्मिक शिक्षण के लिए समय की कमी वतलाना, उचित नहीं लगता। अन्य विषयों के 'पीरियड' में से पांच सात -मिनट कम करने से ही नैतिक एवं धार्मिक शिक्षण के लिए एक 'पीरियड' सहज ही में निकल जाता है। पर सव से वड़ी वात तो यह है कि जव तक वह अनिवार्य न हो और उसके पास-फेल व नम्वरों का प्रभाव अंतिम परीक्षा फल पर न पड़ेगा, वहां तक छात्र-छात्राएं नैतिक व धार्मिक शिक्षण के लिए मनो योग नहीं देंगें। अत: शिक्षा विभाग ने जो साधारण

रुप में नैतिक शिक्षण की आवश्यकता स्वीकार की है उतने मात्र से काम नहीं चलेगा, विधिवत व अनिवार्य नैतिक शिक्षण होने से ही कुछ प्रगति होगी। अनैतिकता एवं अधार्मिकता के कारण आज देश की स्थिति अत्यन्त ही नाजूक हो रही है। भारत सरकार को चाहिये कि देश की समस्त शिक्षण संस्थाओं में नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य कर दें।

भारत में जैन समाज प्रायः सभी प्रान्तों में फैला हुआ है और उनकी सैकड़ों शिक्षण संस्थाएें चल रही हैं। पर उनमें जैन धर्म का शिक्षण प्रायः नहीं दिया जाता। इसलिए नये शिक्षित जैन, जैन धर्म के ज्ञान और संस्कारों से शून्य ही नजर आते है यहां तक कि संसर्ग दोष से कहीं कहीं तो जैन लड़के मांस, मदिरा तक का सेवन करने लगे हैं। इस स्थिति में जैन समाज को अपनी संस्कृति को टिकाए रखना है तो धार्मिक शिक्षण की व्यवस्था तुरन्त करनी ही होगी। सरकार से यदि धार्मिक अध्यापकों के लिए 'ऐड' न भी मिले तो समाज को उसका खर्च वहन करना चाहिये।

एक प्रश्न बार बार उठता है कि जैनों का ऐसा कोई पाठ्यक्रम नहीं है जो सब सम्प्रदायों के लिए समान रुप से मान्य हो। एक ही विद्यालय में सभी जैन सम्प्रदायों की छात्र-छात्राएें पढती हैं। सरकारी 'ऐड' मिलने वाले विद्यालयों में तो जैनेतर छात्रों को भी अमुक परिमाण में लेना ही पड़ता हैं। तब धार्मिक शिक्षण कौनसा व किन ग्रन्थों का दिया जाय?

इस समस्या का हल कोई इतना कठिन नहीं है। इसके लिए मैंने कई लेख भी लिखे थे कि सब सम्प्रदायों के कुछ व्यक्तियों का एक बोर्ड बन जाय। शिक्षण के अनुभवी व्यक्तियों में से मुख्य मुख्य जैन सम्बन्धी सारी बातों का संक्षेप में परिचय मिल जाय, ऐसा पाठ्यक्रम बनाकर सब सम्प्रदायों के एक एक व्यक्ति जो उस बोर्ड में हो, वे उस पाठ्यक्रम को देख लें ताकि उसमें कोई आपत्तिजनक बात न रहे। प्राथमिक कक्षा से लेकर उच्च कक्षा तक का धार्मिक शिक्षण का पाठ्यक्रम बनाकर समस्त जैन विद्यालयों में उसे चालू कर दिया जाय, तो अधिकाधिक पुस्तकें बिक सकेंगी, और छात्र-छात्राओं को जैन सम्बन्धी आवश्यक ज्ञान मिल जायगा। वैसे सभी सम्प्रदायों के अलग अलग परीक्षा केन्द्र चालू हैं और हजारों छात्र-छात्रायें प्रति वर्ष वे परीक्षाएं देती हैं। यदि वह सर्व मान्य पाठ्यक्रम चालू हो जाय तो बहुत बड़ा काम सरलता से सम्भव हो जायेगा। सब जैन विद्यालय उसे अपना लें तब हों।

जहां तक धार्मिक शिक्षण की नियमित व्यवस्था नहीं हो जाती वहां तक दीर्घकालीन छुट्टियों में, जैन धार्मिक शिक्षण शिविरों को स्थान स्थान पर आयोजित किया ही जाय ताकि डेढ़-दो महिने की छुट्टियों का सदुपयोग हो जाय। अन्यथा परीक्षा देने के बाद इतनी लम्बी छुट्टियों में छात्र-छात्राओं का समय यों ही बर्बाद होता है।

इस बात को लक्ष्य में लेकर इधर कुछ वर्षों में गर्मी की छुट्टियों में प्रायः बहुत से स्थानों में शिक्षण शिविर लगाये जाते है और यह बहुत ही उपयोगी एवं लाभप्रद कार्य है। तेरापंथी आचार्य तुलसी ने गत वर्ष से इस ओर विशेष ध्यान दिया है। और कई स्थानों पर धार्मिक शिक्षा और साधना केन्द्र चलाये गये और उसका परिणाम भी बहुत अच्छा रहा। अतः उन्होंने अपने व्याख्यानों में भी यह कहा है कि छात्र-छात्राओं के माता-पिता हम से प्रायः यह शिकायत करते रहते हैं कि महाराज ये नव शिक्षित तो धर्म और संस्कारों से बहुत दूर होते चले जा रहे हैं। अतः हमारे घरों में जैनत्व कहां तक टिक सकेगा? वह सुबह न तो कोई सामायिक प्रतिक्रमण करते है,न संत सतियों के दर्शनार्थ या व्याख्यान में जाते हैं, अतः धार्मिक संस्कार कैसे पड़ेगे? और जो कुछ हैं वे भी कब तक टिके रहेंगे? आचार्य तुलसी ने कहा कि शिक्षण और साधना केन्द्रों के द्वारा हमने नव शिक्षितों को आकर्षित किया है। अतः अब उनके माता पिता को बालकों के भविष्य के सम्बन्ध में अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिये। हमारे प्रयत्नों से अच्छा वातावरण बन रहा है। और यह प्रवृत्ति और भी अधिक बढती जायगी।

मूर्ति पूजक सम्प्रदाय में मुनि श्री भानु विजय जी कई वर्षों से गर्मियों की छुट्टियों में धार्मिक शिक्षण शिविर चला रहे हैं। कई स्थानों पर इसकी व्यवस्था की गई और उनकी राय में भी इसका परिणाम बहुत अच्छा

आया व आ रहा है। वे शिक्षण एक व्यवस्थित क्रम से देते हैं जिससे थोड़े समय में काफी विषयों की जानकारी विद्यार्थियों को मिल जाती है। इन शिविरों में प्रातः काल से लेकर रात तक का एक प्रोग्राम बन जाता है। जिससे सामायिक, प्रतिक्रमण, देव दर्शन, पूजा, गुरुवंदन,जप तप, आदि धार्मिक अनुष्ठान भी शिक्षण के साथ साथ विद्यार्थी करते रहते हैं। इससे अच्छे संस्कारों की नींव पड़ती है। वास्तव में आज के बालक ही कल के कर्णधार बनने वाले हैं। और बाल्य काल के अच्छे संस्कारों का प्रभाव जीवन व्यापी पड़ता है। अतः सुसंस्कार जो शिविर के करीब एक माह के समय में पड़ते हैं, उनसे विद्यार्थियों के जीवन में काफी परिवर्त्तन हो जाता है। त्यागी साधु-महात्माओं का वैसे भी गहरा प्रभाव पड़ता है। फिर यदि वे अच्छे ज्ञानी हों और धार्मिक विषयों को सरलता से समझा सकते हो तो अवश्य ही उनके शिक्षण और वहां के वातावरण से काफी लाभ होता है। श्रावक समाज को भी उन्हें इसमें अच्छा सहयोग मिल रहा है।

दिगम्बर समाज में सोनगढ के कानजी स्वामी के आश्रम द्वारा इधर आध्यात्मिक शिक्षण शिविर जयपुर आदि अनेक स्थानों में लगाये गये। और उसका भी बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है। उनके पाठ्यक्रम को देखने से ऐसा लगता है कि ऊंची आध्यात्मिक और जैनतत्व सम्बन्धी बातों को समझने में इतने अधिक संख्या में लोग रुचि ले रहे हैं, यह कोई मामूली बात नहीं है। आज के युग में आध्यात्म का प्रचार कानजी स्वामी और उनके अनुयायियों के द्वारा जिस तरह से बढ़ रहा है वह अवश्य ही उज्जवल भविष्य का प्रतीक है।

स्थानकवासी समाज की कई संस्थाओं द्वारा भी धार्मिक शिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाने लगा है। कुछ समय मुझे गुलाबपुरा के स्वाध्यायी संघ द्वारा नानक जैन छात्रालय में आयोजित शिविर में भाषण देने का निमंत्रण मिला था। और भी कई स्थानों में ऐसे शिविर लगाये जा रहे हैं। गुलाबपुरा तो कोई बड़ा शहर नहीं है। अतः आवश्यकता है स्थानीय व्यक्तियों के लग्न और प्रयत्न की। सफलता उसी पर निर्भर होती है।

मध्य-प्रदेश में श्री कालूरामजी बाफणा आदि के प्रयत्न से गत तीन वर्षों में रायपुर आदि में धार्मिक शिक्षण शिविर लगाये गये। तीनों बार मुझे बुलाया था पर मैं जा नहीं सका। पर उनके जो समाचार छपे उनसे वहां का आयोजन काफी सफल रहा ऐसा प्रतीत होता है।

दो पौने दो वर्ष पहले रायपुर में शासन प्रभाविका प्रवृर्तिनी विचक्षणश्रीजी का चौमासा था तो वहां छात्राओं और महिलाओं का धार्मिक शिक्षण केन्द्र चलाया गया था जिसका उद्देश्य यह भी था कि जैन कन्या पाठशालाओं में योग्य जैन अध्यापिकाएं नहीं मिलती। तो ऐसे शिविरों द्वारा योग्य धर्माध्यापिकाएं भी तैयार की जाय। अभी वे दिल्ली में भी इसके लिए प्रयत्नशील है।

तपागच्छीय विद्वान् साध्वी निर्मला श्री जी ने गत कुछ वर्षों में अहमदाबाद में उच्च शिक्षा प्राप्त छात्राओं और महिलाओं का संस्कार सत्र चलाया था। और उसमें काफी छात्राओं और महिलाओं ने भाग लिया और परिणाम सुन्दर रहा। जिस वर्ष निर्मला श्री जी का चौमासा जयपुर में था। वहां संस्कार सत्र का पूर्ववत आयोजन किया गया जो काफी प्रभावशाली रहा।

इस तरह जगह जगह पर साधु साध्वियों और श्रावकों द्वारा धार्मिक शिक्षण शिविर की व्यवस्था की जा रही हैं। यह बहुत ही अच्छी बात है। जिन स्थानों में ऐसा कोई प्रयत्न नहीं हो रहा है। वहां के जैनों को भी अन्य स्थानों में आयोजित शिविरों से प्रेरणा लेकर शीघ्र ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये। जिससे छात्र छात्राओं की इन दीर्घकालीन छुट्टियों का एक जरुरी और उपयोगी कार्य में सदुपयोग हो। उनकी ज्ञान वृद्धि और संस्कार समृद्धि का प्रयत्न करना प्रत्येक माता-पिता व हितैषी व्यक्तियों का कर्त्तव्य होना चाहिये।

यहां एक आवश्यक निवेदन भी कर देना जरुरी समझता हूँ कि जगह जगह जो ऐसे आयोजन होते हैं वे अपने अपने ढंग से संचालित किए जाते हैं। कहां २ क्या कार्यक्रम और कैसा शिक्षण होता है? इसकी जानकारी ठीक से प्रकाश में आवे या प्राप्त की जाए; फिर जहां जहां की जो अच्छी बातें हों, उनको अपनाते हुए संगठित रूप से योजनाबद्ध एक रूपता का प्रयत्न किया जाय तो अधिक लाभ मिल सकेगा। ✶

बालक बालिकाओं के उज्जवल भविष्य के लिये

एवं

देश में नैतिक उत्थान हेतु धार्मिक शिक्षण की व्यवस्था हो

— इन्ही शुभ कामनाओं सहित —

जैन प्रतिक्रमण के आधार पर:—

क्रान्ति क्या और कैसे ?

श्री फूलचन्द बाफणा

करोड़ों की योजनायें वनी परन्तु मानव निर्माण की कोई योजना हमारी व्यवस्था ने नहीं वनाई। करोड़ों की रकम में शून्य वहुत होते हैं परन्तु उन शून्यों का मूल्य तभी है जवकि शून्यों के प्रारंभ में एक का अंक हो। विना एक के अ'क के समस्त शून्य व्यर्थ हैं। उसी प्रकार विना मानव निर्माण के अगणित धन राशि के खर्च की योजनायें निरर्थक हैं। मानवता रहित मानव हाड़ मांस का एक पुतला मात्र है। मानवता के लिए निम्न छ: वातें आवश्यक हैं:—

(१) समभाव : 'सुख आने पर मौत को भूल जाना और दु:ख आने पर मौत चाहना' असंतुलित मस्तिष्क की की पहचान है। जिसका मस्तिष्क ही अव्यवस्थित है उसका सव कुछ अव्यवस्थित है। हमारी वास्तविक पूंजी मन की मस्ती है। समभाव की पहचान क्षमा भाव और अस्वाद वृत्ति से होती है। इसीलिये कहा है 'क्षमा वीरस्य भूषणम्', और कहा है 'स्वाद से मुक्ति ली तो गुलामी से मुक्ति ली'। स्वार्थों का विरोध नहीं हो परन्तु मानवता की भावना का सामूहिक स्तर पर विकास हो। कमजोर से कमजोर को निभाना ही सभ्यता है। आत्म संयम सीखना होगा। केवल शरीर ही सव कुछ नहीं है। सोचिये ! क्या शरीर 'मैं' हूँ ? शरीर मेरा है कि 'मैं' शरीर का ? तो 'मैं' शरीर से पृथक है। इसकी पहचान ही वास्तविक समभाव है। दुनियां के सभी वाद (ISMS) समता, समानता, भ्रातृत्व चाहते हैं। तलवार के जोर से जो समता लाते हैं वे ही विषमता पैदा करते हैं। जितनी प्रतिशत हममें अहिंसा है उतने प्रतिशत हम सभ्य हैं और जितने प्रतिशत हम हिंसक हैं उतने ही परिमाण में हम असभ्य हैं। हिंसा, असभ्यता और असमानता को पर्यायवाची और अहिंसा, सभ्यता और समानता को पर्यायवाची समझना चाहिये।

(२) ईश प्रार्थना : वाजार की सभी दूकानें जल गईं परन्तु केवल मेरी एक वच गई। प्रभु को धन्यवाद दिया, जव कि सव रो रहे थे। चोरी, धोखे या मिलावट आदि से धन आदि परिग्रह वढ़ने पर ईश्वर को धन्यवाद दिया। तो यह आसक्ति है कि अनासक्ति ? ऐसी प्रार्थना शत प्रतिशत आसक्ति है। 'नर से नारायण अर्थात वीतराग वनना ही' अनासक्ति का फल है। यही ईश प्रार्थना है। ईश प्रार्थना और अनासक्ति एक ही वात है। तपस्या भी अनासक्ति ही है।

(३) गुरू आदर अर्थात् गुण पूजा : 'वेश' गुरू है कि 'गुण' गुरू है ? मातृ देवो भव:, पितृ देवो भव:, आचार्य देवो भव:, अतिथि देवो भव: एवम् वड़ों का आदर 'गुण गुरू' के आदर में ही समाविष्ट है। 'सा विद्या या विमुक्तये,' अर्थात् विद्या वही है जो मानव को अवगुण से मुक्त करे। भावार्थ यह है कि जो हमें अवगुणों से मुक्त करे, वही गुरु है, आदरणीय है, पूज्य है, चाहे उसकी पोशाक कैसी ही हो अथवा उसके कोई पोशाक नहीं भी हो।

(४) प्रायश्चित : प्रतिक्रमण करना अर्थात् पीछे फिर कर देखना। कपड़े पर दाग हो तो वाजार में, समारोह में जाने का मन नहीं होता परन्तु आत्मा के दाग हो तो ? रसोईदार रसोई करके मैले कपड़े वाद में धोता है। व्यापारी संध्या को लाभ हानि का हिसाव मिलाता है।

नाव में एक छिद्र हो तो उसे वन्द करते हैं और सावधानी रखते हैं। इसी प्रकार हमारी भूलों का, दोषों का प्राय-श्चित आवश्यक है। सबके सन्मुख प्रायश्चित या प्रतिक्रमण करने में शर्म की क्या बात है ? वन्द गटर में अधिक दुर्गन्ध आती है। खुले गटर में कम दुर्गन्ध आती है। पैसा और सत्ता हाथ में हैं तब तक ठीक है परन्तु हृदय में घुस जाय तो ? पैसे और सत्ता से पाप छिपाया जा सकता है परन्तु धोया नहीं जा सकता। 'संसार असार है, साथ कुछ भी नहीं जाने वाला है' आदि कथन व जीवन व्यवहार में अन्तर कितना है ? संत और अश्लील सिनेमा, दोनों में से युवक-विद्यार्थी और नागरिक की भीड़ कहां होती है ? अश्लील फिल्मी गीत प्रिय हैं तो मन में वासना अवश्य है। वड़ों, आगेवानों, नेताओं का जीवन शुद्ध हो तभी युवक, विद्यार्थी व नागरिक शुद्ध होंगे। साथ ही शिक्षा में परिवर्तन तो हो ही। प्रायश्चित हेतु स्वाध्याय अत्यावश्यक है, फिर भी यह स्मरण रखना होगा कि दर्पण दाग वता सकता है परन्तु सफाई स्वयं को ही करनी होगी। सोचिये ! कुल वड़ा है कि शील ? रूप सुन्दर है कि गुण ? भाषण का महत्व है कि आचरण का ? अध्ययन है और प्रतिभा नहीं तो ? क्रिया कांड या टीप टाप धर्म है कि धर्म अहिंसा है ? साधना की जाती है या साधना होती है ? दृढ निश्चय से साधना अपने आप होती है। पहले हम क्षमा करें व अपना दिल साफ करलें तभी ही क्षमा मांगने का अधिकार प्राप्त होता है। कहा है-'खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।' मैं सब जीवों को क्षमा करता हूं, सब जीव मुझे क्षमा करें।

(५) कार्योत्सर्ग (काउसग्ग) : बुरे कार्यों व अवगुणों का त्याग ही कार्योत्सर्ग है। देहासक्ति का त्याग ही सच्चा त्याग है। देश के लिए त्याग अर्थात् देश के निवासियों के लिये असंख्य नर वीरों ने देहोत्सर्ग किया। एक सिपाही युद्ध भूमि में जाता है देहासक्ति छोड़ कर। तभी ही शत्रु की पराजय होकर उसकी जीत होती है। जो मरता है वह 'मैं' नहीं है और जो 'मैं' है वह मरता नहीं है। जो शरीर जलता है वह मेरा नहीं है और जो मेरा है वह जल सकता नहीं है। एक मालिक ने मजदूरों को समान मजदूरी ठहराई और उनसे कह दिया कि धन की पेटियां एक मजदूर जितनी उठा सके उतनी ही उठावे। गंतव्य स्थान पर पहुंच कर मालिक ने कहा 'मजदूरी क्या दूं ? जो जितनी जितनी पेटियां लाया है उतनी उतनी पेटियां उस लाने वाले को इनाम' मालिक की उस घोषणा से काम चोर पछताये और ईमानदारी से शक्ति अनुसार पेटियां उठा लाये उनको वहुत लाभ हुआ। कम पेटियां लाने वाला मजदूर आसक्ति का शिकार था परन्तु अधिक पेटियां लाने वाला मजदूर अनासक्त था। काम-चोरी व वेईमानी आसक्ति है। मैंने अपना वंगला वेच दिया और वाद में वह जल गया। सुना मैंने, तो कहा कि कोई वात नहीं। यह अनासक्ति नहीं परन्तु आसक्ति है। आपके तीन मोटरें हैं परन्तु आप उपयोग एक का ही करते हैं तो टेक्स तीन का लगेगा कि एक का ? वम्बई में एक सज्जन ने एक मकान किराये लिया। वह सज्जन उस मकान का उपयोग वर्ष में एक महीने भर ही करते थे और ग्यारह महीनों तक अपना ताला लगा रखते थे। किराया साल का लगेगा कि एक महीने का ? सारांश यही कि मालकियत विसर्जन या इच्छा निरोध ही कार्योत्सर्ग है।

(६) प्रत्याख्यान (पच्चखाण): बुरे कार्यों व अवगुणों का त्याग किया परन्तु ऐसे त्याग के पश्चात् इस वात का ध्यान रखना कि फिर से वे बुरे कार्य न होने पावें अथवा वे अवगुण फिर से हमारे पास न फटकने पावें, इसी को प्रत्याख्यान कहते हैं। इच्छा खुली नहीं रखना अर्थात् संसार में रहते हैं परन्तु संसार को हृदय में नहीं भरते हैं। घर का द्वार खुला हो तो कुत्ते आते हैं। इच्छा खुली हो तो कर्म प्रवेश करते हैं। मैले कपड़े धोते हैं परन्तु फिर ध्यान रखते हैं कि स्वच्छ कपड़ा मैला नहीं होने पावे। इसी प्रकार हमारे अन्दर बैठे 'मैं' को स्वच्छता का समझना है। उत्तराध्ययन सूत्र में लिखा है— 'जो अज्ञानी मनुष्य महीने महीने तक भोजन का त्याग करे और वाद में अनशन भंग के समय दोब के नोक पर जितना आ सके केवल उतने से ही अनशन तोड़े, वैसा घोर तप करने वाला भी उस संत पुरुष के वताये हुए सद् धर्म का आचरण करने वाले मनुष्य की सोलहवीं कला को भी नहीं पहुंच सकता।' जीवन शुद्धि ही सद्धर्म है, यह समझते हुए अशुद्धि से सदा सावधान रहना।

उपर्युक्त छः बातें जैन प्रतिक्रमण के छः अंग हैं जिन्हें जैन प्रतिक्रमण की परिभाषा में 'छः आवश्यक' कहते हैं। ये 'छः आवश्यक' सभी के लिये, मानव मात्र के लिए समान रूप से आवश्यक हैं। 'आवश्यक' का अर्थ है 'जरूरी'।

जिन्दा रहना है तो जिन्दा रहने की कला अर्थात् मानवता सीखनी होगी। मानव निर्माण के आन्दोलन की आज कितनी आवश्यकता है। जीवन के मूल्य व मान्यतायें हमें मानवता के अनुकूल बदलनी होंगी। आज तक का समस्त इतिहास त्याग और भोग के संघर्ष का ही तो विवरण है। विज्ञान और आत्म-ज्ञान का सम्न्वय अनिवार्य है। अब जमाना इस बात को समझा देगा कि मानवता या सर्वनाश, कौनसा मार्ग चुनना है? एक नाथजी महाराज थे। उनकी वेश भूषा देख कर एक विदेशी ने उनसे दुभाषिये की सहायता से पूछा, 'आप कौन हैं?' उन्होंने उत्तर दिया 'नाथ'। विदेशी सज्जन ने पूछा, 'नाथ' अर्थात् मालिक, तो आपकी प्रजा कहां है?' नाथजी ने उत्तर दिया, 'हमारा पराया कौन है।' विदेशी महाशय ने पूछा, 'मालिक की सेना कहां है?' नाथजी ने फरमाया 'हमको भय कहां है।' अंत में विदेशी जिज्ञासु ने पूछा, 'आप मालिक का खजाना कहां है?' नाथजी महाराज ने कहा, 'हमको खर्च कहां है।' तीन प्रश्नों के तीन उत्तरों ने उस विदेशी को नाथजी महाराज का भक्त बना दिया। ये हैं मानवीय मूल्यों के उत्तर। आवश्यकता से अधिक संग्रह मानवता के विरुद्ध है। संपन्न देश भी यदि अपनी आवश्यकतायें कम कर दूसरे देशों की निःस्वार्थ सहायता नहीं करेंगे और एक देश धनवान व दूसरा देश गरीब रहा, तो देशों में युद्ध अवश्य होंगे। विश्व शांति नहीं हो सकेगी। मनुष्य का स्वभाव क्रोध नहीं क्योंकि क्रोध में सुख नहीं होता है किन्तु क्रोध उतरने पर ही सुख होता है। झगड़ा मिटाने लोग जाते हैं, दोस्ती मिटाने कोई नहीं जाता। जीवन, संघर्ष नहीं है। मनुष्य का प्राकृतिक स्वभाव प्रेम है अर्थात् मानवता है। स्वभाव वह है जिसे हम रखना चाहते हैं। क्रान्ति की प्रक्रिया भी स्वभाव के अनुकूल हो। सफलता के पूजक क्रान्तिकारी नहीं हो सकते। रावण सफलता का पूजारी था परन्तु उसका क्या हुआ? जो सिद्धि पूजक है वह मुक्ति (अवगुणों व दुखों से) नहीं पा सकता। सिद्धि पूजक (युद्ध व चुनाव आदि में) राजनैतिक हो सकता है लेकिन क्रान्तिकारी नहीं हो सकता। 'क्या यह होगा,' यही प्रश्न सदा क्रान्तिकारियों के सामने रहता है। कल जो नहीं हुआ, वह आज होवे यह इतिहास है। हमेशा हो वही होता रहे वह टाइम टेबल है। महान् पुरुष जन्मे, बड़े हुए, खाया, पीया, सोये, मरे। यही सब उनके उत्तराधिकारियों का होता तो इतिहास क्या लिखा जाता? मूल्यों की स्थापना सत्ता व विज्ञान नहीं कर कर सकते। यह तो पुरुषार्थ ही कर सकता है। खोटा रुपया असली के धोखे में चलता है, यही नकली मूल्य है। मानवता ही सही मूल्य है और सही मूल्य से ही अर्थात् उपर्युक्त छः आवश्यक बातों का ध्यान रखने में ही जीवन साफल्य और विश्व-शान्ति निहित है। इस प्रकार मानवीय मूल्यों की स्थापना ही क्रान्ति है। इसके अलावा सब भ्रांति है। कहा है,'जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि' हमारी दृष्टि अर्थात दर्शन स्पष्ट हो-यही युग की मांग है। क्रांति अमर हो।
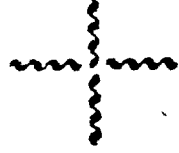
मानव मानव से दुःखी क्यों ?

विचक्षण श्री जी महाराज साहिबा की सुशिष्या
— सुदर्शना श्री —

卐卐
卐卐

आज मानव जीवन में अधिकांश दुःखों का कारण अन्य प्राणी या अदृश्य शक्ति नहीं, अपितु मानव ही है। मनुष्यों को अधिक कष्ट मनुष्य से ही प्राप्त होते हैं। आज के मानव को न दिन में चैन है और न रात में। वह न गाँव में सुखी है और न शहर में। न उसे जंगल में आराम मिलता है और न कैलाश के उच्च शिखरों पर। वह जहां भी जाता है, दुःख की छाया भूत की भांति उससे चिपटी रहती है।

आज अर्थ संकट के साथ रोटी का संकट भी कम नहीं है। मानव को कोई भी वस्तु अपने असली रूप में नहीं मिलती है। अतः मानव तन मन धन से स्वस्थ रहे तो कैसे रहे ? मनुष्य ने ही मनुष्य के लिये संकट पैदा कर रखा है। आज मानव जाति दैवी प्रकोप की अपेक्षा मानव की दुर्भावना एवं दुष्ट प्रवृत्ति की अधिक शिकार हो रही है

भारतीय विचारकों ने प्राणी-हत्या को हिंसा कहा है। जैन शास्त्र भी मारने की क्रिया को हिंसा कहते हैं। परन्तु मारने-मारने में अन्तर होता है। हिंसा दो प्रकार की है "द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा" इन दो भेदों के चार विकल्प हैं। वे इस प्रकार हैं—

१. भाव हिंसा हो, द्रव्य हिंसा न हो। २. द्रव्य हिंसा हो, भाव हिंसा न हो। ३. द्रव्य हिंसा भी हो, भाव हिंसा भी हो। ४. न द्रव्य हिंसा हो न भाव हिंसा।

प्रथम विकल्प :—कई बार मन में शत्रु का विनाश या विरोधी व्यक्ति से प्रतिशोध की भावना उदित होती हैं। इस भावावेश में मानव अपने आप पर कंट्रोल नहीं कर पाता अपनी कमजोरी, प्रतिकूल साधन, नो टाइम एवं साथियों के अभाव के कारण वह शत्रु का सामना नहीं कर सकता। इस प्रकार वह द्रव्य हिंसा न कर भावों की कालिमा से भाव हिंसा तो कर ही लेता है। भाव हिंसा को समझाने के लिए महापुरुषों ने तन्दुल मच्छ का उदाहरण दिया है—

विशाल समुद्रों में अनेक भीम काय मच्छ मुंह खोले पड़े रहते हैं। जब वे श्वास लेते हैं तो उन श्वास के साथ हजारों मछलियां उनके पेट में पहुँच जाती हैं। जब जब वे श्वास छोड़ते हैं तो वे ही मछलियाँ फिर बाहर आ जाती हैं। इस प्रकार प्रत्येक श्वासोश्वास के साथ हजारों मछलियाँ काल कवलित होकर भी पुनः सुरक्षित लौट आती हैं।

उन महा मच्छों के भ्रू या कान पर तंदुल मच्छ रहता है। उसका शरीर चावल के दाने तुल्य होता है, उसके पांचों इन्द्रियाँ तथा मन भी होता है। वह छोटा सा प्राणी उन मछलियों का आवागमन देखता है और विचारता है यह महाकाय मच्छ कितना आलसी व मूर्ख है ? एक श्वास के साथ हजारों मछलियाँ अनायास ही इसके मुंह में प्रविष्ट होती हैं और पुनः लौट आती हैं। यदि मुझे इतना बड़ा शरीर मिलता तो मैं एक भी मच्छली को पुनः नहीं लौटने देता। जितनी मछलियां मेरे मुंह में प्रवेश करतीं, सब को निगल जाता।

किन्तु जब मछलियों का प्रवाह उसकी ओर आता है, तब वह डर जाता है कि कहीं मैं भी इनकी झपट में न आ जाऊं। तथा अपने जीवन से हाथ न धो बैठूं ? उन मछलियों को निगलने की बात तो दूर रही, उनकी पांखों का एक कण भी खंडित नहीं कर सका। अंतर्मुहूर्त

तक कई निर्दोष प्राणियों के विनाश की दुर्भावना में वह उलझा रहता है और सातवीं नरक की तैयारी कर लेता है। वह पतन एवं दुःख के गहरे गर्त में जा गिरता है।

इस दृष्टान्त में द्रव्य हिंसा नहीं, केवल भाव हिंसा ही महीयती है। वह तंदुल मत्स्य को सातवीं नरक के घोर अंधकार में ढकेल देती है। अतः प्रत्येक नर को इस भाव हिंसा से सर्वदा बचना चाहिये।

द्वितीय विकल्प :- जीवन में ऐसे कई प्रसंग आते हैं कि मन में विश्व बंधुत्व की शुद्ध भावना रखते हुए भी हिंसा हो जाती है। इस हिंसा को "द्रव्य हिंसा" कहा है। द्रव्य हिंसा के साथ भाव हिंसा न होने से पापकर्म का बंध नहीं होता। जब तक शरीर है तब तक द्रव्य हिंसा से पूर्णतः बचना अशक्य है।

हिंसा का पूर्ण त्यागी श्रमण है और आंशिक रूप से हिंसा का परित्याग करने वाला श्रमणोपासक–गृहस्थ है। गृहस्थ जीवन समाज से सम्बद्ध है। उसे पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय कर्तव्यों का पालन करते हुए अनेक कार्य करने पड़ते हैं। अतः उसके लिए हिंसा की सीमा बांध दी गई है।

कुछ लोग जैन अहिंसा को पंगु कहते हैं, परन्तु जैन अहिंसा का चिंतन–मनन पूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति ऐसा नहीं कह सकते। जैन अहिंसा देश–रक्षा के लिये बाधक नहीं हैं। उसका एक ही वज्र आघोष है किसी भी देश पर हमला मत करो। किसी समाज एवं व्यक्ति को बल पूर्वक गुलाम मत बनाओ। ईंट का बदला ईंट से मत दो। यदि अन्य रास्ता न निकलता हो तो हर हालत में देश की रक्षा करो। उसके लिए हथियार भी उठाना पड़े तो डरो मत। नर संहार या अपनी रक्षा के लिए वह शस्त्र धारण नहीं करता, क्योंकि उसका विरोध व्यक्ति से नहीं, प्रत्युत उसकी दुर्भावना एवं दुष्प्रवृत्ति से है। व्यक्ति से तो सदा उसका प्रेम रहा है, क्योंकि अहिंसा का सन्देश ही प्यार एवं मैत्री का सन्देश है।

तृतीय विकल्प :—यह हिंसा पूरे पतन का द्वार है। व्यक्ति के मन में मारने काटने के परिणाम चक्कर काटते रहते हैं और इस कलुषित भावना को वह साकार रूप भी देता रहता है। यह हिंसा दुःख एवं अशांति की परम्परा को बढ़ाने वाली है।

जैसे एक कसाई अपने कसाई खाने में नव जात बच्चों को इकट्ठा कर मशीन के अंदर पील रहा था। उन जीवों का खून अलग, पानी अलग और हड्डियां अलग कर रहा था। उस समय शिवजी और पार्वती कहीं जा रहे थे। दोनों ने यह करुण दृश्य देखा। पार्वती ने पूछा हे प्राणेश्वर। यह कसाई मर कर कहां उत्पन्न होगा शिवजी बोले-समय आने पर कह दूंगा अभी नहीं। बीच में कई वर्ष व्यतीत हो गए। फिर एक बार शिव और पार्वती हिमालय में विचर रहे थे। वहां उन्होंने क्या देखा? एक हाथी गहरे गर्त में पड़ा है। कमर से लेकर पैर पर्यन्त भाग बिल्कुल गल गया है। उसमें कीड़े कुल–बुला रहे हैं। जीव जन्तु उसे खा रहे हैं। तीव्र वेदना से वह हाथी कराह रहा है। उसकी ऐसी दुःखी अवस्था व दयनीय दशा देखकर पार्वती ने पूछा: हे भगवन्! यह कब तक दुःख पाएगा? इसका आयु कितना अवशिष्ट है? यह कहाँ से आया है? इत्यादि प्रश्नों की बौछार कर दी। शिव जी ने कहा-पार्वति। जिस कसाई के बारे में तूने प्रश्न किया था कि वह मर कर कहाँ जाएगा? यह हाथी उसी कसाई का जीव है। उसने क्रूर जीव हिंसा की थी। उसका यह विपाक फल है। अभी यह कई वर्षों तक जीवेगा, दुःख भोगेगा। कर्म सत्ता किसी को भी छोड़ती नहीं है, बदला बराबर लेती है।

तृतीय विकल्प का मुख्य कारण कषाय है। कषाय का रंग जितना प्रगाढ होगा, उतनी ही अधिक निर्दयता से हिंसा होगी और कषाय का रंग जितना हल्का होगा उतनी ही निर्दयता भी कम होगी। व्यक्ति के जीवन में पनपने वाली समस्त अशांतियों का मूल कारण यह चंडाल चौकड़ी (क्रोध, मान, माया लोभ) ही है। परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व में अशांति की आग भड़काने, विद्वेष फैलाने एवं शत्रुता पैदा करने वाला कषाय ही है।

चतुर्थ विकल्प :- यह आत्मा की शुद्ध स्थिति का परिचायक हैं। इसमें दोनों प्रकार की हिंसा नहीं है।

इसमें न मारने की भावना है और न मारने का कर्म ही है। ऐसी सर्वांग; परिपूर्ण अहिंसा अयोग अवस्था में पहुंचने पर ही होती है।

भगवान महावीर का यह नारा है "जियो और जीने दो"। तुम स्वयं सुखी रहो और दूसरों को भी सुखेन रहने दो, क्योंकि सुख पाना प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है तुम उसमें वाधक मत वनो। तुम यदि किसी को सुख नहीं पहुंचा सकते तो दुःख पहुंचाने का प्रयत्न मत करो।

इस प्रकार चारों विकल्पों में प्रथम एवं तृतीय विकल्प ही हिंसा में लिए गये हैं। चतुर्थ विकल्प में हिंसा का सर्वथा अभाव है। द्वितीय विकल्प में द्रव्य हिंसा है। परन्तु भावों की कलुषिता न होने के कारण इसे हिंसा नहीं कहा गया है। इसका निष्कर्ष यह हुआ कि भाव हिंसा युक्त द्रव्य हिंसा ही हिंसा है।

इसके अतिरिक्त आज विश्वासघात, शोषण, व्यभिचार, अनैतिक व्यापार, लूट खसोट आदि से उत्पन्न दुःख भी कम नहीं हैं और मार-काट की घटनाएं आये दिन वढ़ती जा रही हैं। इस प्रकार संसार में व्याप्त दुःख, आतंक, भय एवं रोग आदि का मूल कारण मानव ही है। मनुष्य ने ही मनुष्य के लिए संकट पैदा कर रखा है। मानव जाति स्वयं हिंसा के दावानल में जल रही है और दूसरों को भी जलाने का प्रयत्न करती जा रही है। मानव की उपरोक्त विषम भावना ही हिंसा है।

"अतीत के अविस्मृत क्षण"

— सुधा सचेती —

स्मृति पटल पर अंकित कुछ क्षण ऐसे होते है जो कि जीवन में कभी विस्मृत नहीं किए जा सकते। इन्हें ही संस्मरण का नाम दिया जा सकता है। इसी भांति मेरे जीवन में व्यतीत हुए अतीत के वे क्षण मेरे मनो मस्तिष्क में हर समय विद्यमान रहते हुए अतीत को वर्तमान में परिवर्तन करने की चेष्टा करते हैं। काश ! वे दिन हमेशा के लिए रहते।

किसी भी विषय-वस्तु का अध्ययन करने पर कुछ न कुछ ज्ञान तो अवश्यमेव ही संपादित होता है। उसी प्रकार जैन धार्मिक शिक्षण शिविर में धार्मिकता, नैतिकता व आध्यात्मिकता का ज्ञान संकलित होता है। शिविर को हम "संस्कार अध्ययन" का नाम भी दें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं। एक वालक में संस्कारों का वीजारोपण इन्हीं शिविरों में उपर्युक्त ज्ञान द्वारा समुचित ढंग से किया जाता है। एक अंग्रेजी लोकोक्ति है— A good mother is better then hundred teachers. अर्थात् एक सुविज्ञ माता सौ शिक्षकों के तुल्य ही नहीं वरन् श्रेष्ठ है। वालक के गर्भ से लेकर जीवन के अन्य समय में संस्कारों का निर्देशन माता करती रहती है। किन्तु जब शनैः शनैः वालक का वौद्धिक विकास होता है तो माता के संस्कारों में ज्ञान का अभाव रह ही जाता हैं। उस अभाव पूर्ति की पुष्टि गुरूजन करते हैं। चाहे वह शिक्षण हो या साधु हो। आधुनिक युग में आध्यात्मिकता व धार्मिकता का जो अभाव खटकता था उस अभाव की पूर्ति धार्मिक शिक्षण में की जाती है।

मुझे यह अनुभव हमारे देश की राजधानी दिल्ली में प्राप्त करने का सुअवसर मिला। साथ ही यह गौरव परम् पूज्या, जैन कोकिला, विश्व प्रेम प्रचारिका, समन्वय साधिका वाल ब्रह्मचारिणी गुरूवर्या श्री विचक्षण श्री जी महाराज साहिवा की सान्निध्यता में सोने में सुहागावत रहा। कहा जाता है कि जैसा व्यवहारिक जीवन होगा उसी अनुसार सैद्धान्तिक जीवन वनाया जाय तो उसकी अमिट छाप हर व्यक्ति पर पड़ सकेगी किन्तु यदि व्यवहारिकता कुछ हो व सैद्धान्तिकता कुछ तो वह मात्र ढोंग, दिखावा या पाखण्ड ही कहलाता है। खैर अब आप इसे संग का रंग कहें, सत्संग कहें या संत समागम कहे। गुरूवर्या श्री के जीवन की जो अमिट छाप हम शिविरार्थियों के जीवन पर पड़ी वह आप श्री के व्यवहारिक जीवन के ही माध्यम से। गुरूवर्या जो कि विश्व प्रेम प्रचारिका व समन्वय साधिका के गुणों से सुशोभित है उस प्रेम का पाठ हमने गुरूवर्या श्री से गुणारूप ही सीखा। त्याग, संयम की तो आप सजीव ज्वलंत उदाहरण रूप प्रतिमा है। आप श्री के गुणों का अवलोकन मेरी लेखनी के भी सामार्थ्य के वाहर है।

हाँ ! तो मैं कह रही थी कि संस्कारों के वीजारोपण में मां के साथ शिक्षकों का, गुरूजनों का भी महत्वपूर्ण स्थान हैं। अगर मां वालक को सुसंस्कृत न कर पाए वर्न् शिक्षक भी उसकी गवेष्णा न कर सके, उसे न संभाल सके तो वालक पथ भ्रष्ट हो जाता है। क्योंकि पाश्चात्य दार्शनिक लॉक ने कहा है कि "वच्चे का मस्तिष्क एक स्वच्छ स्टेल की भांति है, अनुभव के आधार से उस पर अंक अंकित किए जाते है।"

हम सव में यह वीजारोपण माता के अलावा शिविर में पूज्य गुरूवर्या, देहली वासी भाई किरणलालजी व राजनांद गांव वासी भाई किसनलालजी ने उसी भांति किया जिस तरह एक वीज को सुविकसित रूप में पौधा व पौधे से पेड़ के लिए किया जाता है।

भोर के गूंजने से, उषाकाल की रजत रश्मियाँ से या कहें तो सूर्यदेव के आगमन से वहुत ही पूर्व हम सव छात्राएँ नमस्कार महामंत्र के प्रथम चरण, प्रथम कड़ी "णमो अरिहन्ताणं" की पुनीत पावन ध्वनि का गूंजन करते उठ वैठती थी। मानो शैय्या पर से वाहर कदम रखने से पूर्व ही हम आध्यात्मिकता, धार्मिकता के क्षेत्र में

अग्रसर हो जाती थी। तदुपरान्त सभी आपस में आनन्द विभोर हुईं, "जय जिनेन्द्र" के प्रस्फुटित स्वरों से प्रातः-कालीन अभिनन्दन किया करते थे। और फिर पहुंच जाते थे शीघ्र ही गुरूवर्या श्री के पावन चरणों में स्थान ग्रहण करने।

अपने नित्यकर्म से निवृत हो हम सब देव गुरू प्रार्थना, देव गुरू वन्दन कर सामायिक किया करते थे। पश्चात् पूजा, नाश्ता, कक्षा, भोजन, विश्राम, पुनः कक्षा, नाश्ता, गुरूवर्या श्री का प्रवचन-भोजनोपरान्त कुछ समय भ्रमण करते थे। संध्याकालीन इस भ्रमण के लिए अपना निवास स्थान छोटी दादावाड़ी ही थी जो कि *अपनी मनोहरता, रमणीयता से वातावरण को प्रसन्नतायुत* बनाती थी। भ्रमण के पश्चात् आरती, सामायिक प्रति-क्रमण, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पश्चात् करीब दस साढ़े दस बजे शयन हेतु जाते थे। क्रमशः इसी प्रकार अपने सुनियो-जित कार्यक्रमानुसार प्रतिदिन चलते थे।

इन सब कार्यक्रमों में विशेष स्थान लिया गुरूवर्या श्री के श्री मुख से वृष्टित हुई उस अमृतवाणी रूपी प्रवचन थे। जिसका कि हम सभी इन्तजार प्रातःकाल से किया करते है। शाम के भोजन की परवाह किए बिना, समय की बढती गति पर दृष्टिपात करने पर भी सभी थोड़ी सी देर और कहती रहती। गुरूवर्या भी सभी बहिनों की भावना का सत्कार कर कुछ के लिए अवश्य बढ़ा देती किन्तु थोड़ी देर के पश्चात् आखिर समय को दृष्टिगत करते हुए उन्हें समाप्त करना ही पड़ता था। इसके उपरांत भी सांयकालीन गुरूवन्दन के समय सभी गुरूवर्या श्री के श्रीमुख से चौविहार पच्चखाण लेती दृष्टिगोचर होती।

ये था हमारे शिविर के दैनिक जीवन का झरोखा किन्तु झरोखें में हमने कई गुण ऐसे प्राप्त किए जिनका कि अवलोकन तक जीवन में कभी नहीं किया था। झूंठन का निषेध, थाली आदि धोकर पीना, मौन सहित भोजन ही नहीं पूरे दिन का भी मौन वे आधुनिक युवतियाँ करती थी जो कि क्षण भर के लिए भी चुप नहीं रह सकती थी। त्याग, संयम, गच्छ पक्षपात से रहितता, गुरू की वात्सल्यता परस्पर स्नेह आदि।

सभी छात्राऐं चाहे मूर्ति पूजक हो या नहीं नियमित रूप से पूजा व वरिष्ठ कक्षा स्नात्र पूजा किया करती थी। इसी के साथ परीक्षा के पश्चात् हम सब सभी मन्दिरों के दर्शन हेतु मन्दिर श्वेताम्बर या दिगम्बर जाते। हर सम्प्रदाय के उपाश्रय में जैन श्रमण जीववों से आर्शीवाद लेने गए। वहां पर शिविर शब्द से तात्पर्य हमें बतलाया गया।

इस प्रकार शिविर के दिनों का विस्मरण नहीं कर सकते हैं। शिविर के माध्यम से धार्मिकता का प्रारम्भिक बीजारोपण अन्यत्र कहीं नहीं मिल सकता। जो ज्ञान अब तक हम प्राप्त नहीं कर सके वह हमने शिविर में *प्राप्त किया है और भविष्य में यदि ऐसे शिविरों में* भाग लेने का सौभाग्य मिल सका तो न केवल हम अपनी आध्यात्मिक उन्नति करेंगे अपितु जैन धर्म के मूल सिद्धान्तों की जानकारी प्राप्त कर जैन धर्म के व्यापक प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभा सकने में सक्षम होंगे?

किन्तु फिर कुछ आलोचक ऐसे है जो कि शिविर को धर्म के नाम पैसे को फालतू में व्यर्थ में खर्च करना मानते है। सही भी है बिना आलोचना के टीका टिप्पणी के वस्तु की अच्छाई पर दृष्टिपात नहीं किया जा सकता। उन महानुभवों को यह सोचना चाहिए कि बालकों में विद्यार्थियों में प्रारम्भ से ही धार्मिक संस्कारों को प्राप्त करने के लिए इस प्रकार के आयोजन किये जाते है। अवकाश के समय का सदुपयोग किया जाता है। क्योंकि स्कूल के समय निर्धारित शिक्षा के अलावा ऐसे धार्मिक अध्ययन का कार्य नहीं कराया जाता। आजकल जितना पैसा भौतिकता के लिए खर्च किया जाता है। यदि उसमें से कुछ हिस्सा आध्यात्मिकता व भावी पीढी के संस्कारोपण के लिए खर्च किया जाय तो बहुत ही उपयोगी रहता है।

खैर! इन तर्क को तो जितना बढाए बढा सकते है। किन्तु हर शहर-गाँव में शिविर का आयोजन नहीं कर सकते है। जी चाहता है हर हमेश शिविर में शिविरार्थी के रूप में रहकर आत्मिक शांति प्रदांता बीज से विकसित पेड़ की भांति अपनी आत्मा के विकसित स्वरूप रूपी लक्ष्य को प्राप्त कर सकू।

जय वीर।

भगवान करे तुम मनुष्य बनो

श्री विचक्षण श्री जी म. सा. की सुशिष्या

卐 मुक्ति प्रभा श्री 卐

" साहित्य रत्न "

卐卐
卐卐

मनुष्य जीवन एक ऐसा विशाल, विराट एवं सब प्राणियों में विशिष्टतम स्थान रखने वाला जीवन है। इसका जब हम सुक्ष्य दृष्टि से निरीक्षण करते हैं या अध्ययन करते हैं तो हमें परिलक्षित होता है कि मनुष्य जीवन ही श्रेयस्कर है। क्योंकि आध्यात्मिक भावना की पवित्र धाराएं इसी जीवन से ही प्रस्फूटित होती है अन्य किसी भी जीवन से नहीं। वैसे साधारणतया देखें तो मानव जीवन में निरन्तर दुर्वासनाएं अठ्ठखेलियाँ करती रहती है किन्तु इन्सान यदि चाहे तो इन दुर्वासनाओं के स्थान पर आध्यात्मिकता का पवित्र व निर्मल अजस्र प्रवाह बहा सकता है। वही मनुष्य संसार का स्तुत्य, प्रशंसनीय व चिरस्मरणीय बन सकता है।

इस वसुन्धरा पर अनेक महान् शक्तियों, महान् विभूतियों का समय २ पर अवतरण हुआ और होता रहा है और उन्होंने अपनी आत्मा में आध्यात्मिकता का अजस्र झरना बहाकर स्व-पर का कल्याण किया है। वे हम में से ही तो थे, कोई और नहीं थे। अथवा उनका शारीरिक ढांचा व इन्द्रियां हम से पृथक नहीं थी। आकृति से तो किसी प्रकार का भेद–प्रभेद नहीं था। भेद प्रभेद था तो सिर्फ प्रकृति से। इस सत्यता को कोई भी सम्प्रदाय मजहब या पंथ अस्वीकृत नहीं कर सकता। प्रकृति से ही मानव विशाल, विराट् व दिव्य विभूति बन सकता है। मनुष्य जीवन में यह विराट शक्ति अदृश्य रही हुई है। इस बात को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता और यदि करता है तो बीज में विशाल वृक्ष के अस्तित्व को भी कैसे स्वीकार करेगा। बीज है तो निश्चय ही एक दिन फल-फूल के महान् वृक्ष के रूप में हमारे सम्मुख आयेगा ही। ठीक ही कहा है—

मनुज मनुज ही नहीं, मनुज में ईश्वर भी है,
बीज बीज ही नहीं, बीज में तरूवर भी है।

आज हम आकृति से मनुष्य बने है लेकिन इसके साथ प्रकृति से भी मनुष्य बनने का प्रयत्न करना है। प्रकृति से मानव नहीं बने तो मानव जीवन से कोई तात्पर्य नहीं, फिर भला ऐसे जीवन में आध्यात्मिक दीप की लौ कैसे जल सकती है।

आध्यात्मिक दीप की लौ जलाने के पूर्व मानव को मानवीय–वृति लाना अति श्रेयस्कर रहेगा। जब तक मानव में मानवता नहीं होगी और जीवन में दानवता का ही बोलबाला होगा तो भला आध्यात्मिकता की लौ कैसे जल सकती है। किसी विचारक ने स्पष्ट ही कहा है कि यदि मानव में मानवीय वृति का निवास नहीं होता है तो मानव बन कर भी वह दानव है पशु है।

आध्यात्मिकता का दिव्य प्रकाश जिसके जीवन में प्रकाशित हो चुका था। अन्तर दृष्टि को पहुँच चुके थे। ऐसे ही एक योगी थे। जड़ और चेतन का आत्मा और परमात्मा की शक्ति का सही विश्लेषण करने की क्षमता ही नहीं अपितु स्वयं के जीवन में स्वयं के आचरण में भी भली-भाँति निहित थी। उनके सम्पर्क में जो भी आता उस से सिर्फ एक ही बात कहते कि "भगवान करे तुम मनुष्य बनो।" प्रत्येक व्यक्ति के लिए उनका यही एक आर्शीवाद रहता।

एक परम श्रद्धालू भक्त था। वह योगी की सेवामें प्रति दिन उपस्थित होता था। उसको भी वही आर्शीवाद। एक दिन भक्त अपने मित्र को योगी के पास ले आया चरणों में नमस्कार किया, योगी ने अपने नियमानुसार वही आर्शीवाद उसको भी दिया। "भगवान करे तुम मनुष्य बनो।" मित्र को यह आर्शीवाद बड़ा ही अटपटा लगा। अरे! गुरूजी यह कैसा आर्शीवाद देते हैं? यह

क्या कोई आर्शीवाद है ? किन्तु वह उस समय कुछ बोला नहीं मित्र के साथ उठकर बाहर आया । बाहर आकर बोला अरे ! मित्र । तुमने यह कैसा गुरू किया है ? यह भी कोई आर्शीवाद है । मनुष्य तो हम हैं ही । इसमें आर्शीवाद की क्या जरुरत ? यह आर्शीवाद उसके मस्तिष्क में चक्कर लगाने लगा । और उसे इस विषय के बारे में पूछने की लालसा होने लगी ।

उसने गुरूजी से बहस करने की पूर्ण तैयारी करली । दूसरे दिन मित्र के साथ संत की सेवामें पुन: पहुंचा । संत को नमस्कार किया तो संत ने फिर वही आर्शीवाद दोहराया । वह शीघ्र ही बोला-गुरूजी । यह कैसा आर्शीवाद ? मनुष्य तो हम बने हुए हैं कोई विशेष योग्यता के लिये या स्वर्ग सुख की उपलब्धि के लिए अथवा देवत्व को प्राप्त करने के लिये आर्शीवाद देते तो बात ही थी । मनुष्य तो हैं ही । गुरूजी बड़े गम्भीर व शान्ति मूर्ति थे । उसकी तेज व गर्व भरी वाणी का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा । वे तो हंसते हुए बहुत ही मधुर वाणी में बोले तुम आकृति से तो अवश्य मानव बन गये हो परन्तु प्रकृति से नहीं । पूर्व की पुण्याई के फल से मानवाकृति अवश्य मिल गई किन्तु अब प्रयाण और साधना करके अन्तर वृति को भी मनुष्य बनाओ । तभी पूर्ण मनुष्य बन सकोगे । शरीर मानव का और मन प्रवृति, अन्तर वृति पशु की हो तो यह कोई सच्ची मानवता या मनुष्य का सच्चा रुप है ।

अन्तर में क्रोध, कषाय, विकारों की परतें जमी हुई हैं । अज्ञान के आवरण आये हुए हैं उन परतों के नीचे आत्मा की अन्नत शक्ति निहित है । आध्यात्मिकता का अजस्त्र प्रवाह बह रहा है । उस प्रवाह को उस अनंत शक्ति को प्रस्फूटित करने के लिए उन परतों को तोड़ना अनिवार्य है ।

उन परतों को उखाड़ने की शक्ति मानव में ही सनिहित है मानव उन परतों को तोड़कर प्रकृति से मानव बन सकता है । और अपने साध्य तक पहुंचने में समर्थ हो सकता है । अत: आप इस प्रकार आत्मा के सही स्वरूप को प्रकट करो तब ही सच्चे मानव हो सकते हो ।

महापुरुषों के द्वारा निर्देशित साधना, उपासना, ध्यान, दान, परोपकार आदि आत्मा पर जमी परतों को तोड़ने का साधन है · आकृति से केवल मनुष्य न रहकर प्रकृति से मनुष्य बनने के साधन है । इन साधनों से ही मन की दुष्प्रवृतियां समाप्त हो के आत्मा की अन्नत शक्ति स्वत: ही प्रकट हो जायेगी ।

आत्म कल्याण का मार्ग

चिन्तन मनन
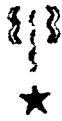
श्री बुद्धसिंह बाफना

बहुधा ऐसा होता है कि अधिकतर धार्मिक क्रियाएँ उस धर्म के दर्शन और उसके निहित सिद्धान्तों के विरुद्ध होती हैं। इसके ऐसा होने का मूल कारण धर्माचार्य हैं जिनका अध्ययन वैचारिक शक्ति सीमित रहते हुवे भी उन्होंने इन क्रियाओं को उपजाया, इनका प्रतिपादन किया और बाद में ऐसे ही आचार्यों द्वारा इनकी पुष्टी होती रही। समय और काल के अनुसार शायद इनकी कोई उपयोगिता रही हो तो मुझे इसमें भी शंका है पर आज के युग में यह केवल रूढ़ीवादिता और जड़ता का प्रतीक बन गई है।

जैन धर्म भी इस विरोधाभास से नहीं बच सका बल्कि और धर्मों की अपेक्षा जैन धर्मावलम्बियों में अभी भी क्रियाओं पर अधिक बल दिया जाता है और उसकी आचार सहिता में इन धार्मिक क्रियाओं का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। मैं इन क्रियाओं की सूचि व विवेचन में नहीं जाना चाहता क्योंकि सबको इनकी जानकारी है पर मैं यह अनुभव करता हूँ कि जैन दर्शन जो कि एक सरल और प्रगतिशील सिद्धान्त हैं इन क्रियाओं में उलझ कर अपनी शुद्धता नहीं रख पाया। जैन दर्शन जो कि यह मानता है कि जीव स्वयं अपना भाग्य विधाता है और स्वयं का कल्याण करने में पूर्ण रूपेण स्वस्थ व सशक्त है और केवल ज्ञान उपार्जन करके मुक्ति प्राप्त कर समय और काल की गति को लांघ सकता है। इसके लिए वैचारिक और आचरण शुद्धता ही आवश्यक मानी गई है। व्यवहार में हमने क्रियाओं का एक ऐसा आडम्बर खड़ा कर दिया है और उसमें इतनी कठोरता लादी गई है कि वे सब क्रियाएँ क्रिया कलाप और आध्यात्मिक प्रगति के बजाय जड़ता की द्योतक हो गई हैं। जो कि इन क्रियाओं को बड़ी लग्न व निष्ठा से बहुत वर्षों से पालते आ रहे हैं वे वहां के वहां ही स्थिर हैं जहां से उन्होंने प्रारम्भ किया था। प्रत्येक विद्यार्थी जो अ. ब. से पढना प्रारम्भ करता है वह कुछ ही वर्षों में उत्तरोत्तर ज्ञान की वृद्धि करता हुआ बी. ए. एम. ए. की पढाई तक पहुँच जाता है। क्या मैं पूछने की धृष्टता कर सकता हूं कि जो व्यक्ति ४०-५० वर्षों से घंटों समय निकाल कर प्रति दिन इन क्रियाओ का पालन निष्ठा से कर रहे हैं, उन्हें क्या ज्ञान की प्राप्ति हुई? उनका आचरण कितना शुद्ध होकर उनका आत्म बल कितना विकसित और प्रखर हुआ है? अगर ऐसा नहीं हुआ तो गलती कहां है—क्रियाओं में या क्रिया के पालने वालों में। मैं क्रिया पालकों की विशेष गलती नहीं मानता हूं कि वे ठीक रास्ते नहीं चल रहे, वरना अगर मंजिल तक नहीं पहुंचते तो चलते चलते काफी आगे तो बढना जरूरी था।

मैं तो यही कहूंगा कि हम अपने विश्वास में लुट गए हैं। बात वीतराग की करते हैं पर आचरण में लघुता और शुद्धता से ऊपर उठने का बिल्कुल प्रयास नहीं करते। सच बात तो यह है कि हम इस पर सोचते ही नहीं और न हमारे पास इतना समय है और न हममें इतना साहस कि जिन जड़ताओं से हम जकड़े हुवे हैं उनसे अपने को ऊपर उठाने का प्रयत्न भी कर सकें।

जैन दर्शन के जो वास्तविक सिद्धान्त सत्य, अपरिग्रह अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अहिंसा है उनके संदर्भ में ही इन क्रियाओं का औचित्य और महत्व देखा और तोला जा सकता है। जहां तक मैं समझता हूँ यह क्रियाएँ जिन्हें हम पाल रहे हैं इस संदर्भ में भी अधिक उपयोगिता नहीं

रखती। हमारे जीवन में इन क्रियाओं का महत्व इतना बढ गया है कि वे ही अपने आप में स्वयं एक धर्म बन गई हैं और इसका नतीजा यह हुवा कि इनके पालने में दर्शन का सार व तत्त्व धीरे २ लुप्त हो गया है। अधिक क्रिया को अपनाने से ज्ञान के प्रकाश का केवल एक ही द्वार इन क्रियाओं की प्रणाली से ही खुला रहता है, अन्य सब प्रकाश के द्वार और ज्ञान के स्रोत बन्द हो जाते हैं। इस एक प्रकाश के द्वार की ओर भी हम नहीं बढ पा रहे हैं क्योंकि हमारा प्रयास गतिहीन है। बिना तत्त्व व सार के पहचाने जो कि केवल चिन्तन व मनन से ही जाना जा सकता है हमारी गति कैसे हो सकती है। अतः हमें इन क्रियाओं के बजाय चिन्तन व मनन की ओर अधिकाधिक ध्यान देना चाहिए इसी में धर्म की सार्थकता है और आत्म कल्याण का मार्ग संकीर्णता से दूर होकर निरन्तर प्रशस्त होगा।

एक बात और है जिसकी ओर विशेष ध्यान देना होगा। आज का युवक वर्ग जो धर्म के प्रति निष्ठावान नहीं रहा है मेरे विचार से आज का पढा लिखा समुदाय भी इन क्रियाओं से ऊब चुका है और तत्त्व व सार की खोज में है और जब धर्मावलम्बियों में तथा उपासकों में सत्य की शोध के लक्षण दृष्टिगोचर नहीं होते तो उनकी खीज स्वाभाविक है। अतः धर्म की आस्था से वे विमुख हो रहे हैं।

अब हमें ऐसे आचार्य व प्रेरक की आवश्यकता है जो समुचय समाज को एकता में बाँधकर जैन - धर्म की पालना में नई चेतना व स्फूर्ती ला सके। चरित्र निर्माण और आध्यात्मिक विकास के बिना हम सब आज शाखाओं में उलझे हुवे हैं और उस पेड़ की जड़े जो कभी सुदृढ थी, खोखली होती जा रही हैं।

——

गुजरात के

भारत विख्यात जैन तीर्थ

विख्यात जैन तीर्थ श्री शत्रुंज्य (पालीतणा)
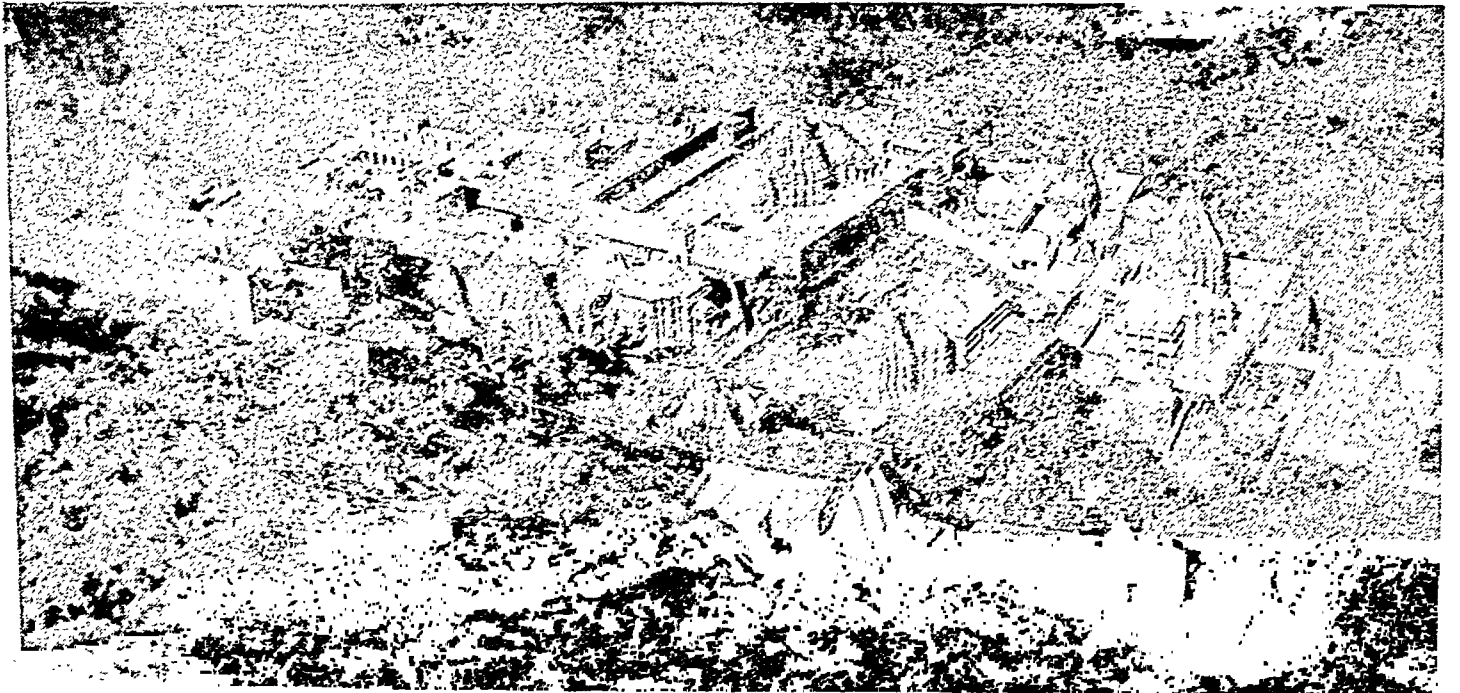
विख्यात जैन तीर्थ श्री गिरनार जी

वन्दना)
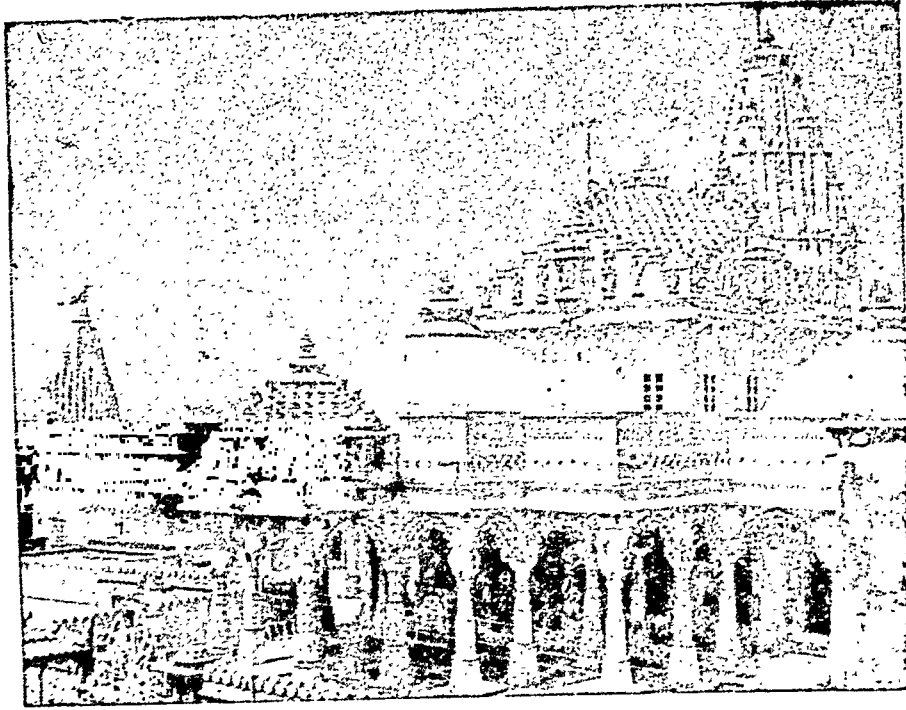
श्री चन्द्र प्रभास पाटन

कदम गिरि
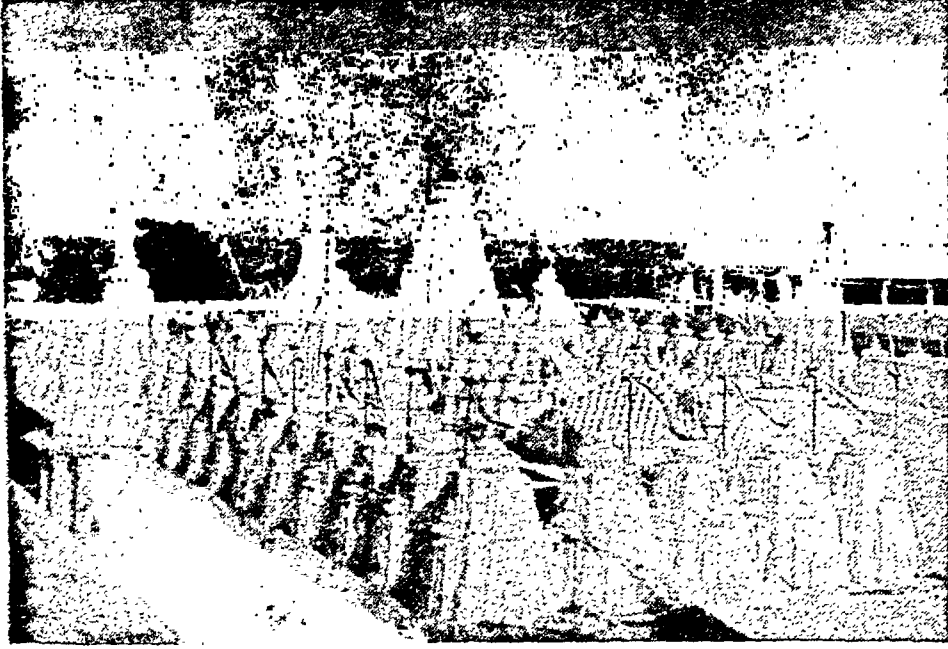
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ

तालध्वज गिरि

(वन्दना
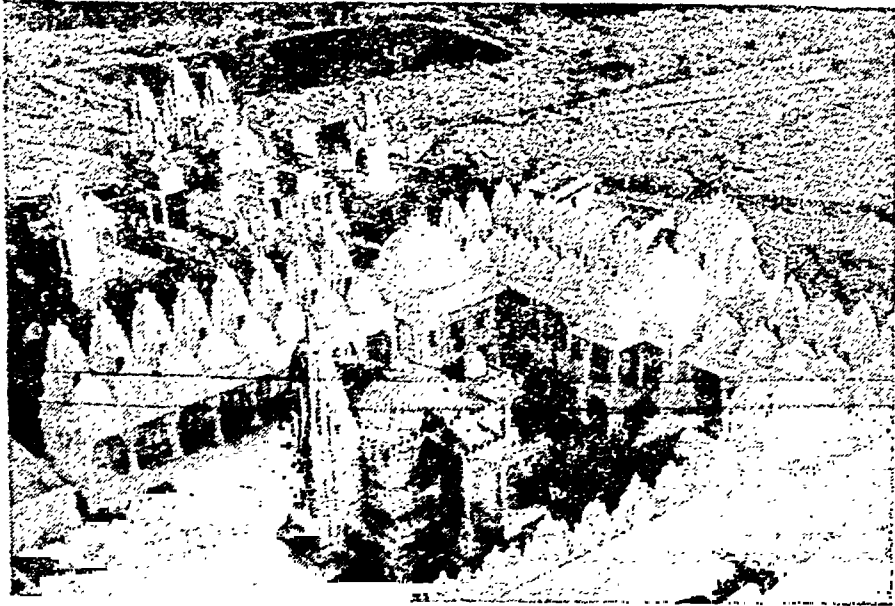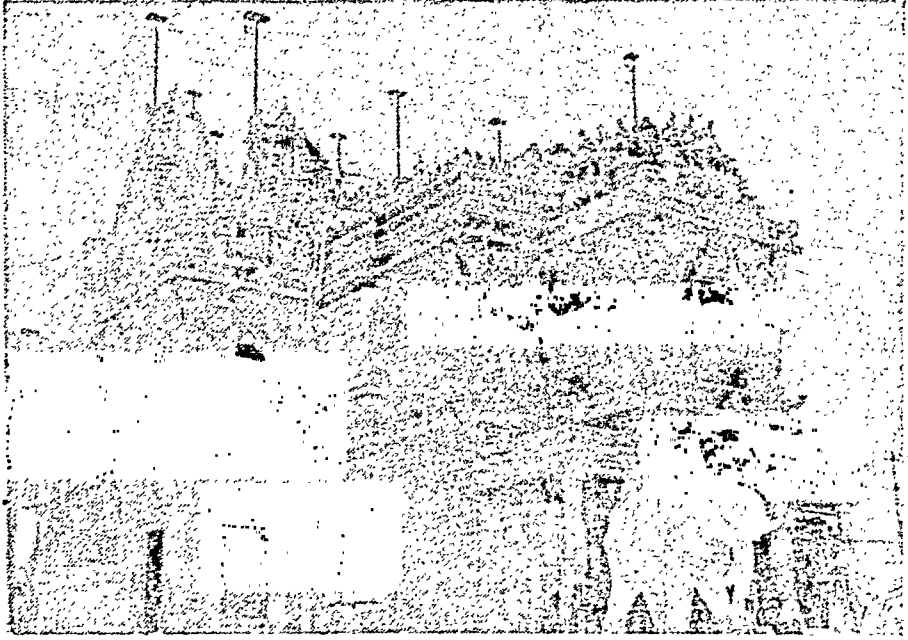
श्री केसरिया जैन तीर्थ - पालीतणा

जैन मन्दिर - अहमदाबाद

(वन्दना
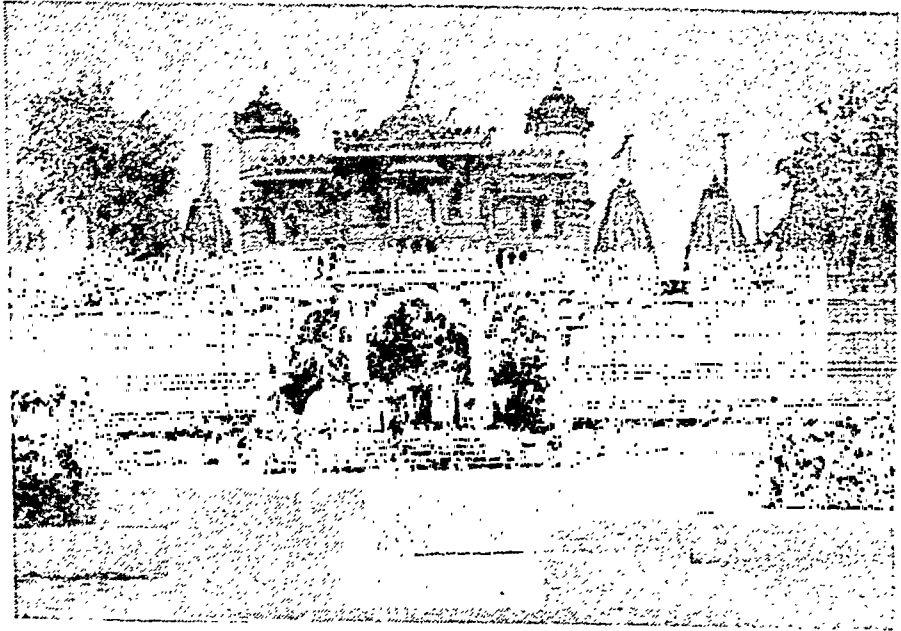
"अवसर से फ़ायदा उठाना ज्वार से मोती पाना"

卐卐
卐卐

पूज्य विचक्षण श्री जी महाराज साहिबा

की

— सु शि ष्या —

— 卐 श्री मणिप्रभा श्री 卐 —

"साहित्य रत्न"

卐

एक शहर में एक ब्राह्मण-ब्राह्मणी रहते थे। सामान्य परिस्थिति होने पर भी ब्राह्मण संतोषी था, पर ब्राह्मणी विपरीत थी, धन की लालसा के कारण वह ब्राह्मण को सदैव अधिक धनार्जन के लिए कहती थी। ब्राह्मण समझदार था तथा ऐसे अवसर की खोज में था जब वह ब्राह्मणी की मांग को पूर्ण कर सके। एकवार जब वह नक्षत्र संबंधी पुस्तकें देख रहा था, उसने एक शुभ लगन देखा और ब्राह्मणी से कहा तुम सदैव धन की मांग करती रहती हो आज वह शुभ वेला आ गयी है। जब तुम धन को प्राप्त कर अपनी इच्छा पूरी कर सकोगी। ब्राह्मणी ने पूछा कैसे? धन का अनायास आगमन ब्राह्मणी के लिए आश्चर्य जनक था, तब ब्राह्मण ने बताया कि अमुक समय वह लगन आने वाला है, उस समय मैं मंत्र पढूंगा, तुम एक चूल्हे पर हंडिया में उबलता हुआ पानी रखना। मैं जब "हूँ" कहूं तब तुम हंडियां में ज्वार के दाने डाल देना तुमको जवार के बदले मोती प्राप्त होगें। ब्राह्मणी ने कहा ठीक है।

इधर घर में ज्वार न होने से ब्राह्मणी पड़ौसिन (सेठानी) के यहाँ गयी। ब्राह्मणी को आया देख पड़ौसिन ने सदैव की भांति मिठास भरे शब्दों में आगमन का कारण पूछा। 'आये हुए व्यक्ति को सम्मान देना,' यह आदत जिस व्यक्ति में होती है, उसके पास सभी व्यक्ति जाना पसंद करते हैं तथा इस जीवन में आकर जो प्रीति से बोलता है उसका सभी यश गाते है अतः। कहा भी है—

"मीठे बोलो नम चलो, सबसे करो स्नेह;
कितने दिन की जिन्दगी, कितने दिन की देह।"

मीठा बोलने वाले व्यक्ति से हर व्यक्ति निसंकोच अपने मन की बात कहता है, अपनी समस्याओं का समाधान पूछता है। मधुर भाषी के पास अन्य व्यक्ति स्वतः उसी प्रकार आता है जैसे पुष्प पर भ्रमर, चीनी पर मक्खियां। शक्कर और नमक दोनों पास-पास रखे हो जाने पर भी, दोनों में श्वेतता होने पर भी मक्खियाँ शक्कर पर ही बैठती हैं, कारण शक्कर का मीठापन उन्हें अपनी ओर खींच लेता है।

सेठानी (पड़ौसिन) की यही प्रकृति थी। अतः ब्राह्मणी ने ज्वार के लिए कहा। पड़ौसिन ने कहा आज ज्वार का क्या करोगी? ब्राह्मणी ने सभी बात स्पष्ट कर दी। पड़ौसिन सुज्ञ चतुर थी अतः उसने भी। परिस्थिति से फायदा उठाना चाहा, उसने सोचा क्यों न मैं भी ज्वार से मोती प्राप्त करूं। मोती बन गये तो ठीक, अन्यथा खीचड़ा तो मिल ही जावेगा। ऐसा विचार कर, ब्राह्मणी के जाने पर, वह अपनी छत पर ऐसे स्थान पर बैठ गयी जहां से वह ब्राह्मण—ब्राह्मणी के घर का वार्तालाप आराम से सुन सकती थी।

शुभ लग्न के आने पर ब्राह्मण ने मंत्र पाठ करना चालू किया। जब वह अमूल्य क्षण आया तो ब्राह्मण ने "हूँ" शब्द का प्रयोग किया। ब्राह्मणी बोली—क्या डाल दूं? समय हो गया? फिर मुझे कुछ मत कहना, ऐसा बोलते २ वह समय टाल दिया, बाद में दाने डाले, समय जा चुका था अतः ज्वार के दाने मोती न बन सके।

ब्राह्मण आये हुए शुभ समय का सदुपयोग न हुआ देख पश्चाताप कर रहा है कि मुझे कैसी पत्नी मिली, और इधर वह ब्राह्मणी कहती है कि तुमने झूठ कहा

कि ज्वार के मोती बनेगें, यह तो कीचड़ा तैयार हो गया। ब्राह्मण मौन हो गया। समझदार को समझावे, भला मूर्ख को कौन समझावे ?

उधर चतुर पड़ौसिन ने समय का ध्यान रखते हुए, विधि का ध्यान रख पालन किया, जब ब्राह्मण ने "हूं" किया तब पड़ौसिन ने ज्वार के दाने उबलते पानी में डाल दिये। एक घंटे बाद जब उसने हंडिया का मुंह खोला, तो उसके मुंह पर आश्चर्य मिश्रित मुस्कराहट फैल गयी क्योंकि उसकी हंडिया में मोती जगमगा रहे थे। इस कृतज्ञता का मूल्य चुकाने हेतु कुछ मोती लेकर वह ब्राह्मणी के घर गयी। ब्राह्मणी ने जब पड़ौसिन के हाथ में मोती देखे तो विस्मय विमूढ बन गयी। पड़ौसिन ने सारी बात बताई, व मोती भेंट किये। ब्राह्मणी को चूके हुए अवसर पर बड़ा पश्चात्ताप हुआ पर "अब क्या हो जब चिड़िया चुग गयी खेत"। गया अवसर पुनः नहीं आता है इसलिए मस्तयोगीराज आनंदघन जी ने कहा है—

अवसर बेर २ नहीं आवे
ज्यों जाणे त्यों करले भलाई
जनम २ सुख पावे ।।१।।
तन छूटे धन कौन काम को
काहे को कृपण कहावे ।।२।।

ब्राह्मणी ने ब्राह्मण को पुनः ऐसा शुभ लग्न ढूंढने को कहा पर ब्राह्मण का क्या वश ? वर्षों में आये ऐसे अमूल्य अवसर को चूकने वाले को भला कौन समझदार कहेगा।

ब्राह्मणी के उदाहरण को ध्यान में रखते हुए हमें मानव जीवन की दुर्लभता पर विचार करना चाहिये। उच्च कुल, उच्चगोत्र आदि की प्राप्ति को अपना अहोभाग्य मानते हुए मानव जीवन के अमूल्य क्षणों पर विचार कर समय को व्यर्थ की कल्पनाओं में नहीं गंवाना चाहिये। मानव जीवन की विषमताओं पर ध्यान रखते हुए चिंतन मनन करना चाहिये कि व्यक्ति २ में इतनी विभिन्नता क्यों है, एक व्यक्ति जो दो रोटी के लिए दर-दर भटकता है तो दूसरा मौज-शौक में जिन्दगी व्यतीत करता हैं, इसका कारण खोजने पर यही समाधान मिलता है कि उनके पूर्व कृत कर्मो में विभिन्नता है, जैसा कि प्रायः कहा जाता है जैसी करनी, वैसी भरनी, बोये पेड़ बबूल के तो आम कहाँ से खाये। यदि हमने बुरे कार्य किये है तो शुभ परिणामों की उपलब्धि हमें कैसे हो सकेगी ? पूर्व संचित कर्म से हमें अभी फल प्राप्त हो रहा है, इसकी समाप्ति पर हम फक्कड़ हो जावेंगे। अतः क्यों न पहले से हम आगे का ध्यान रखें, ताकि आगे हमें किसी प्रकार की दिक्कत न हो। जो व्यक्ति ट्रेन में अपना रिजर्वेशन करा लेता है वह निश्चित हो जाता है तथा जो नहीं कराता, उसको यही विचार आता है कि न जाने कैसा डिब्बा, कैसा स्थान हमें ट्रेन में मिलेगा, तो जब व्यक्ति एक दो या तीन दिन की ट्रेन के सफर के लिए इतना विचार करता है तो उसे अपने आगामी जीवन के लिए भी ऐसे ही विचार करना चाहिये ताकि उसका आगामी जीवन हर प्रकार से सुविधामय बने। हर व्यक्ति प्रायः यही विचार करता है कि अभी तो जवानी है, लंबा जीवन है बुढ़ापा आने पर धर्म करूंगा। पर भाइयों ! श्वास का पंछी कब उड़ जावेगा, कुछ पता नहीं, व्यक्ति मुट्ठी बांधे आता है और हाथ पसारे जाता है, कितना भी धन-वैभव हो पर साथ में पाई भी नहीं जाती, केवल पुण्यार्जन व भलाई ही उसके साथ जाती है। मानव जीवन की तुलना पानी के बुद बुदे से करते हुए कहा है—

पानी केरा बुदा बुदा अस मानस की जात
देखत ही छिप जावेगा, ज्यों तारा परभात।

यही हालत तो अपने जीवन के साथ है। हमने यदि अभी इस पर विचार नहीं किया तो बाद में पश्चात्ताप के अतिरिक्त और कुछ हाथ नहीं आने वाला है। अतः हमें सदैव इस विषय पर चिंतन मनन करते रहना चाहिये तथा अमूल्य समय की कमाई जो हमने तप, जप, तीर्थ यात्रा धर्म ध्यान कर प्राप्त की है, उससे प्राप्त मानव जीवन का सदुपयोग कर जीवन के क्षणों को ज्वार से मोती के रूप में बदलने का प्रयास करना चाहिये। हर व्यक्ति उतना ही समय, उतना ही लंबा जीवन लेकर आता है, पर एक व्यक्ति उसी से यश कीर्ति सम्मान प्राप्त करता है तो दूसरा व्यर्थ खो देता हैं, इससे कौन अपरिचित है, सुज्ञेषु किं बहुना ?

जीवन सफल बनाएँ

वीर प्रभु के आदर्शों को, जन-जन में फैलाएं ।
जीवन सफल वनाएं ।।

उनके जैसी त्याग-तपस्या, जीवन में अपनाएं ।
जीवन सफल वनाएं ।।

वचपन से ही वीर प्रभु तो, तीन ज्ञान के ज्ञाता ।
दीक्षा के अवसर पर प्रभु को, चौथा ज्ञान भी आता ।

केवल ज्ञान की महिमा को हम, जन-जन में पहुंचाएं ।
जीवन सफल वनाएं ।।

ज्ञान प्राप्ति के हित में प्रभुने, लाखों कष्ट उठाए ।
उन कष्टों की वातों को सुन, रोम-रोम कंपाए ।
अनुकरणीय पथ पर हम चलकर, ज्ञान ज्योति प्रगटाएं ।
जीवन सफल वनाएं ।।

वीर प्रभु ने सहा है जितना, सहा नहीं जा सकता ।
त्याग तपस्या के वर्णन को, कहा नहीं जा सकता ।
तप-जप संयम की परिभाषा, जन-जन को समझाएं ।
जीवन सफल वनाएं ।।

जीयो और जीने दो सवको, यही रहेगा नारा ।
"कुशल" अहिंसा को अपनाकर, वनजा तू ध्रुवतारा ।
पच्चीस सौ वें निर्वाणोत्सव की, घर-घर चर्चा गाएं ।
जीवन सफल वनाएं ।।

धनराज चोपड़ा 'कुशल'
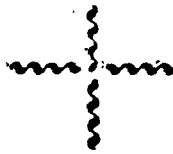
प्रभु-भक्ति की महिमा

राजरूप टांक

जैन धर्म के अनुसार सब जीव द्रव्य दृष्टि से अथवा शुद्ध निश्चयनय की अपेक्षा से समान हैं उन्में कोई भेद नहीं। सबका वास्तविक गुण-स्वभाव एक ही है। प्रत्येक जीव स्वभाव से ही अनंत दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख और अनन्त वीर्यादि अनन्त शक्तियों का आधार है। परन्तु अनादि काल से जीवों के साथ कर्म मल लगा हुआ है। जिसकी मूल प्रकृतियाँ आठ, उत्तर प्रकृतियां एक सौ अड़तालीस और उत्तरोतर प्रकृतियाँ असंख्य हैं। इस कर्म-मल के कारण जीवों का असली स्वरूप आच्छादित है, उसकी वे शक्तियां अविकसित हैं और वे परतन्त्र हुये नाना प्रकार की पर्यायों को धारण करते हुये नजर आते हैं। अनेक अवस्थाओं को लिए हुवे संसार का जितना भी प्राणि वर्ग है वह सब उसी कर्म-मता का परिणाम है। उसी के भेद से यह सब जीव जगत भेद रूप हैं और जीव की पद अवस्था विभाव परिणिती बनी रहती है, तब तक वह 'संसारी' कहलाता है और तभी तक उसे संसार में कर्मानुसार नाना-प्रकार के रूप धारण करके परिभ्रमण करना तथा दुख उठाना होता है, जब योग्य साधनों के बल पर वह विभाव परिणिति मिट जाती है तब आत्मा के कर्म-मल का सम्बन्ध नहीं रहता और उसका निज स्वभाव पूर्णतया विकसित हो जाता है, तब वह जीवात्मा संसार परिभ्रमण से छूट कर मुक्ति को प्राप्त हो जाता है और मुक्त सिद्ध अथवा परमात्मा कहलाता है। जीव की दो अवस्थायें हैं एक जीव मुक्त और दूसरी विदेह मुक्त। इस प्रकार पर्याप्त दृष्टि से जीवों के 'संसारी' और 'सिद्ध' ऐसे मुख्य दो भेद कहे जाते हैं अथवा अविकसित, अल्पविकसित, बहुविकसित और पूर्ण विकसित ऐसे चार भागों में भी उन्हें बांटा जा सकता है। और इसलिये जो अधिकाधिक विकसित हैं वे वीतराग स्वरूप से ही उनके पूज्य एवम् आराध्य हैं।

ऐसी स्थिती होते हुए यह स्पष्ट है कि संसारी जीवों का हित इसी में है कि वे अपनी विभाव परिणिती को छोड़कर स्वभाव में स्थिर होने अर्थात सिद्धि को प्राप्त करने का प्रयास करें इसके लिए आत्मगुणों का परिचय चाहिये, गुणों में अनुराग चाहिये और विकास मार्ग की दृढ श्रद्धा चाहिये। बिना अनुराग के किसी भी गुण की प्राप्ति नहीं होती। अतः विकास चाहने वालों को उन पूज्य महा-पुरूषों अथवा सिद्धात्माओं की शरण में जाना चाहिये। उनकी उपासना करनी चाहिये, उनके गुणों में अनुराग बढाना चाहिये और उन्हें मार्ग-प्रदर्शक मानकर उनके नक्शे-कदम पर चलना चाहिये अथवा उनकी शिक्षाओं पर अमल करना चाहिये, जिनसे आत्मा के गुणों का अधिकाधिक रूप में अथवा पूर्ण रूप से विकास हो। यही उनके लिये कल्याण का सुगम मार्ग है। वास्तव में ऐसी महान् आत्माओं के विकसित आत्म स्वरूप का भजन और कीर्तन ही, हम संसारी जीवों के लिये मननशील और अनुकरणीय है। सो उनकी भावना द्वारा उसे अपने जीवन में उतार सकते हैं और उन्हीं के अथवा परमात्म स्वरूप के आदर्श को सामने रख कर अपने चरित्र का गठन करते हुए अपने आत्मीय गुणों को विकसित करके तद्रूप हो सकते हैं। इस सब अनुष्ठान में उनकी कुछ भी गरज नही होती और न इस पर उनकी कोई प्रसन्नता ही निर्भर हैं। यह सब साधना अपने ही उत्पात के लिये की जाती है। सिद्धि के साधनों में 'भक्ति मार्ग' को एक मुख्य स्थान प्राप्त है।

श्री देवचन्दजी महाराज ने इसीलिये कहा हैं 'जिन पडिमा जिन सारखी' और श्री समय सुन्दरजी महाराज ने भी इसी की पुष्टी करते हुये कहा है, भविका श्री जिनबिंब जुहारों। अत. वीतरागता प्राप्त करने के लिये श्री वीतराग की उपासना करनी चाहिये। इसी से सिद्धी प्राप्त होती है और भक्ति मार्ग ही इस पंचम काल में सुलभ है। किसी कवि ने कहा है 'ज्ञान, ध्यान तप, जप, नहीं उदय आवे मुझको, एक तेरे नाम को आधार प्रभू है मुझको; इसीलिये प्रभु भक्ति करनी चाहिये।

अहिंसा परमो धर्म

जियो और जीने दो

जैन धर्म की जय
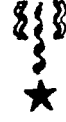
वाड़मेर नगर में पूज्यनीय साध्वी मनोहर श्री जी एवं अन्य साध्वी समुदाय ने प्रथम बार जून १९७३ में धार्मिक शिविर लगाया। जैन श्री संघ की ओर से यह प्रयास सदैव स्मरणीय रहेगा। धर्म प्रचार एवं जन साधारण में जैन धर्म के प्रति जाग्रति हेतु ऐसे शिविर उपयोगी रहे हैं। हम सभी को ऐसे शिविर लगाने का भविष्य में प्रचार करना चाहिये।

आत्म कल्याण कैसे ?

श्रीमती भंवरी बाई रामपुरिया —

एक मस्जिद में एक बड़ा सा हौज़ था, जिसमें नमाज पढने वाले व्यक्ति अपने हाथ पांव स्वच्छ करते थे। एक दिन न जाने कैसे एक कुत्ते का पिल्ला उस हौज में गिर गया। कलेवर एक पत्थर में अटक कर नीचे ही दवा रह गया। लोग आते, हाथ मुंह धोते, पानी में गंध आती। धीरे २ गंध असह्य हो उठी। हौज के निकट जाना भी कठिन हो गया। वात काजी के पास पहुँची काजी ने कहा—"हौज का पानी निकाल कर पानी वदल दो। वात की वात में मजदूरों ने पुराना पानी फैंक कर नया पानी भर दिया। दूसरे दिन लोग आए परन्तु पानी में वही दुर्गन्ध मौजूद थी। लोग हैरान थे। समझ में नहीं आया, दुर्गन्ध कहां से आती है। पुनः काजी के पास गए काजी हंसने लगा।

भाइयों ! पानी में कभी गंध नहीं होती, पानी में अवश्य कुछ सड़ने वाला पदार्थ गिरा है। हो सकता है किसी जानवर का कलेवर नीचे पड़ा हो। उस मुर्दे को नहीं निकाला गया होगा। असली कारण मिटाए विना मात्र पानी फैंकने से गंध कैसे जाएगी ?

हौज पुनः खाली किया गया। मृतक कुत्ते का शव निकाल कर हौज का आन्तरिक भाग स्वच्छ करके पानी भरा गया। अब पानी में किसी प्रकार की गंध नहीं थी।

ठीक यही वात हमारे जीवन पर वरावर उतरती है। हम प्रति दिन यथा समय सभी आवश्यक क्रियाएँ करते हैं। आश्रव द्वारा एकत्रित होने वाला जल उलीच उलीच कर परेशान है। किन्तु अपने अन्तस्तल में दवे दुर्भावनाओं के सडे कुत्तों के कलेवर प्रतिपल परेशान करते रहते हैं। इस कषायों की दुर्गन्ध, जलन, दाह ने हमारा जीना दूभर कर रखा है। हमारा जीवन कुसुम सौरभ के स्थान पर दुर्गन्ध फैलाता है।

हमारे में से अनेकों भाई वहिन सवेरे उठते ही नवकार मन्त्र का जाप करते हैं, भग वान का नाम रटते हैं, यथा शक्ति एक दो-तीन सामायिक प्रतिक्रमण, पूजा, जप, तप, दान—दयादि करते हैं। लाखों करोड़ों सामायिक, करोड़ों का दान, करोड़ो मंत्रों का जाप करके भी हम किस स्थान पर भूल करते आ रहे हैं ? हमारे जीवन में सुख संतोष के दर्शन नहीं हो पाते ? वही प्राण लेवा दुर्गन्ध वही अशान्ति, वही हाय--हाय, वही अन्तर्दाह। आखिर हम कहां भूल कर रहे हैं ? वर्ना ऐसा क्यों—देवाधिदेव त्रैलोक्य पति का नाम जाप-पूजा हमारे पाप ताप संताप को क्यों नहीं हटा पाई ? धन्वन्तरि वैद्य की दवा भी हमारी वीमारी मिटाने में क्यों लाचार हो रही है ? अरे ! जिस सामायिक से, जिस जप-तप पूजा से घोरातिघोर पापी पावन वन गए, क्रूर, हिंसक, व्याघ्र, कसाई तिर गए उसी क्रिया से हमें शान्ति क्यों नहीं मिल पाई ? इस ज्वंलत प्रश्न पर हमें विवेक पूर्वक विचार करना ही होगा।

उत्तर स्पष्ट है। हमने सव कुछ किया परन्तु अन्तर में रहे विषय कषायों की गंदगी साफ करने का रंच भर भी प्रयास नहीं किया। हमने विधि में भूल की। जिस विधि से जो क्रिया करने की थी नहीं की। सही दिशा में किया गया प्रयोग ही सही गंतव्य उपलव्ध कराता है। मुंह में नमक की कंकरी डाल रखी हो उस मुंह में शक्कर की असली मिठास कैसे आवेगी ? नमक थूक कर मुंह साफ करके खाने पर ही मिठास का अनुभव होगा।

सही क्रिया वही है जिसकी प्रति क्रिया क्रोध मानादि कषायों के विनाश रूप में परिलक्षित हो। वर्ना हमारा प्रयत्न-पुरूषार्थ सही नहीं था।

सामायिक करके समभाव क्यों नहीं आया ? प्रति—क्रमण ने पापों से पिण्ड क्यों नहीं छुडाया ? वृतियाँ पापों में ही संलग्न रहना क्यों चाहती है ? पौषध यव रोग मिटाने की प्रकृष्ट- उत्कृष्ट औषध होने पर भी भव चक्र में परि भ्रमण का एक भी चक्कर क्यों नहीं घटा ? करते करते जिन्दगियां खत्म हो गई, अन्त—र्शोधन नहीं हुआ। विषय कषायों से परहेज रखे विना दवाई नाकामयाव रही।

मानो दूध व जल के कलश भर भर कर भगवंत का अभिषेक किया किन्तु मन पर लगी मैल की परतें ज्यों की त्यों जमी पड़ी हैं; ऐसा क्यों ?

न जाने पूजा के नाम पर कितनी केसर, वरास चन्दन घिस डाली, मोह की ज्वाला-दाह जलन का उपश—मन क्यों नहीं होता ?

पुष्पों के ढ़ेर के ढ़ेर चढाए पर आज तक सत्य तत्व सुमन विकसित होकर भाव सुगन्ध का प्रगति करण क्यों नहीं हुआ ?

कर्म घटाएं विखराने को भगवत की धूप पूजा की, पर वे कर्म घटाएं आज पर्यन्त सघन क्यों हैं ?

दीपकों में मणों घी जल गया आत्म रोशनी के दर्शन दुर्लभ क्यों वन रहे हैं ? अन्धकार क्यों नहीं मिटता ?

अक्षत पूजा से अक्षय पद की कामना की पर अभी तो भाव भरण प्रतिपल पीछे पड़ा है क्षय करने वाले शत्रु सवल क्यों हैं ?

अनाहारत्व की कामना से नेवेद्य धरा खाने की लालसा इन्च भर भी पीछे क्यों नहीं हटती ।

जव कुछ भी नहीं हुआ तो फिर फल पूजा से मोक्ष पल प्राप्ति की अभिलाषा वंध्या सुत समान कल्पना रही । इसमें आश्चर्य क्या ?

न आरती ने पीड़ा हरी न मंगल दीपक ने भाव मंगल प्रगटाया । ऐसा क्यों हुआ इस पर हमें ईमानदारी के साथ विचार करना होगा ।

सव कुछ भगवान की आज्ञानुसार करके भी हमारे जीवन व्यवहार में कुछ भी फर्क क्यों परिलक्षित नहीं होता ?

वही क्रोध की तम तमाहट-धम धमाहट "लातम लात वाथम वाथा" वही मान की महत्ता आसमान झुक जायें पर झुकने वाले कोई और । ऐसा क्यों कहा–क्यों किया, धन, वैभव के नशे में उन्मत "हम चौड़े, गली सांकड़ी" । वही मायाचारी इधर की उधर लगाना मिटाना, उसको ठगा, इसको लूटा, दो को लड़ाया, अपना उल्लू सीधा किया । मीठी मीठी वातों से दूसरों को फंसानें की चेष्टा "मुंह में राम वगल में छुरी" । पाप का वाप लोभ, न्याय किंवा अन्याय, नीति अथवा अनीति किसी भी तरीके से पैसा कमाना, दस का लाभ वीस की इच्छा, सौ, पांच सौ, हजार, लाख, करोड़, अरव लालसा का अन्त ही नहीं । अन्त विना की लालच, गैर किंवा वाजिव जैसे भी हो मेरी तिजोरी तर रहे परमार्थ के नाम पर "चमड़ी जाये पर दमड़ी नहीं" वही काम–कामनाओं की धवकती ज्वाला, इर्ष्या दंभ, डाह की जहरीली गैस प्रति-पल भाव मरण के चक्र में फंसाती है । एक दिन हम थे, किंवा नहीं हो जायेगें । काल का अमोघ चक्र सिर पर घूम रहा है आज लेगा या कल का अभी कोई ठिकाना नहीं ।

प्रतिदिन धार्मिक क्रियाएं करने वाले हमारे जीवन में वेईमानी, वे इन्साफी, दगा-धोखा, छल, प्रपंच, दूसरे का धन मार खाने की भावना, विधवा, निराश्रित वहू वेटी का जीवन आचार धन दवा जाने की कामना, लोभ की अन्तहीन आग, हमारी समस्त धार्मिक क्रियाएं सुकृत की संचित निधि को क्षण भर में भस्म कर देती हैं । हमारे धार्मिक जीवन पर लोग अगुंलिया उठाते हैं ये धर्मातमा है ।

यदि धर्माचरण युक्त जीवन से भी वही दुर्गन्ध असंतोष की लपटें उठती हो तो फिर समाज की क्या दशा होगी ? समाज के आधार स्तम्भ नीतिवान, धर्मात्मा पुरूष ही तो होते हैं ।

हमारे अन्त स्तल में दवे हुए काम कषायों के मुर्दा कुत्तों के कलेवर सड़कर दुर्गन्ध फैंक रहे हैं जिनकी दुर्गन्ध से आज हमारे आस पास में रहने वाले हमारे भाई, हमारा समाज, देश-राष्ट्र सभी परेशान–परेशान हो उठे हैं ।

हमारी प्रत्येक क्रिया का परिणाम सत्य रूप में हमारे जीवन में परिलक्षित है । हमारी सामायिक प्रतिक्रमण पूजन आदि रूपी हमारे जीवन में प्रतिकात्मक रूप से दर्शन दें । हमारी प्रत्येक क्रिया का फल अन्तर शोधन कर मुर्दा कुत्तें को निकालने का हो ।

धीरे धीरे प्रयत्न करते रहने पर एक दिन हमारा ज्ञान जल स्वच्छ निर्मल पवित्र– अवश्य वनेगा । प्रयत्न से असाध्य भी साध्य वन जाता है ।

जीवन वनाने की कला आनी चाहिए । जीवन कैसे जीना, हमारा जीवन कैसे अधिक से अधिक उपयोगी वने, हमारे द्वारा कैसे दूसरों का अधिक भला हो, इंच पर के कार्य की सिद्धि किस प्रकार हो सकती है । इस कला का मर्म यदि हमने नहीं जाना तो सव जाना व्यर्थ है और किया कराया सव घाटे का व्यापार ही होगा ।

क्रिया के साथ अन्तर–लक्ष यदि जुड़ा न हो तो क्रिया का परिणाम सुन्दर नहीं आता । अतः क्रिया के साथ अन्तरतारा चाहिए ? | |

" प्रगति के पथ "

— आशा टांक —

यूं तो जन्म सभी लेते हैं, आते जाते रहते हैं
विश्व हितंकर जो कर जाते, धन्य पुरूष वे होते हैं
—अमर मुनि

इस धरा पर जन्म लेकर मानव ने अपने जीवन के अमूल्य क्षणों पर विजय प्राप्त न की, उनका सदुपयोग नहीं किया, उन्हें सत्कार्यों में न लगाया तो वह धरा पर भार स्वरूप हो जाता है। ऐसे व्यक्तियों का जीना-मरना कोई महत्व नहीं रखता। संसार में अनेक व्यक्ति आते तथा जाते हैं पर जगति श्रद्धा के सुमन श्रद्धेय पात्र को ही चढ़ाती है। अतः अब प्रश्न यह उठता है कि श्रद्धा का भाजन कैसे बना जाय? कौन सी ऐसी क्रियाएं हैं जो हमें प्रगति के पथ की ओर अग्रसर कर सकती हैं? किस माध्यम से हमारे विचारों की शृंखला उन्नति के शिखर पर पहुँच सकती है? इसके लिए हमें अनेक मानवीय गुणों को अपनाना होगा, वे मानवीय गुण हम पुस्तक के द्वारा प्राप्त कर सकते है अथवा किसी महापुरूष के संपर्क से। महान् पुरूष का परिचय, उसके सान्निध्य के कुछ क्षण भी किस प्रकार आराध्य स्वरूप बन जाते हैं यह ज्ञातव्य। है जैसा की कभी २ हम अनुभव करते हैं या मैंने किया है कि कुछ व्यक्ति, जिनसे हम कुछेक क्षण के लिए ही मिल पाते हैं उनके व्यक्तित्व की हमारे मस्तिष्क पर अमिट छाप पड़ जाती हैं। कई बार तो ऐसे भी अवसर आते हैं कि किसी सद्पुरूष के समागम से जीवन की दिशा मोड़ खा जाती है, संपूर्ण जीवन में आश्चर्य-जनक परिवर्तन हो जाता है। वाल्मिकी डाकू व चिलाती चोर के जीवन को बदलने में संत समागम ही कारण बना। और संत समागम प्राप्ति के बाद ही इन्होंने जीवन परिवर्तन कर आत्मोत्थान की ओर लगाया। अपवाद को छोड़कर सत्संग का प्रभाव हर व्यक्ति में कभी न कभी, किसी न किसी रूप में अवश्य होता है। पर क्षणिक भावावेश, श्मशान वैराग्य या क्षणिक उच्च विचारों से जीवन प्रवाह महान् नहीं बन सकता, उसके लिए आवश्यकता है सतत अभ्यास की व सत्संग की।

सत्संग शब्द दो शब्दों से मिला है, सत्+संग जिसने सत्य का साक्षात्कार किया ऐसे सत्जन जिन्होंने सत् को जान लिया हैं, जीवन जीने की कला को समझ लिया है आदर्शों को अपने जीवन में उतार लिया है उनका संग करना। कहते भी हैं जैसा करत संग, वैसा लगत रंग। संगत का रंग लगना स्वाभाविक ही है। कज्जल कोठड़ी में जाने के बाद श्याम वर्ण के संपर्क से भला कोई छूट सकता है?

आज भी हम देखते हैं कि सुसंस्कार में पले बालक गुण ग्राहक व सुसंस्काराभाव में पले बालक गुण में भी छिद्रानवेषण की प्रवृत्ति रख दुर्गुण ग्राहक बनते हैं। आज के समाज में जहां प्रायः असत्य का प्रयोग किया जाता है (कारण सत्य को फैशन मान या समय की देन मानकर लोग झूठ बोलने में जरा भी संकोच नहीं खाते) बड़ों के अमृत तुल्य वचन उन्हें कर्णकटु व अरूचिकर लगते हैं। इसकी पृष्ठ भूमि अवलोकने पर ज्ञात होगा कि संस्कार। भाव में पला बालक असद् कृत्य करता है जिससे जीवन के अंतिम क्षण तक वह अन्य व्यक्तियों के सिरदर्द का कारण बनता है। आज के समाज में, स्कूल में, परिवार के घेरे में जितनी विद्रूपता, नग्नता, अश्लीलता व अन्य दुष्प्रवृत्तियां जन्म ले रही हैं उन सभी का कारण है सत्संगाभाव।

एक नीरोग व्यक्ति को भी यदि स्वस्थयोचित भोजन न मिले तो कभी न कभी वह बीमार होगा ही, फिर सत्संग तो जीवन में आवश्यकीय तत्व के साथ-साथ कभी २ तो औषधि का काम करता है। कितने ही सुप्त प्राण को जागृत करने में सत्संग सहायी होता है। सत्संग प्रायः हर व्यक्ति के लिए रामबाण औषधि का काम करता है पर उसकी महत्ता विरले ही जानते हैं। सत्संग के क्षण कितने सुखद व प्रियकर होते हैं इसे अनुभवी या ज्ञाता ही जानता है। सत्संग एक प्रेरक तत्व है जिसकी प्रेरणा ने न जाने कितनों का उद्धार किया है। प्रेरणा की एक चिनगारी व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन ला उसे शुभ कार्य

में उतना ही जोश देती है जितना पूर्व दुष्कार्यों में देती थी। उसके उत्साह में मोड आ जाता है जो हर व्यक्ति के लिए महान् प्रेरणा दायक उदाहरण बनता है। शांति की खोज में भटकता प्राणी ऐसे आश्रय स्थलों को पाकर धन्य हो जाता है, उसका जीना व जीवन दोनों सफल हो जाते हैं। उन्नति के शिखर पर पहुँचने के लिए प्रेरणा की आवश्यकता है यह प्रेरणा स्थल महापुरुषों का आदर्श जीवन ही है, जिसे हम सत्संग के माध्यम से ग्रहण कर सकते हैं।

संपर्क से जीवन बदल जाता है इसका बहुश्रुत उदाहरण प्रचलित है। रामू नामक बालक जो बचपन से ही भेड़ियों की संगति में पलता है तथावत गुर्राना, चलना अन्य क्रियाएं करता है। ठीक इसके विपरीत प्रशिक्षित किये जानवर भी वे क्रिया करने लगते है जो उन्हें सिखाई जाती है। अभ्यास से क्या नहीं होता "करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।" फिर सुज्ञ प्राणि के सत्संग का रंग न चढ़े, यह कैसे हो सकता है?

प्राणि आदर्श जीवन जीना चाहता है, स्व-पर का कल्याण करना चाहता है पर जो स्वयं ही दिग्भ्रमित है वह अन्य को क्या मार्ग दर्शन देगा? अत: सत्संग आवश्यक है। सत्संग का शाब्दिक अर्थ जैसा कि हमने अभी बताया "सत्य का संग" व्यक्ति के जीवन के क्षणों को अमूल्य बना देता है। जीवन में वही क्षण सार्थक व धन्य होते हैं जो सत्संग में व्यतीत होते हैं। सत्संगाभाव में हमारा जीवन चार प्रकार की विकथाओं में व्यतीत होता है—स्त्री कथा, देश कथा, भक्त कथा, और राज कथा। इन विकथाओं से बचने के लिए, जीवन के अस्थाई क्षणों को स्थाई रूप देने के लिए महान कार्यों को करना चाहिये। जीवन के वही क्षण महान् होते हैं जब हम महान् कार्य करते हैं।

सत्संग के अंतर्गत धार्मिक क्रिया से संबंधित विषय, महान् जीवन का वर्णन व मानवता के मूल्यों के विषय में चर्चा की जाती है जिससे तदानुरूप जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। महापुरुषों के जीवन से हम निज में जिन का दर्शन कर तथागत आचरण करते हैं। कौन सी क्रिया, किन कार्य क्षेत्रों से वे आगे बढ़ते थे, उसी के अनुसार जीवन को ढालने की चेष्टा करते है जिससे दुष्क्रिया व दुष्प्रवृत्तियों से बचाव हो जाता है। व्यक्ति स्व-पर का भेद समझने लगता है, समदृष्टि उसमें आने लगती है, समता के आगमन से वीतरागत्व स्वत: आने लगता है। वीतरागत्व ही स्वआत्म रमण की ओर प्रेरित करता है। आत्मरमण करने वाला स्वोन्नति के साथ २ परोत्थान की ओर भी दृष्टि रखता है, और जब व्यक्ति में यह गुण आ जायेंगे तो समाज में आनंद का सागर लहराने लगेगा।

उपर्युक्त विशेषताओं को दृष्टि में रखकर हमें सत्संग की प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिये ताकि हम अपने दुर्लभ मानव जीवन को सफल बना सकें।

शुद्ध संकल्पना

"विचक्षण गुरु चरण रज"
— चन्द्रप्रभा श्री —

आज मानव अनेक संत्रासों से संत्रस्त है। एक विचित्र प्रकार का मानवीय भटकाव सर्वत्र दृष्टिगत हो रहा है। मनुष्य अपने ही द्वारा विचारित तथा निर्मित ग्रंथियों में इतना उलझ गया है कि नित नवीन कुण्ठायें उसमें उत्पन्न हो रही हैं। वह उनसे मुक्ति पाने का जितना तीव्र प्रयास करता है, उतना ही उनमें अधिक उलझता जा रहा है। कुण्ठाओं का घेरा उसके लिए एक तिलस्मी जाल के समान हो गया है। अपने ही अशुद्ध चिन्तन व मान्यताओं के घोर तमसावृत कूप में गिरता जा रहा है। अन्धकार की अज्ञात गहराई का उसे कुछ भी ज्ञान नहीं। मानव की इस व्यवस्था को हम दैव-दुर्विपाक माने अथवा अन्य कुछ यह एक प्रश्न है ? वह बेचारा अपनी आस्थाहीन मनोवृति के दूरीकरण के जितने प्रयास करता है, उनसे अनास्था ही विकसित हो रही, आस्था नहीं।

मानव की इस (आस्थाहीन) अवस्थाशून्य स्थिति का प्रत्यक्ष दर्शन यद्यपि पश्चिमी जगत में अधिक हो रहा है, किन्तु हमारा पूर्व भी दिशा शून्य तथा लक्ष्य शून्य इस जीवन दर्शन की ओर जिस त्वरितता से अग्रसर है, उसमें यदि अवरोध उत्पन्न नहीं किया गया तो निश्चय ही सम्पूर्ण मानव समाज का वह भयावह विकट अन्त होगा, जिसकी कल्पना भी कम भयावह नहीं है।

सर्वनाश की इस भावी विभीषिका से मानव को बचाने के लिये विश्व के प्राय: सभी प्राचीन एवं अर्वाचीन दर्शन, परम्पराएं व विचार प्रणालियें अपने-अपने प्रकार से यत्नवान हैं, किन्तु कौन किसको कितनी क्या सफल काम होगी यह भविष्य के गर्भ में सन्निहित है ?

मनुष्य चिन्तनशील प्राणी है, उसकी अपनी स्वतंत्र प्रज्ञा शक्ति है, प्रत्येक के प्रभाव को वह अपने मौलिक प्रकार से ही स्वीकार करता है। किन्तु इतिहास इस बात का साक्षी है कि या तो स्वयं अथवा उसे कभी परिस्थिति वश किसी सम्प्रदाय विशेष के घेरे में आबद्ध होकर अपनी स्वतंत्र चेता को रोकना पड़ा है। उसकी विकास प्रक्रिया में एक बड़ा भारी अवरोध और पतनोन्मुखी अवस्था आई है। धर्म के नाम पर हुए अनेक रक्त पात उसकी इस स्वतंत्र चिन्तन शान्ति के अवरोध के फल-स्वरूप ही हुए। विपरीत इसके उसकी विकास अवस्था सदा गतिमान रही।

विश्व मानव को सही दिशा प्रदान करने में हमारी अपनी चिन्तन परम्परा, हमारा स्वकीय परम्परित जीवन दर्शन भी सही दिशा निर्देशन की अपूर्व क्षमता रखता है। मेरी मान्यता है कि "भगवान महावीर" द्वारा प्रवर्तित चिन्तन परम्परा मानव मन को, तथा उसकी स्वतंत्र चेतना शक्ति को अधिक प्रभविष्णु करने की सामर्थ्य रखती है। हमारी दार्शनिक मान्यताएं सिद्धान्त और व्यवहार दोनों में समान धर्मा व एक रूपा है। जैन जीवन दर्शन का मूल ही स्वतंत्र चेता पर आधारित है। आत्मा के अस्तित्व और उसकी अस्मिता का जितना बोधन तथा प्रबोधन जैन तीर्थंकरों द्वारा हुआ है, उतना संभवत: अन्य सम्प्रदाय व दर्शन चिन्तन परम्परा में नहीं।

आत्म हिताय जगहितायच के लिए सर्वस्व समर्पण की उदात्त प्रेरणा, व पुनीत प्रयासों से जैन गाथाएं भरी पड़ी हैं। मानव मात्र के लिए ही नहीं अपितु प्राणीमात्र के लिए "आत्म सर्व भूतेषु" की प्रथम प्रभावना जैनागमों के द्वारा ही विश्व को प्रदान की गई है। "वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति" के विरुद्ध "अहिंसा परमो धर्म" की श्रेष्ठता जैन दर्शन ने ही प्रतिपादित की जिसे अन्त में वैदिक धर्मावलम्बियों ने ही नहीं अपितु सभी ने ससम्मान स्वीकार किया। इस पुनीत परम्परा की श्रेष्ठता दिव्य वैचारिक सम्पत्ति के हम उत्तराधिकारी हैं इसके लिये तो हमें गर्वाभिभूत होना ही चाहिए, किन्तु इसके साथ ही यह भी हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी इस स्वतंत्र चिन्तन परम्परा के स्वरूप को अधिकाधिक युग सापेक्ष्य बनाकर इसके प्रसारण व प्रकाशन की भी "शुद्ध संकल्पना" करें, जिससे कि आज का मानव अपनी समस्त कुण्ठाओं व संत्रासों से मुक्ति पा सके।

★

मानवता का दुर्गम पथ

सहजगम्य है राह प्रथम, जिसमें है सुख के आकर्षण,
है जिसमें आंगन फूलों के, है भोग वृतियों का पोषण ।
पग पग पर नव रस प्रस्तुत हैं, जहां जहां प्राप्य हैं नव-वहार,
जो लगती मधुर मनोरम है, जी चाहता उससे करूं प्यार ।
पर यह भी मुझको मालूम है, कि उसके द्वितीय किनारे पर,–
एक अन्धकूप में गिरना है, जहां रहते सिर्फ लुटेरे हैं
तुम्हीं बोलो किस ओर बढ़ूं दो राह सामने मेरे हैं ।। १

राह दूसरी टेढ़ी है, उवड़-खावड़, दुष्पार, कठिन ।
जिसकी कंटकमय धरती में, हो जाता दुष्कर जीवन;
वहां है विपदायें कटु प्रतिपल प्रतिक्षण संकट की आशाएं ।
भौतिक जग के भौतिक सुख प्रति पल-पल जहां निराशाएं,
पर यह भी मुझको मालूम है, उसके उस पार मधुवन है ।
उसमें रहना ऐसा लगता, ज्यों लगे स्वर्ग में डेरे हैं,
तुम्हीं बोलो किस ओर बढ़ूं, दो राह सामने मेरे हैं ।। २

पथ द्वितीय में करूं प्रयाण या राह प्रथम में धरूं कदम,
दायां हाथ दिये ठोढ़ी पर यही सोचता हूँ हरदम ।
कदम बढ़ाते ही पहले में, उस बुरे अन्त की व्यथा सताती,
पथ द्वितीय—वरण का भी, साहस नहीं कर पाती छाती ।
क्या करूं ? अभी तक बैठा हूँ, सोता हूँ उठ जाता हूँ,
पर नहीं अभी निर्णय कर पाया जाना कहां सवेरे हैं ?
तुम्हीं बोलो किस ओर बढ़ूं, दो राह सामने मेरे हैं ।। ३

क्या दुर्गति लूं प्रगति छोड़ूं कर्तव्यहीन बन मुख मोड़ूं ?
क्या क्षणिक सौख्य के वशीभूत, आदर्शों से नाता तोड़ूं ?
नहीं, नहीं यह नहीं होगा, पग मेरे बढ़े उसी पथ पर
जिस पथ में नहीं चीखती हो, मानवता निज विधवापन पर
चाहे उस पग में कांटे हो, खन्दक हो, अग्नि की लपटें हो
चलना है मुझ को वहीं, वहाँ–जहां प्रमुदित सांझ सवेरे हैं
तुम्हीं बोलो किस ओर बढ़ूं ? दो राह सामने मेरे हैं ।। ४

एम० सी० भण्डारी

जैन दर्शन का स्वास्थ्य से संबंध

डॉ. सुश्री एच. के. जैन

महावीर निर्वाण महोत्सव मनाने के साथ-साथ हमें भगवान के मूल सिद्धान्तों का विश्लेषण करते हुये जीवन में सुचारू रूप से उन्हें उतार कर जन समूह, समाज व परिवार के समक्ष एक आदर्श स्वरूप रखना है कि जो जैन धर्म की मूल नींव है वह सम्पूर्णतया वैज्ञानिक है एवं सभी तरह से स्वास्थ्यवर्धक व रोग निवारक है। यदि मनुष्य दैनिक जीवन में मिथ्या आहार, विचार, विहार से परे रहे व कुछ नियमों को जीवन में अपना ले तो वह प्रसन्न व स्वस्थ चित्त रह सकता है। यदि बुनियादी असूलों के प्रतिकूल चलते हैं तो जरूर शारीरिक या मानसिक पीड़ाओं का शिकार होना पड़ता है व अनुकूल चलते हैं तो प्रसन्न चित्त रहते हैं। स्वास्थ्य का स्वरूप अनेक मुखी समझना चाहिये न कि केवल शारीरिक। किसी ने ठीक ही कहा है कि—

कालार्थं कर्मणा योगो हीन मिथ्या ऽति मात्तक: ।
सम्यग्योगच विशेयो रोगारोग्यैक कारणम् ।।

अर्थात्– काल, अर्थ और कर्म-इनका हीन योग, मिथ्या योग और अतियोग रोग का कारण है। काल, अर्थ, और कर्म इनका सम्यग् योग आरोग्य का कारण है।

आम तौर पर लोगों का मत है कि जैन सिधान्तानुसार सूर्योदय पश्चात् अन्न-जल का सेवन व सूर्यास्त पश्चात् अन्न जल का त्याग, सुवह उठते ही प्रभु स्मरण व रात्री में सोते समय प्रभु स्मरण, जहां तक हो सके कम वोलना व ज्यादा सुनना, अति उच्च स्वरों को नहीं सुनना, खाते समय वातें नहीं करना, रोज साबुन का प्रयोग नहीं करना, चौमासे में गरम जल का इस्तेमाल करना इत्यादि अनेक सिद्धान्त जो कि आज के भौतिक युग में पुराने ख्यालात माने जाते हैं परन्तु इन ख्यालों के पीछे "सायन्टिफिक रीजन्स" छुपे हुये हैं व यदि हम उनको सही तौर से समझें तो कोई कठिनाई पैदा नहीं होती।

सूर्योदय पश्चात् अन्न जल का सेवन करने का अर्थ हैं सूर्य की किरणों के कारण वातावरण में जो भी सूक्ष्मातिसुक्ष्म जीव जन्तु हैं, जो कि इन चर्क चक्षुओं से दृष्यमान नहीं हैं व मायक्रोस्कोप से ही शायद दिखाई दे सकते हैं। उनका नाश इन किरणों के ताप से ओटोमेटिक हो जाता है अतः हमारे शरीर में उनका प्रवेश होने से प्राकृतिक रूप से ही फुल स्टॉप लग जाता है।

सूर्योस्त पश्चात् जीव उत्पत्ति अधिक होती है, अंधेरे के कारण व सूर्य की किरणें न मिलने से वातावरण शीतल रहता हैं व सूक्ष्माति सूक्ष्म जीवों का प्रवेश भोजन द्वारा शरीर में प्रवेश कर अनेक रोगों को उत्पन्न करता है व लेट खाने से जल की पर्याप्त मात्रा का सेवन नहीं हो पाता है जिससे अजीर्ण, वदहजमी व गैसेस उत्पन्न होती हैं

जो कि अनेक रोगों का मूल है। योग शास्त्र आयुर्वेद एवं गीता का निर्देश भी यही है कि सूर्यास्त के वाद भोजन राक्षसी भोजन है। वीमार को तो डाक्टर भी रात को भोजन की सलाह नहीं देते। मार्कंड मुनि तो यहां तक कहते हैं कि रात को पानी पीना खून पीने के वरावर है।

सुवह उठते ही प्रभुस्मरण करने से मस्तिष्क पूरे दिन तरो ताजा रहता है व दिन के शुरू में शुभ कार्यों के करने से पूरा दिन शुभ मय व्यतीत होता है, व दिन में जव भी खाली वैठे हो तव स्मरण जारी रखना चाहिये क्योंकि ' Idle man's mind is devil's Shop' अर्थात-खाली दिमाग शैतान का घर है। इसी कारण आज के भौतिक वादियों से हमारे ऋषि मुनि कहीं अधिक शान्ति प्रिय व मनोविकार से परे थे। इसी वजह से उनका शरीर हृष्ट पुष्ट था।

रात्री में सोते समय प्रभुस्मरण से रात्री में स्वप्न से मनुष्य परे रहता है व गाढ निद्रा आती है जिससे वह सुवह प्रफुल्ल मन सहित उठता है व मानसिक शान्ति के प्राप्त होने से उसे निद्रा की टेवलेट्स भी नहीं लेनी पड़ती हैं। जिस प्रकार कि विदेशियों को लेनी पड़ती हैं। हमारे देश में भी यह चेपी-रोग प्रारम्भ हो गया है।

प्रकृति से ही मनुष्य के एक जिव्हा उत्पन्न हुई है वह यह निर्देश करती है कि जरूरत हो उतना ही वोलो, व दो कर्ण इसलिये हैं कि हित की वातें अधिक से अधिक श्रवण करो, दो आँखों से हितकर दृष्यमान वस्तुओं को अधिक से अधिक देखो। अति उच्च स्वरों को सुनने से कर्णविकार उत्पन्न होते हैं। अनजान वस्तु के सेवन से न जाने मृत्यु तक हो सकती है।

खाते समय वातें करने से अन्न कण अन्न नालिका में न जाकर श्वास नालिका में चले जाते हैं जिससे ठसका (घांसी) लगता है व गले में एक प्रकार की वेदना का अनुभव होता है, उसे टालने के लिये मौन सहित खाना अनिवार्य हो जाता है, जिससे कि अन्न की चखणक्रिया सुचारू रूप से मुख में हो सके व आंत पर उसका भार अधिक मात्रा में न पड़े।

चर्म रोगों में सायन्टिफिक हिसाव (वैज्ञानिक दृष्टि) से भी सावुन का उपयोग निषध्य वताया है व उसकी जगह वेसन (चने का आटा) उपयोग में लाना चाहिये। यदि हम शुरू से ही सावुन का उपयोग नहीं करें तो चर्म रोग संभाव्य नहीं है।

चौमासा याने कि वर्षा ऋतु के चार महिने जव कि शारीरिक वल सवसे अधिक क्षीण होता है व प्रकृति में जीव उत्पत्ति सव से अधिक होती है इसी वजह से इनफेक्शन (चेप) होने का भय रहता है क्योंकि इस समय वाह्य किटाणुओं से लड़ने का हमारे रक्त कणों में अल्प सामर्थ्य होता है व प्रतिकार शक्ति क्षीण होने से रोगों का आक्रमण शीघ्र होता है व इनफेक्शन ज्यादा तर जल द्वारा होता है, ऐसे समय में हम पानी को अच्छी तरह उवाल लें तो जीवों का नाश हो जायेगा पश्चात् फिलटर करके उपयोग में लें तो वहुत से रोगों से हम वच सकते हैं। वैसे तो जीवन भर यदि गरम जल का उपयोग करें तो स्वास्थ्य प्रद है यदि वह मुमकीन न हो तो कम से कम चार महिने ही सही।

जैन दर्शन के अनुसार जीवन जीने का तरीका यदि जीवन में उतार लिया जाय तो संसार में चिर स्थायी शांन्ति हो सकती है। यदि हम सव उतनी ही चीज काम में लें जिस के विना चल ही नहीं सकता वाकी शक्ति की पूर्ति आचार, विचार, विहार की सौम्यता से लें जिस से जीवन का श्रेय कर आधार आध्यात्मिकता हो सके एवं जीवन में हर प्राणी के लिये शान्ति और सुख की सम्भवता प्रगति पथ पर हो। पानी, अन्न, वस्त्र, आदि वेकार न खोया जाय। उसका महत्व समझा जाय तो हम आसानी से अकाल आदि भयंकर स्थिति का सामना करने में समर्थ हो सकते हैं। यही नहीं हमारी विषम समस्याओं का हल आसान हो सकेगा। आज के समय में जैन दर्शन के असूलों की सरकार, समाज एवं सभी को ज्यादा जरुरत है। मनन करने से पता चलता है कि महापुरूषों ने कितना आगे का सोचा था।

आज के विचार विहार एवं आहार के विकार को देखते हुये भी महापुरुष खूव सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं, यह मानव-जगत के लिये आशा की सुनहरी किरण है जो गहरी है- तेजोमय है- अमिट है।

जैन-धर्म-भूत और भविष्य

— मानचन्द भंडारी —

जैन धर्म अनादि काल से चल रहा है। इसकी आदि बताना असंभव है। भारत के अजैन विद्वान एवं पश्चिम के इतिहासकार यह स्पष्ट लिख चुके हैं कि जैन धर्म बहुत प्राचीन धर्म है। ऐसी दशा में यह शंका निर्मूल हो जाती है कि जैन धर्म महावीर स्वामी ने चलाया। या जैन धर्म के संस्थापक महावीर हुवे।

जैन सिद्धान्तों के अनुसार महावीर स्वामी चौवीसवें तीर्थ कर हुवे हैं। इसके पहिले २३ तीर्थ कर चुके हैं, जिनका उल्लेख जैन सिद्धान्तों में ही नहीं अजैनों के ग्रन्थों में भी मिलता है। जैन धर्म में प्रथम तीर्थ कर ऋषभदेव (आदि नाथ) भगवान हुवे। क्रमशः अजीतनाथ से लेकर महावीर स्वामी तक २४ तीर्थ कर हुवे। तेवीसवें तीर्थ कर श्री पार्श्वनाथ स्वामी भगवान महावीर से २५० वर्ष पूर्व हुवे। जो विश्व विख्यात है। इसके पहिले बाइसवें तीर्थ कर श्री नेमीनाथजी हुवे। जो श्रीकृष्ण वासुदेव के चचेरे भाई थे। जिनको अरिष्ट नेमी के नाम से भी सम्बोधित किया गया है। जैन सिद्धान्तों के अनुसार इनका कार्य काल भगवान महावीर स्वामी से ८४ हजार वर्ष का है। जैन धर्म में चतुर्विध संघ का बहुमान है और उन्हीं के आदेशानुसार सारा कार्य चलता है। इसमें साधु-साध्वी, श्रावक, श्राविका का समावेश होता है।

जैन धर्म में तीर्थंकरो के समय से प्रवचन की परम्परा चलती है। इस परम्परा के अनुसार आज भी साधु साध्वियों का प्रवचन नित्य-प्रति होता है। पहिले ऐसे प्रवचन राज सभाओं में या सरे आम होते थे। जिसका प्रभाव आम जनता पर पड़ता। फलस्वरूप हजारों नहीं लाखों अजैन जैन धर्म के अनुयायी बने। इसका उदाहरण जैन ग्रन्थों में मिलता है। जैसे श्री रत्न प्रभसूरि ने लाखों जैन बनाकर ओसवंश की स्थापना की। उसके पश्चात् यह कार्य १५ वीं शताब्दी तक चलता रहा। दादासाहिब श्री जिनदत्तसूरि एक महा प्रभाविद् आचार्य हुवे जिन्होंने १ लाख ३० हजार व श्री जिन कुशलसूरिजी ने पचास हजार अजैनों को जैन बनाकर एक आदर्श उपस्थित किया। यह ग्यारहवीं व तेरहवीं शताब्दी काल में हुवे।

आज के युग की मांग है कि साधु साध्वियों का प्रवचन उपाश्रय व धर्म शाला की चार दीवारी में न होकर सरे आम हो ताकि जनता पर जैन धर्म के सिद्धान्तों का प्रभाव पड़े। अन्य धर्म के साधु-साध्वियों से आज भी जैन साधुसाध्वियों का मान सम्मान अधिक है। इसका कारण उनका त्याग, तप एवं सयम पालन है।

जैन धर्म के नियम इतने सरल व साधारण हैं कि जो प्रत्येक व्यक्ति के समक्ष में आ सकते हैं। केवल इनके प्रचार व प्रसार की आवश्यकता है।

जैन धर्म का अहिंसावाद इतना उच्च कोटि का है जिसका आदर अच्छे लिखे पढे समझदार सज्जन दिल जान से करते हैं। महात्मा गांधीजी ने श्रीमद् राजचन्द्र जी की सत्संगत से इसको पूर्ण तया अपनाया और पूर्ण इच्छा एवं विश्वास के साथ इस शस्त्र का प्रयोग भारत को आजाद कराने में किया। और उनको सफलता मिली। इसी अहिंसा के फलस्वरूप विश्व की सारी उलझनें समाप्त हो सकती हैं यदि इसका सही रूप में पालन किया जाय।

अहिंसा व अन्य जैन धर्म के नियमों का उपदेश भावी पीढी को दिया जाय तो काफी सुधार हो सकता है। अभी १५-२० वर्ष से श्री संस्कार अध्ययन सत्र (शिविर) लगाकर छात्र छात्राओं को जैन धर्म के सिद्धान्तों की जानकारी कराई जाती है। यह जैन धर्म के प्रचार का अच्छा साधन है। दिनों दिन इसकी प्रगति हो ऐसा प्रयत्न करना आवश्यक है। गत वर्ष बाड़मेर में एक शिविर लगा था उसका काफी प्रभाव पड़ा और सफल रहा उसके लिये प्रसन्नता है।

भविष्य में ऐसे शिविर प्राचीन तीर्थों में लगे तो अति उत्तम रहेगा। जहाँ शुद्ध वायु, एकान्त वास व शान्त वातावरण पवित्र भूमि सोने में सुगन्धसा होगा। राजस्थान में श्री नाकोड़ा जी, कापरडाजी, राणकपुरा, श्री माउन्ट आबू (हीलथड़ा), जैसलमेर, ओसियाँ, गांगाणी आदि कई तीर्थ हैं जहाँ सब तरह की सुविधा है। आशा है हमारे त्यागी गुरू इस ओर कदम रखेगे।

बाड़मेर से प्रकाशित हो रही स्मारिका "वन्दना" में प्रकाशनार्थ यह छोटा सा लेख मेरे मित्र श्री भूरचन्द जी जैन की प्रेरणा से भेज रहा हूँ। जो पाठकों को पसन्द आवेगा।

धर्म बिना विद्या अधूरी है

धनराज चोपड़ा
" कुशल "

गुणींजनों से गुणग्राही वन, लेना शिक्षा पूरी है
लेकिन धर्म नहीं जीवन में, वह विद्या अधूरी है

आज हमें अपने जीवन में उस विद्या को पाना है,
धर्ममय जीवन वन जाए, उस पथ को अपनाना है,

साक्षरता ही है न विद्या, ज्ञान विवेक प्रधान है ।
विनय सत्य और अनुशासन का, जीवन में स्थान हैं ।।
नैतिकता की इस भूमि पर, करना नव निर्माण— है ।
ब्रह्मचर्य और संयम से ही, वढ़ती छात्रों शान है ।
राम–भरत और कृष्ण सुदामा, वनकर आज दिखाना है ।।१।।

पढ़ना-लिखना वोता नफरत, तो अनपढ़ रह जाऊंगा ।
थोड़ी सी बुद्धि से ही मैं, अपना काम चलाऊंगा ।
कमजोरों को नकल कराते, ज्यौं-त्यौं पास कराते हैं ।
रिश्वत खाते निज घर भरने, स्व का मान वढ़ाते हैं ।
ऐसे गुरू का साथ किया तो, फिर पीछे पछताना–है ।।२।।

श्वेत वस्त्र सम उज्जवल जीवन, छात्रों का कहलाता है ।
जैसा रंग चढ़ाना चाहें, वैसा ही चढ़ जाता– है ।
आई है अव जिम्मेदारी आज तुम्हारे कंधों पर ।
इसे निभाना है अव तुमको, सदाचार को अपनाकर ।
विना काम की वातों,में ही, अव न समय को गंवाना है ।।३।।

भावना दिन रात मेरी, सव सुखी संसार हो ।
सत्य संयम शील का, व्यवहार घर–घर वार हो ।
धर्म का प्रचार हो, और देश का उद्धार– हो ।
और यह उजड़ा हुआ, भारत चमन गुलजार हो ।
धर्ममय जीवन को वनाकर, समता श्रोत वहाना है ।।४।।

त्याग की सफलता

卐

—महेन्द्रश्रीजी (त्रिस्तुति वाले)

पूर्वकाल में राजा श्रेणिक नामक एक विख्यात निपुण सुयोग्य एवं प्रजा का हितकारी और गुण पूजक राजा था। अपनी राजधानी राजगृह में राज्य करते हुए कितना ही समय व्यतीत होने पर उसने अपने अमात्य से एक विचार रखा-क्योंकि संसार में प्रत्येक व्यक्ति सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है और परलोक में भी सुख पाने की इच्छा करता है परन्तु सुख प्राप्ति के सिद्धान्तों पर चले तो मिल सकता है। किन्तु अपने वैभव विलासों में और इनकी चाह की पिपासा में अपने अमूल्य जीवन के एक-एक कण को क्षय करता हुआ जाता है। कहिये ? मंत्रीजी ? अपने राज्य में कितने करोड़पति सेठ इस समय में मौजूद हैं ? ऐसा प्रश्नभरा जवाव सुनकर अमात्य वोला कि महाराजजी अपने राज्य में ३५ से भी अधिक करोड़पति इस समय मौजूद हैं। पुनः राजा ने कहा अमात्यजी अपने राज्य में करोड़वाला कोई सेठ है या नहीं उनकी जानकारी कैसे की जाय अमात्य ने उत्तर दिया इसकी जानकारी के लिये स्वयं मेरे मस्तिष्क में अनेकों विचारों का झक झोला हो रहा है। क्या करना-आप ऐसा करो की छप्पन करोड़ की जानकारी के लिये नगरी के चारों तरफ ढिंढोरा पिटवा दें कि इस राज्य में ५६ करोड़ वाले कोई भी सुयोग्य सेठ हो तो महाराजधिराज श्री श्रेणिक राजा अपने दरवार में आमंत्रित करते है।

उस समय श्रीमान् श्रेष्टि श्री अरहन्तदास अपनी पेढी पर वैठे हुवे थे और ढिढोरा सुनकर अपने मन में विचार करते हुवे स्वकिय ऊपर एक दृष्टि डाली। जिनके सुयोग्य चार पुत्र, पुत्र वधू एवं धर्म पत्नि आदि सुख वैभव में सानंद जीवन व्यतीत हो रहा था। श्रेष्ठि का जीवन सदाचारी, सुसंस्कार, सुदृढ एवं जीवन का सुन्दर मतक चारों तरफ यशोगाथा जैसे विकसित हो रहा था क्योंकि शिक्षा जीवन की एक संजीवन नींव है। जीवन में शिक्षा रूपी नींव मजवूत हो तो कभी भी देश, समाज, राष्ट्र, जाति एवं धर्म उज्जवल पताका फहरा सकता है। ज्ञानमय जीवन लक्ष्मी का भोजन भी वन सकता है और उनका त्याग भी कर सकता है।

श्रेष्ठि अपना अमूल्य समय जानकर समाज सेवी दृढ धर्मी एवं लक्ष्मी का सदोपयोग कर रहे थे। आज विचारों की तन्द्रिला अधिक होने से अपना लक्ष्य अपने प्रिय सुपुत्रों एवं मुनिम के सामने रखा कि सर्वत्र जगह से लक्ष्मी की गणना कीजिए। मुझे आज ५६ करोड़ का आमंत्रित शब्द गूंज रहा है ?

श्रेष्ठिवर की वात सव ने स्वीकारी और कहा हम कुछ ही समय में आपकी जिज्ञासा की पूर्ति कर सकेगें। सव जगह हवा जैसी खवर पहुँच गई। सभी पेढी वालों ने अपना समय दिन रात करके सर्वांश मिलाना चालू किया, शीघ्रता शीघ्र ही सभी जगह से मिलकर टोटल सेठजी के पास आया। ५२ क्रोड़ की संपति सव स्थान की एकत्रित की गई। अव श्रेष्ठि ने विचार वदला सभी जगह से अपना खर्चा कम करने का आर्डर दे दिया साथ ही साथ ज्यों ज्यों श्रेष्ठि कर्म करें त्यों त्यों लक्ष्मी दूर जाने लगी। वर्ष में ५४ आता तो किसी वर्ष में ५० पर आ जाता। ज्यों ज्यों समय आने लगा त्यों त्यों सेठजी की चिन्ता वढने लगी।

समय जा रहा है, चिंता वढ रही है, अपनी धवल कीर्ति पर कालिमा लग रही है नगर में जितनी प्रसिद्धि थी उस पर सेठजी ने सव को धोना प्रारम्भ कर दिया। अव चिता और चिंता दोनों सामने हैं। चिंता शरीर को अपनी ज्वाला से भस्म करने लगी। इधर सेठजी लक्ष्मी

जोड़ने को तन तोड़ परिश्रम करने लगे उधर चिंता ने अपनी तेज ज्वाला से उनकी कान्ति तेज बल कीर्ति दहन कर उन्हें एक विश्रान्ति स्थान का अधिकारी बनाने लगी। लालसा अत्यन्त बुरी वस्तु हैं। आशा की सीमा नहीं होती है वह असीम है आकाश से भी बढ जाती हैं। जगत की सभी वस्तु जैसे वनस्पति वेलें काटने से छिन्न भिन्न होकर गिर जाती हैं वैसे ही विचार की इमारत भी विना काटे गिर जाती है। अब श्रेष्ठि का स्वास्थ्य दिन प्रति दिन बिगड़ता जा रहा है।

इधर लड़कों ने विचार किया पिताजी प्रति दिन सूख रहे हैं। अब इनका हित बने जैसा मार्ग अपनाने की जरूरत है। सब मिलकर अनेक प्रकार की युक्तियों द्वारा समझाने की कोशिश की किन्तु मोहरूपी महाग्रह से पीड़ित व्यक्ति क्या नहीं सोच सकता है। इसका मार्ग इतना विचित्र है कि सुख को दुःख और दुःख को सुख मान लिया जाता है। मोहरूपी महाग्रह की महिमा का वर्णन लेखन से नहीं किया जा सकता है। पुत्र कहता है पिताजी आप अब लक्ष्मी का मोह छोड़कर आत्म कल्याण के मार्ग अपनावें क्योंकि जगत में जो कल्याण करने वाले मित्र होते हैं वह उनको मित्र नहीं मानता है। वास्तव में सेठजी ने सभी की बातों को ठुकरा दिया। एक ही धुन एक ही निश्चय रहा।

अब बडे लड़के ने विचार किया—विना गुरू के पिताजी का मोहरूपी पड़ल दूर नहीं हो सकेगा। अब चलो गुरूदेव की खोज में। सच्चे गुरू मिले तब पिताजी का कल्याण हो जाय। भाग्यानुसार चिंतीत वस्तु प्राप्त हो सकती है। जिसकी प्रतीक्षामें था वह वस्तु खोज करने से प्राप्त हो सकती है। पूण्य का प्रबल उदय आता है तब विना परिश्रम रत्न मिल जाता है। आये पधारे! नगरी का प्रबल पूण्य रूपी संसार में डूबती नौका का खेवैया तरन तारण प्रबल प्रतापी अमृत की बरसात करने वाले, जिसकी राह में दिन रात विचार में था, वह गुरूदेव पधार गये। संसार की पीड़ाओं को दूर करने वाले योगी राज, ऐसे ज्योति पुंज की जय हो! अब हमको अपने संवेग में आगे बढने में मदद करेंगें।

नगर में, घर में, मंदिर–मंदिर में जय जय का कलरव करते हुवे अच्छे ठाठ से बैंड बाजा बजते हुए गुरु देव का नगर में पदार्पण हुआ। श्री जैन संघ शासन के जय पताका लहराते हुए पूज्य आचार्य भगवंत धर्म शाला में विराजमान हुए। अब व्याख्यान की वर्षा होने लगी। अनेक भवि आत्माका अज्ञान अंधकार का पड़ल दूर कर गुरू देव के चरण में अपना सिर झुकाने लगे। समय देखा। समय का परीक्षक सुपुत्र ने आकर गुरुदेव के चरण में अपना–पिता का कल्याण बने ऐसी विनती की। सब बात को सुनकर पर उपकारी चले। एक क्षण का विलंब न हो चले। श्रेष्ठी का कल्याण करने को पुत्र ने कहा "पिताजी उठो परम पावन गुरुदेव पधारे दर्शन करो" बात सुनते ही सेठजी को क्रोध आया। क्रोध से सेठजी अंधे हो गये। विवेक भूल गये। कहने लगे मैं नहीं उठूंगा। मेरी हालत खराब है। घर में जाकर आदर सत्कार तुम्हीं करो।साधुओं को काम क्या है? पैसे वालों के पीछे लगे रहते हैं। आज उपध्यान कराना, पुस्तक छपानी, सिद्ध चक्र पुजन करवानी। नहीं, नहीं, नहीं उठूंगा। एक रुपया भी धर्म में नहीं खर्च करूंगा। मुझे छप्पन करोड़ ही चाहिये। बस चले जावो। दूर रहो यहां मत आना। श्रेष्ठी का पारा देखकर आवेश भर वाणी सुनकर चंद्र से भी अधिक शीतल मन को हरण करने वाली वाणी से गुरूदेव बोले "श्रेष्ठिजी धर्म लाभ! धर्म लाभ!

एक वचन में ही छप्पन करोड़ आते हैं क्यों चिंता करते हो?" छप्पन करोड़ की प्राप्ति सुनकर सेठजी हर्ष पूर्वक उठकर वंदन करके गुरू देव की चरण में झुक गये। चरज के प्रताप चरण के सामने गद्गद् बन गये। अब क्या? सब कुछ प्राप्त हो गया सेठजी ने कहा : पाट लावो गुरू देव को विठाओ। पाट लाये गुरू देव बैठ गये। आनंदमय समय का सद् उपयोग होने लगा। गुरुदेव ने कहा एक सूई लावो पुत्र ने लाकर गुरुदेव के हाथ में दे दी। गुरुदेव ने लेकर सेठजी के हाथ में दी। इस सुई को छप्पन करोड़ की तिजोरी में रख देना क्यों कि तेरी और मेरी दोनों की वृद्धावस्था है। अपन दोनों ने बहुत ही शासन सेवा दृढ़ धर्म किया शास्त्र नुसार दोनों की सदगति होगी वहाँ पर

अपने दोनों को साथ ही चलना होगा तब सद्गति का मार्ग बहुत ही संकीर्ण एवं कंटकदार है वहां कंटक लगेगा मैं आगे तुम पीछे चलोगे। तब तुम मेरे पांव में लगे कांटे को इस सुई द्वारा निकालते चलना इससे अपने को रास्ते में बहुत ही सुविधा हो सकेगी। गुरुदेव की अगम्य बात को सुनकर श्रेष्ठी हंसने लगे। कहो हंसने का क्या कारण? नहीं! नहीं गुरुदेव छप्पन करोड़ की तिजोरी साथ में नहीं आवेगा। तब क्या करना चाहिये? पुनः गुरुदेव ने कहा इस सूई को लेकर अपने अच्छे पहनने के कपड़े में रख दो। नहीं नहीं पूज्यवर कपड़ा भी जलकर नष्ट हो जावेगा। पुनः गुरुदेव बोले अच्छा सेठजी तुम ऐसा करो अपने हाथ में ही रख लेना। उनसे अधिक अच्छा रहेगा। श्रेष्ठीवर ऐसी बात पर फिर विचार करने लगा। विचार मुग्ध बन गये। ऐसे बने की अंदर की लालसा का पड़ल दूर हो गया गद्गद् स्वर से रो पड़े। उठकर गुरुदेव के चरण में झुक पड़े। अरमान दूर चला गया दिव्य चक्षु खुल गये सदा के लिये सब त्याग कर गुरुदेव के साथ चल दिया। आनंद ही आनंद हो गया। धन्य है ऐसी जीवात्माओं को। न रहा मोह न रहा राग। भगवान महावीर के पंथ पर चल पड़े। अब श्रेष्ठि न रहे। अब एक त्यागी बनकर जय जय करते गये। दूर जंगल में चले गये सब परिवार की ममता छोड़ गये।

योगीराज हुवे अपूर्व जगमें त्यागी विरागी विभो।
श्रीयत् शासन में हुए दिग् मणि सन्मार्ग दर्शी प्रभो।
राजेंद्रामिध कोष के विपुल धी कर्त्ता गणाधीश को।
मेरी हो शतवार वंदन सदा राजेंद्र सूरीश को॥

आदर्श क्षमा

- महावीर को संगमदेव ने घोर कष्ट व यातनाएं दी, पर जब वह जाने लगा तो प्रभु को अपनी पीड़ा का एहसास नहीं हुआ, किन्तु उस दुर्बुद्धि प्राणी के उद्धार की चिंता हुई। उसके अंधकारमय भविष्य की चिंता से प्रभु की पलकें भींग गई।
- चण्डकौशिक नाग ने भयंकर डंक मार कर महावीर को काटा, किन्तु धीर गम्भीर प्रभु ने उसे प्रतिवोध दिया- "नागराज ! क्रोध न करो, जागो ! अपना भविष्य सुधारो।"
- ईसा को शूली पर चढाया गया तो उन्होंने अपने शत्रुओं के लिये प्रार्थना की—'प्रभो ! ये अज्ञानवश ऐसा कर रहे हैं, इन्हे प्रकाश दो।'
- महर्षि दयानन्द को एक व्यक्ति ने विष दिया था। जब उसे पकड़ कर उनके सामने लाया गया तो उन्होंने कहा—'इसे छोड़ दो, मैं संसार को कैद कराने नहीं, वरन् मुक्त कराने आया हूं'
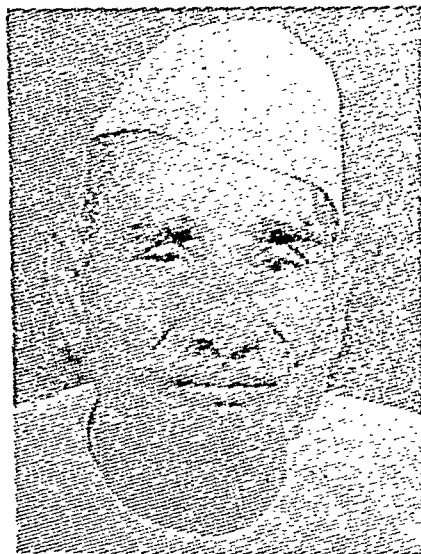
नवांगी वृत्तिकार

श्री अभयदेव सूरिजी

—श्री कालूराम बाफना

जन्म दिवस—वि० संवत १०७२

जन्म स्थान—मेवाड़ देश का वडसल्ल ग्राम

जन्म नाम — सगा राजपूत

दीक्षा गुरू —श्री जिनेश्वर सूरिजी महाराज

आचार्य पद—वि० संवत १०८८ में

रोग शान्ति - वि० संवत ११११

आचार्य श्री द्वारा किये गये महान् कार्य—

१. वि० सं० ११११ में श्री स्थमंरा पार्श्वनाथ प्रभू की मूर्ति प्रात करना।

२. वि० सं० ११२० में मूर्ति की प्रतिष्ठा करना।

३. वि० सं० ११२० में ९ अंगों पर टीकाएं लिखना प्रारंभ करना।

४. वि० सं० ११२८ में ९ अंगों पर टीकाओं की समाप्ति।

५. वि० संवत ११२४ में पंच निग्रंथी प्रकरक व पंचाशक वृत्ति की रचना।

६. वि० सं० ११११ में जयतिहुअरण स्तोत्र की रचना।

स्वर्गवास — वि. सं. ११३३ मतान्तरे वि. सं. ११३९ में कपड़वन्ध में हुआ।

अर्ध रात्रि का समय था। मारणपुर नाम के ग्राम के नजदीक वाड़ी के पास एक वट वृक्ष के नीचे एक संत अपने संवारे पर विश्राम कर रहे है। अभी तक उनको निद्रा नहीं आ रही थी कुष्ट रोग से उनका देह एकदम जीर्ण हो गया था। महारोग के प्रभाव से महान कष्ट हो रहा था फिर भी संत पुरुष संत ही थे। अपने आत्म लक्ष को ध्यान में रखकर महान वेदना को समता से सहन कर रहे थे। इतने में एकाएक शासनदेवी का पदापर्ण हुआ और शासन देवी ने प्रश्न किया—आचार्य श्री जाग रहे हो या ऊंघ रहे हो।

आचार्य श्री देवी रोगग्रस्त को नींद कहां आ सकती है। शासन देवी ने एक सूत का कोयड़ा श्री सूरिश्रजी को देकर कहने लगी कि आप ये कोयड़ा लो और इसको उकेलो।

आचार्य श्री—ये मेरी शक्ति के बाहर की बात है। मैं तो अब इस नश्वर शरीर को छोड़ना चाहता हूँ।

शासन देवी — रोग के प्रभाव से आप इतने पस्त हो गये है परन्तु अभी आपके हाथों शासन प्रभावना के महान कार्य होने वाले हैं। आज शासन में जितने चरित्र सम्पन्न महात्मा है उन सब में आपका स्थान सबसे आगे हैं। आपके सरीखा ज्ञानी दीर्घदर्शी दूसरा इस समय कोई आचार्य नहीं है और इसी बात की याद दिलाने मैं आयी हूँ कि ये कोयड़ा को आप ही ऊकेल सकते हो आप पहले इस महा रोग से अपने शरीर को मुक्त कर लो और उसके लिये आपको पुरुपादानीय प्रगट प्रभावी श्री स्थंभरणपार्श्व नाथ स्वामी की चमत्कारिक प्रतिमा का योग मिलने वाला है।

आचार्य श्री—देवी तो फिर इसकी प्राप्ति का उपाय बताओ। मैं कोई रोग से परेशान नहीं था परन्तु इस रोग के कारण से शिष्य गण को परिश्रम उठाना पड़े और उपासक वर्ग के लिये में केवल भार भूत बनकर रहूँ ऐसा जीवन जीने से अनशन क्या बुरा है यह विचार कर रहा था।

शासन देवी—तो सुनो। सेढी नदी के तटपर पलास वृक्ष के नीचे चिकनी भूमि में नागार्जुन योगी ने अपनी

विद्यासिद्ध करने के बाद श्री स्थंमरण पार्श्वनाथ प्रभू की मूर्ति वहाँ पर भंडार दी है। इन महा चमत्कारिक प्रभू के स्नान जल से आपकाकोढ रोग समूल नष्ट होगा। और देह दृष्टि कंचन वर्णी बनेगी। कोयड़ा उकेलने का रहस्य बाद में आपको मालूम होगा। ये सब दृश्य संथारे पर सोये सोये ही आचार्य श्री ने देखा। जैसे ही आचार्य श्री उठे उनको वहां कुछ दिखाई नहीं दिया। शासनदेवी अन्तर्धान हो गयी थी। अब आप ये जानने को उत्सुक होगे कि ये आचार्य श्री कोन थे और ऐसी अवस्था में रोग-ग्रस्त कैसे पड़े थे।

मेवाड़ देव के वरणशल ग्राम में राजपूत घराने में एक वालक का जन्म विक्रम संवत १०७२ में हुआ। उसका नाम सगा रखा गया। उस समय क्षत्रीय संतान को राज्य की तरफ से पेटिया मिलता था जिससे कि उनका भरण पोपरण उससे ही होता था। उनको कोई व्यवसाय वगैरा करने की आवश्यकता नहीं रहती थी। सगा जब वाल्यकाल में आये तब पटावाजी खेलना, अश्व की सवारी करना तथा क्षत्रियोचित कार्यक्रम में ही उनका जीवन व्यतीत हो रहा था। इसी समय उनके ग्राम में कौटिक गच्छ के श्री जिनेश्वर सूरिजी महाराज का आगमन हुआ। सगा भी उनकी वाणी सुनने के लिये पहुंचा। उनके मधुर उपदेश को सुनते ही सगा की रूचि संसार से विरक्त हो गयी और उनकी त्याग मय जीवन विताने की इच्छा हुई। आचार्य श्री के पास पहुँचकर भागवती दीक्षा ग्रहण कर ली और एक समय का सगा अरिहंत का उपासक बनकर सर्वविरति साधु बन गया दीक्षा के समय उनका नाम अभय मुनि रखा गया। 'कम्मेसूरा ते धम्मेसूरा' वाली कहावत के अनुसार एक समय के सगा ने चरित्र ग्रहण करने के बाद अपने काया की प्रवृत्ति व मन की आकांक्षाओं को दमन करने के लिये महान तप प्रारंभ कर दिया। ६ विषय का त्याग किया और इस तरह नीरस आहार के सेवन से मुनि श्री का शरीर शुष्क होने लगा परन्तु अभय मुनि किसी प्रकार घबराये नहीं और तपस्या के नियम पालन में अडिग रहते हुए अपना ज्ञान ध्यान का कार्यक्रम भी बराबर चालू रखा और इसी के परिणामस्वरूप उनको बहुत ही शीघ्र विक्रम संवत् १०८८ में आचार्य पद प्राप्त होता हुआ। स्ववन से आगे बढ़े हुए अभय देव सूरि उस समय के आचार्यों में अपना प्रमुख स्थान रखते थे। देखते ही देखते उनकी शारीरिक स्थिति निर्बल होने लगी और उनको कोढ़ रोग व्याप्त हो गया। उस महारोग के प्रभाव से पीड़ित आचार्य श्री इसी भाग्पुर में शैय्या पर पड़े थे।

शासन देवी की वार्तालाप के बाद श्री अभयदेव सूरि में कोई नई चैतन्य प्रगट हुई और निराशा दूर होती हुई। श्वेढी नदी की ओर प्रयाण प्रारंभ हुआ। आचार्य श्री शिष्यगण तथा श्रावक समुदाय के साथ श्वेढी के नदी तट पर पहुँचे और आचार्य श्री ने 'जय जयति हु अरण' स्तोत्र की रचना प्रारंभ की। "फंगिफण फार फुरन्त रयणकर" पद उच्चारण करते ही वृक्ष के नीचे की जमीन फट पड़ी और स्थंमरण पार्श्वनाथ प्रभू की श्यामवर्ण वाली मनोहर प्रतिमा प्रगट हुई। संघ सहित आचार्य महाराज ने वन्दना की और प्रभूजी का स्नात्र महोत्सव प्रारंभ हुआ। स्नात्र जल शरीर पर छिटकते ही कोढ रोग नष्ट हो गया और देह कंचन समान होती हुई। वहां पर स्थंमरणपुर नाम नगर बस गया और नवीन जिनप्रसाद में सूरिजी के वरद हस्त द्वारा उस चमत्कारिक मूर्ति की प्रतिष्ठा की गई आज ये प्रतिमा जी खंभात में विराजमान है।

आचार्य श्री तो पूर्ण उल्लास और अनुपम चैतन्यता को प्राप्त करके ग्रामानुग्राम विचर करते हुए गुजरात के अरणहिल पर पाटन पधारे। श्री पंचासरा पार्श्वनाथ प्रभू के दर्शन करके वहां स्थित प्राचीन ज्ञान भंडार का अवलोकन भी करते हुए। उस समय क्या देखते हैं कि वारह अंग में से दृष्टिवाद नाम का एक अंग तो विच्छेद हो गया है बाकी ११ अंग मूलरूप में विद्यमान हैं। ११ अंग में से पहले व दूसरे अंग पर टीकायें लिखी हुई मिली व बाकी ९ अंगों पर टीकायें नहीं मिली। इस पर से आचार्य श्री को देवी के दिये हुए सूत को कोयड़े की बात याद हो आयी कि ९ अंगों पर टीका की रचना करना है क्योंकि उस कोयड़े में सूत की ९ लटी ही थी। परन्तु गणधर रचित अंगों पर सही टीकाओं की रचना बहुत ही दुष्कर कार्य था। श्री शासनदेवी के संकेत को

समझकर श्री पंचाशरा पार्श्वनाथ प्रभू के समक्ष आचार्य श्री ने टीकायें रचने की प्रतिज्ञा ग्रहण की।

श्री अभयदेव सूरिजी ने प्रतिज्ञा लेकर ६ माह तक आयंबिल तप किया और फिर बड़े बड़े विद्वानों को आश्चर्य मुग्ध कर दे ऐसी टीकाओं की रचना प्रारंभ की। श्री ठाडांग सूत्र से ११ वें श्री विपाक सूत्र तक की टीकाएं आचार्य श्री द्वारा रची हुई आज भी उपलब्ध होती है। उन टीकाओं में आचार्य श्री की विद्वत्ता समभाव वृत्ति और भयभीरुता का स्पष्ट दर्शन होता है। आचार्य श्री की टीकाएं गच्छ का व्यामोह तथा स्वयमत्व के आग्रह से बिलकुल अलग है। जहां पर शंका का सवाल उठा है वहां उन्होंने अपने मन से कोई निर्णय नहीं लिखा बल्कि लिखा हैं कि "तत्वं तू केवलिनो वदंति।" इस प्रकार आचार्य श्री के बाद में हुए विद्वानों ने आचार्य श्री द्वारा रचित टीकाओं की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है तथा उन्हीं का आधार लेकर रचनाएं भी की है।

आचार्य श्री के स्वर्गवास के संबंध में थोड़ा फेर-फार है मुनि श्री कान्ति सागर जी महाराज के अनुसार श्री अभयदेवजी सूरि का जन्म वि० सं० १०७२ में हुआ था। १६ वर्ष की उम्र में विक्रम सं० १०८८ में उनको आचार्य पद प्रदान किया गया। वि० सं० १११६ में उनका कुष्ठ रोग शान्त होना चाहिए क्योंकि वि० सं० ११२० में स्थंमणपुर में चमत्कारिक श्री पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति की प्रतिष्ठा आचार्य श्री के वरदहस्त से हुई और वि० सं० ११२० का चातुरमास अणहिलपुर पाटत में ही किया और ९ अंगों पर टीकाएं रचने का कार्य भी उसी समय से प्रारंभ किया गया।

आचार्य श्री का स्वर्गवास वी० सं० ११३३ व वि० सं० ११३९ के लगभग कपड़वन्ज गुजरात में हुआ था जहां पर आज भी आचार्य श्री की पादुकाएं विराजमान हैं। इन सबके अतिरिक्त पंच निग्रंथी प्रकरण, पंचाशक वृत्ति व जयतिहुअण स्तोत्र की रचना भी मिली हैं। यदि आचार्य श्री द्वारा इन ९ अंगों पर टीकाएं नहीं रची जाती तो आज मूल ९ अंगों के सही रहस्यों का समझना बहुत ही मुश्किल होता इसलिए जैन जगत पर आचार्य श्री का महान् उपकार है। ऐसे महान् प्रभाविक आचार्य श्री को हमारा कोटि कोटि वन्दन हो।

21075
Phone 21776
23216 P. Bx.

With best Compliments from

JODHPUR WOOLLEN MILLS Ltd.

Manu facturers of—

Woollen Yarns

- Carpets
- Woollen Fabrics
- Blankets
- Guar-Gum Guar Split

Regd. Office and Mills.

5 and 6 heavy Industrial area.
JODHPUR (Rajasthan)

राजस्थान का भारत विख्यात जैन तीर्थ- **माउन्ट आबू**
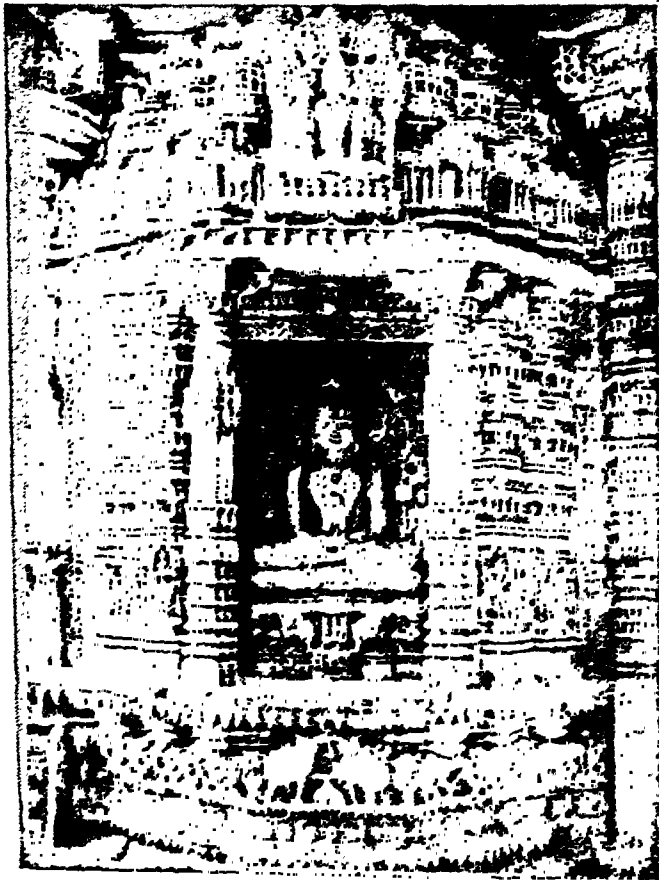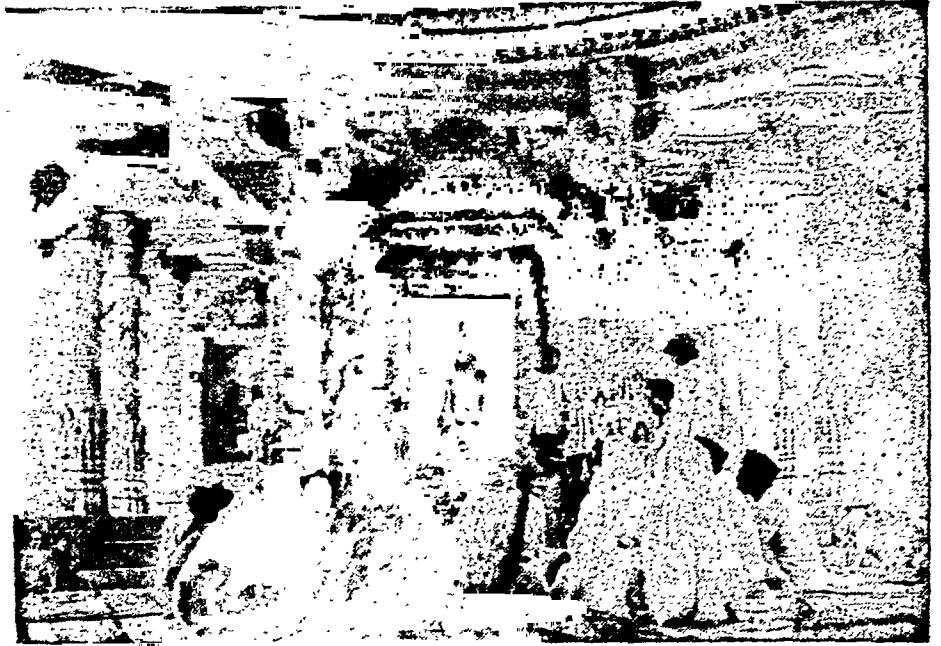
माउन्ट आबू जैन मन्दिर की सुन्दर
शिल्पकला के दृश्य
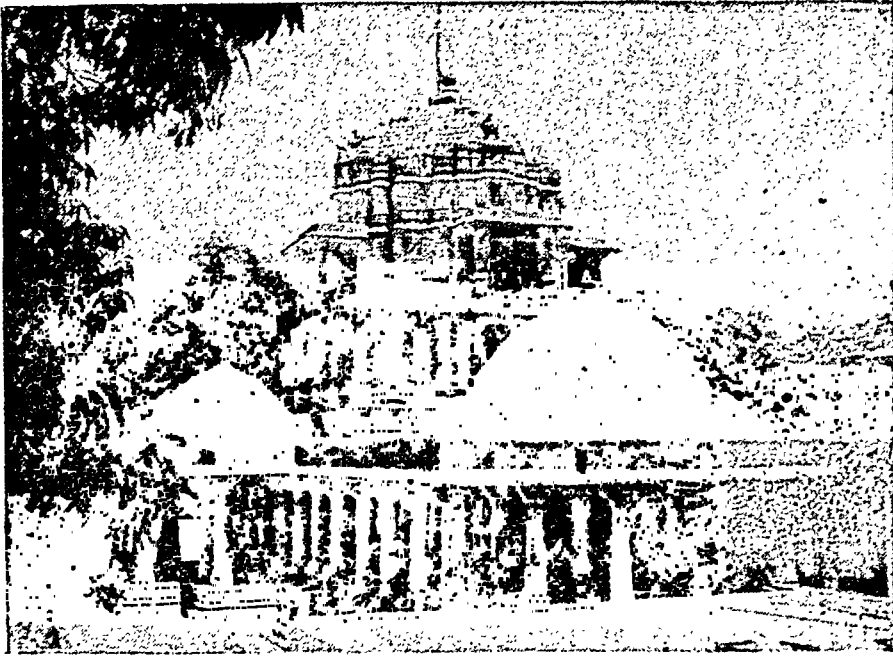
देलवाड़ा जैन मन्दिर
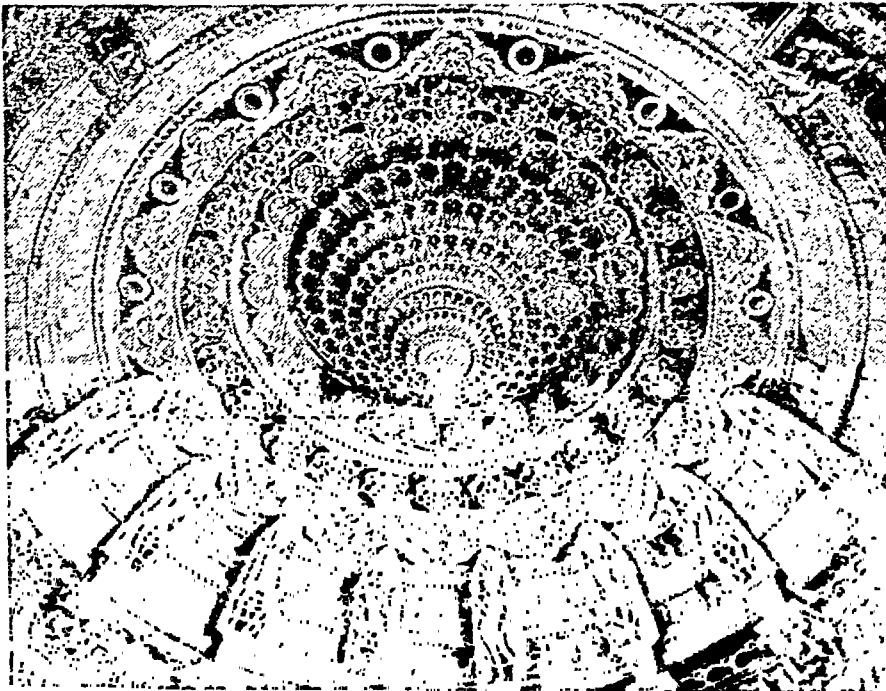
देलवाड़ा जैन मन्दिर की छत का दृश्य

(वन्दना

अचलगढ जैन मन्दिर का दृश्य

आबू जैन मन्दिरों की सुन्दर मूर्तिकला।

आवू जैन मन्दिर में श्री सरस्वती

आवू की विख्यात नक्की झील

(वन्दना

ज्ञानोपार्जन में शिक्षण शिविर
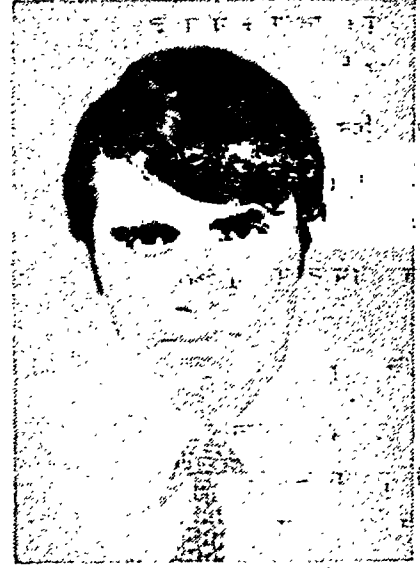
श्री बंशीधर तातेड़

प्राचीन काल में भारत आध्यात्मिक क्षेत्र में विश्व का गुरु रहा है। यहां से विदेशों में कई महान् विभूतियाँ आत्मा पर आये अन्ध रूपी आवरण को हटाते जाते रहे हैं। अपनी महान् योग सिद्धि से अनेक आत्माओं का दिग्दर्शन भी करते रहे है। इसका प्रमाण वेदों तथा पुराणों में उल्लखित है। आत्मा ही परमात्मा का अंश रूप है। जिस पर पूर्व जन्म के कर्मों के संस्कार तथा माता–पिता के संस्कारों का आवरण ढक्क जाता है और स्वत: यह प्रकाश कुछ समय के बाद समाप्त सा हो जाता है। जिस प्रकार एक आग का अंगारा जब तक जलता रहता है तब तक उस पर खाक नहीं जमती और वह प्रकाशवान रहता है परन्तु जब यह जलना बन्द हो जाता है तब उस पर खाक जमने लगती है और प्रकाश भी लुप्त हो जाता है। इसी दौरान यदि उस अंगारे को हवा दी जाय तो वह पुन: प्रज्जवलित किया जा सकता हैं। यही बात हर मानव के आत्मा से सम्बन्वित रहती है।

आत्मा पर जमे अन्धकार रूपी आवरण को हटाने के लिए ज्ञान प्राप्त करना अति आवश्यक है। इसके लिए हमें प्रयास करना चाहिये। यह आवरण तीन प्रकार के कार्यों में से किसी एक का अनुकरण करने पर कट सकता है–

१. कर्म द्वारा कर्म पर चलना तलवार की धार पर चलना है जिससे यह मार्ग छूटने की संभावना रहती है।

२. भक्ति द्वारा—भक्त केवल ईश्वर के नाम में विश्वास रखता हुआ उसमें लीन रहता है तथा हमेशा उससे प्रार्थना करता है कि कहीं मैं इस मार्ग से विचलित हो जाऊं तो मेरी मदद करते रहना।

३. ज्ञान प्राप्ति द्वारा — ज्ञान प्राप्त करके ज्ञानशील होने पर उसमें स्वत: प्रकाश सर्वोच्च शिखर पर पहुंचता है उसको किसी दूसरे की सहायता नहीं होती है।

अत: हमें यदि सर्वोच्च साधन प्राप्त करना है तो ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिये। आइये अब ज्ञान प्राप्ति की विभिन्न विधियों की ओर बढें। ज्ञान प्राप्ति हेतु तीन मुख्य विधियां है—

१. ज्ञान देकर ज्ञान प्राप्त करना।
२. धन देकर ज्ञान प्राप्त करना।
३. शिष्य बनकर विनय से ज्ञान प्राप्ति।

ज्ञान प्राप्ति की प्रथम विधि है ज्ञान देकर ज्ञान प्राप्त करना। इस विधि में संकीर्णता का भाव नीहित है क्योंकि जितना ज्ञान हम दूसरों को देंगे उतना ही ज्ञान हम उनसे प्राप्त कर सकेंगे। अत: ज्ञान प्राप्ति की यह विधि ज्यादा उचित नहीं है।

आजकल ज्ञान प्राप्ति हेतु पारिश्रमिक देकर ज्ञानार्जन करते हैं। किसी शिक्षक को ट्यूशन आदि दिया

जाता है लेकिन इस विधि में द्रव्य मुख्य है ज्ञान गोण। क्योंकि जितना पैसा दिया जायेगा ज्ञान उस तक सीमित रहेगा। अतः यह विधि भी ज्यादा उपयुक्त नहीं हैं।

ज्ञान प्राप्ति की अन्तिम विधि पूर्ण रुप ज्ञान प्राप्त करना हैं तो गुरू की आज्ञा में रह कर विनम्रता अपना कर ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। यही वह विधि है जिससे पुराने जमाने में गुरूओं की सेवामें रह कर विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थे और गुरु को माता-पिता तुल्य समझते थे इसी नियित कहा भी है—

चार पदारथ करतल ताके।
प्रिय पितु मातु-प्राण सम जाके।।
गुरू पितु मातु स्वामि सिख पाले।
चलत सुभगु पगु परत न खाले।।

अर्थात् माता, पिता और गुरू के प्रति सम्मान, प्रेम, सेवा और आज्ञा पालन के भाव रखने चाहिये। उपनिषद के उपदेश का अक्षरशः पालन करना चाहिये यथा—

"मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव"

अर्थात् माता को देवी के समान समझो और पिता तथा आचार्य को देवता तुल्य समझो। तभी वह गुरू हमें पूर्ण रूपेण शिक्षा प्रदान करेगा।

प्रत्येक जीवन में कुछ निजी सिद्धान्त होते हैं और सिद्धान्तपूर्ण जीवन में ही सफलता मिल सकती है विद्यार्थी जीवन के भी विशेष लक्षण बताये गये हैं उन स्वभाविक लक्षणों का होना प्रत्येक विद्यार्थी में आवश्यक है। विद्यार्थी के लक्षण—

काक चेष्टा, वकोध्यानं, श्वान निद्रा, तथेवच।
अल्पाहारी, गृह त्यागी विद्यार्थी पंच लक्षणम्।।

हर मानव जन्म से लेकर मरण तक कुछ न कुछ सीखता ही रहना है लेकिन विद्यार्थी के लिए कुछ नियमों की चार दीवारी में रह कर अध्ययन करना पड़ता है। जिनमें विद्यालय मुख्य है लेकिन केवल विद्यालय की चार दीवारी में बालक किताबी कीड़ा बन कर पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। महात्मा गांधी ने कहा था "कुछ लोग गधों की तरह किताबी ज्ञान का बोझा ढोते रहते है पर व्यावहारिक पहलू से वे बिल्कुल अनभिज्ञ रहते हैं।" और आजकल तो डिग्री ले लेना ही मात्र विद्या व विद्यार्थी का लक्ष्य रह गया है।

अतः सर्वांगीण विकास के लिए किताबी ज्ञान के अतिरिक्त व्यावहारिक ज्ञान भी आवश्यक है। ज्ञानोपार्जन में स्कूल के साथ २ पुस्तकालय, ज्ञान गोष्ठियों, प्रवचन और शिक्षण शिविरों का महत्वपूर्ण योगदान है।

आजकल ज्ञानोपार्जन हेतु शिक्षण शिविर बहुतायत में लगाये जाते हैं ऐसी ही एक आदर्श शिक्षण शिविर गत ग्रीष्मावकास में बाड़मेर में भी लगा था। ऐसे शिविरों में छोटी उम्र से लेकर बड़ी उम्र तक के विद्यार्थी भाग लेते हैं। घरों के अशान्त वातावरण से दूर बालक स्वच्छन्द हवा में अपने हमजोली साथियों के साथ विद्या ध्ययन करने में काफी दिल चस्पी लेता है। और ग्रीष्मावकास के दिनों में जब बालक हर तरह से स्वतन्त्र होता है। ये शिविर अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। शिक्षण शिविर से विभिन्न लाभ—

१. बेकार समय बरबाद न कर समय का सदुपयोग।
२. मैत्री, सहयोग, विश्वास, आत्मीयता, ईमानदारी और वफादारी आदि गुणों का विकास।
३. पाठ्यक्रम की पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य क्षैत्रों का ज्ञान प्राप्त करना।
४. धर्म व संस्कृति आदि का ज्ञान होना।
५. बुरी प्रवृत्तियों की समाप्ति होकर सदाचारी जीवन का आरम्भ।
६. अच्छी दिनचर्या एवं चरित्र का निर्माण।
७. विभिन्न साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियों का विकास व समावेश।
८. सत्संग से आत्म कल्याण का मार्ग मिलना।

अन्त में मैं शिक्षण शिविर के महत्व पर तो यही कहूंगा—

"शिक्षण शिविर लगा कर हम, ज्ञानोपार्जन करते रहें
अपने इस पावन जीवन में, अविरल ज्ञान गंगा बहे।
बिना ज्ञान जीवन है अधूरा, और उसमें अंधियारा है,
ज्ञान दीप जलाया जिसने, उसने जीवन संवारा है।।

"हम हैं कौन ?"

श्री विचक्षण श्री० जी म० सा० की शिष्या
मणिप्रभा श्री जी

भारतीय जनता में धार्मिक भावनायें सदा से पनपती रही है, वैसे भारत में धर्म के अनेक रूप हैं, मतमतान्तर भी खूब हैं, सभी अपनी मान्यता के अनुसार किसी न किसी रूप में धर्म के नाम पर आचरण करते है। जैन धर्म में भी अनेक मत व सम्प्रदाय है, आचरण में साधारण भिन्नता के अतिरिक्त धर्म का जो स्वरूप है, व्यक्ति का जो उद्देश्य है, वह तो सर्वथा एक ही है। तप, जप, तीर्थ, यात्रा, दान-पुण्य सभी शुभ प्रवृतियों का प्रशंसनीय प्रचार हैं। आज इस वैज्ञानिक युग में जहां शारीरिक सुख साधनों का ही बोल बाला है, व्यक्ति भौतिक सुख को ही सर्वोपरि महत्व देता है, ऐसे समय में भी हजारों की संख्या में त्यागी वर्ग मिलेगा जिनके जीवन गत नियम, उपनियम साधारण जन-मन को आश्चर्यान्वित करता है।

जब हम ग्वालियर से देहली आ रहे थे, तब विहार के बीच एक व्यक्ति ने जैन मुनि के नियमों को जानने की जिज्ञासा व्यक्त की। उत्तर में जब नियमों की जानकारी कराई तो कहने लगाकि "जिस जीवन को आप लोग त्यागी जीवन स्वीकार करने के बाद आजीवन आचरण करती हैं उस जीवन की मैं तो कल्पना भी नहीं कर सकता," तब मुझे लगा आज भी त्याग का यह महत्व है। जो मुनि जिन-वाणी के अनुसार मुनि जीवन का स्वरुप जानता है, वह वर्तमान-साधक स्थिति से सन्तुष्ट नहीं हो सकता।

हम साधक हैं चाहें साधु हो अथवा गृहस्थ, धार्मिक आराधना का उद्देश्य सभी का आतम स्वरूप का प्रतीक सिद्धि स्थान है, किन्तु अब सोचना यह है कि धर्म के मर्म को भी समझ रहे हैं, अथवा केवल क्रिया काण्ड रूप आचरण ही करते हैं, चूंकि ज्ञान सहित आचरण को ही महान व्यक्तियों ने महत्व दिया है। अतः आचरण के साथ ज्ञान को प्रमुखता देनी है। आचरण तो वही रहेगा जो इस समय हम जो कर रहे हैं, किन्तु ज्ञान से हम आचरण का रहस्य समझने लगेंगे जिसके परिणाम स्वरूप जीवन व जगत के रहस्य को जानकर उसके प्रति जो एक व्यामोह है, आसक्ति व ममत्व है, उसमें अन्तर आयेगा, और वही साधना हमें सत्य स्वरूप के निकट ले जायेगी। जैसे हम तीर्थ यात्रा, दान-पुण्य आदि जितनी भी शुभ प्रवृत्तियाँ करते हैं, करे अवश्य करें, करनी ही चाहिए, किन्तु इसके पीछे जो आध्यात्मिक भावना है उसे भी जानें, अपनी आत्मा को पहचानें व कर्म परमाणु भिन्न आत्म स्वरुप की उपलब्धि है उसके लिए प्रबल प्रयत्न करें, किन्तु अधिकांशतः होता यह है कि हम सम्यग् ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र शब्द प्रवचन में सुनते हैं, यदि आपने तत्वार्थ का अध्ययन किया है तो प्रथम अध्याय के प्रथम सूत्र में ही यह "सम्यग दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्ष मार्गः" फिर भी रहस्य समझ पाना हमारे लिए समस्या ही होगी, जिसका समाधान संभवत न हुआ होगा। इस सूत्र की व्याख्या हम इन तीन वाक्यों में कर सकते हैं "देखने वाले को देखना सम्यग दर्शन है जानने वाले को जानना सम्यग ज्ञान है, जानने व देखने वाले तत्व में रमण करना सम्यक चारित्र है" यही त्रिवेणी मोक्ष मार्ग का सर्वोपरि व सरलतम मार्ग है, इसको समझने के लिए और स्पष्टी करण करदें 'जानने वाले को जानना' इसका तात्पर्य यह हुआ कि हर पदार्थ का दर्शन व ज्ञान हमें अपनी इन्द्रियों के द्वारा हो सकता हैं, व्यावहारिक दृष्टि से यह बात सत्य है, किन्तु हम जरा गहराई से सोचे तो हमें ज्ञात होगा कि इन्द्रियाँ वस्तु के ज्ञान कराने में माध्यम है, परन्तु मूल देखने वाली इन्द्रियां अर्थात् आखें ही हो जब तो हृद्गति अथवा किसी भी तरह मृत्यु हो जाने के बाद मृतक जो कलेवर है उसकी आंखें देखनी

चाहिए क्योंकि देखने वाली आंखें हैं किन्तु ऐसा नहीं होता वैसे ही स्पर्श का अनुभव त्वचा को होता है, उदाहरण के रूप में भोजन बनाते समय जब कोई भी बहन साधारण सी चिनगारी अथवा गर्म तेल के छीटे आदि के लगने से चिल्लाने लगती है, और उसी शरीर को मरणोपरान्त डोली में लेजाकर श्मशान भूमि में होली की तरह जला देते है तब छीटे मात्र से चिल्लने वाला व्यक्ति उफ् तक नहीं करता। इन उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि इन्द्रिया देखने में केवल माध्यम है, किन्तु जानने व देखने वाला हमारे मंदिर में बैठने वाला आत्मा ही है, और अधिक समझने के लिए विद्युत प्रकाश का उदाहरण लेवे जैसे बिजली का बटन दबाते ही हमारा स्थान प्रकाश से जगमगाने लगता है, यह सब क्रिया वही तक सफल होती है जब तक पावर हाउस से पावर मिलता है, यदि वहां से कनेक्शन कट जाये तो फिर उसी बटन को एक बार नहीं एक सौ आठ बार भी दबावें किन्तु फिर भी प्रकाश हो नहीं सकता। अतएव प्रकाश का प्रमुख स्थान पावर हाउस है। वैसे ही दर्शन व ज्ञान का सम्बन्ध आत्मा से हैं, जिसे हम जीव, आत्मा, चेतन, एवं शक्ति आदि किसी भी नाम से समझ सकते हैं, पर हमारा केन्द्र बिन्दु वही है जिसे जानने के लिए, देखने के लिए व उसी में रमण करने के लिए धार्मिक जीवन को अपनाते हैं, फिर भी प्रायः देखा यह जाता है कि व्यक्ति उस सच्चिदानन्द आत्म स्वरुप से दूर ही रहता है अर्थात उसकी प्रतीति नहीं होती, और प्रतीति के अभाव में अनुभूति आदि का प्रश्न ही नहीं उठता ऐसी विवेक शुन्य साधना हमें बीतराग पथोन्गामी नहीं बना सकती। अतएव आवश्यकता है अध्यात्म ज्ञान की। अन्यथा हम जीवन भर धार्मिक क्रियाओं के द्वारा अपने आप को धर्मात्मा मानते रहें है पर हम इतना नहीं जानते कि धर्म का स्वरूप क्या है, अर्थात् हम है कौन ?

जब हम पूज्या प्रवर्तिनी श्री विचक्षण श्री जी महाराज साहिबा के सान्निध्य में दक्षिण यात्रा करके बेंगलोर से हैदराबाद आते समय एक गाँव में रूके। जहां जैन समाज के ८-१० घर थे, आहारादि निवृत्त होकर हम जैसे ही बैठे कि आठ दस महिलायें आई व सामायिक लेकर कहने लगी हमें कुछ उपदेश सुनावो। कथा सुनाने से पूर्व ही मैंने कहा आप सब के धर्म ध्यान कुछ बनता है न ? उनमें से वृद्ध महिला कहने लगी मेरा तो पूरा जीवन ही धर्म ध्यान करते बीत रहा है, मैंने कहा कैसे ? उत्तर में वह कहने लगी मैंने तीर्थ यात्रा, तप, जप, दान पुण्य खूब किया है।

साध्वी—व्याख्यान आदि का अवसर तो कम मिलता होगा, क्योंकि गांव में साधु साध्वियों का ठहरना कम होता है।

सेठानी—महाराज ऐसी बात नहीं है, मैंने सन्तों की सेवा में कई चतुर्मास किये हैं, भोजनशाला चला कर लाभ भी लिया है।

साध्वी अच्छा मैं आप से यह उत्तर चाहती हूँ कि आप कौन है, यह सहज ही पूछ लिया।

सेठानी मेरा नाम अमुक बाई है।

साध्वी मैं इस रूप में नहीं पूछ रही, और कुछ बताओ।

सेठानी – क्या पति का नाम बताऊं।

साध्वी - नकारात्मक संकेत।

सेठानी—पिता का नाम बताऊं ?

साध्वी—तब भी मना।

सेठानी— आप किसका नाम पूछ रही है क्या बेटे का नाम

साध्वी—इस पर भी मना।

सेठानी—हैरान हो गई व अपना परिचय देने हेतु अपने परिवार के प्रत्येक व्यक्ति के नाम बताने लगी।

साध्वी— नहीं अन्य अर्थ बताइये।

सेठानी—यह क्या बला है ? सभी को उत्सुकता लग रही थी रहस्य कब खुले।

साध्वी—सेठानी जी आपने शरीर से सम्बन्वित सभी का परिचय दे दिया किन्तु जिन वाणी का सार जो आत्म ज्ञान है अर्थात् शरीर से भिन्न जो आत्मा है उसे आप नहीं बताया धर्म का सही रूप में अर्थ ही यह है कि सम्यग ज्ञान, दर्शन, चरित्र रूप जो आत्मा है उसका ज्ञान करो कि हम हैं कौन ?

★★

खरतर गच्छीय सुखसागरजी महाराज के समुदाय के वर्त्तमान
गणीवर्य हेमेन्द्रसागरजी म० सा० के आज्ञानुवर्तिनी
विश्व प्रेम प्रचारिका, समन्वय साधिका, प्रवर्तनी

श्री विचक्षण श्री म० सा०

विश्व प्रेम प्रचारिका, समन्वय साधिका, प्रवर्तनी
श्री विचक्षण श्री जी म० सा०
की सुशिष्या बालब्रह्मचारिणी
कोयल कण्ठी
श्री मनोहर श्री जी म० सा०

पीछे
पूज्यनीय श्री दिव्यगुणा श्री जी
,, नयप्रभा श्री जी
,, काव्यप्रभा श्री जी

O

आगे
पूज्यनीय श्री निरंजना श्री जी
,, मनोहर श्री जी
,, मुक्तिप्रभा श्री जी
महाराज साहिबा

वाड़मेर जैन श्री संघ की ओर से आयोजित जैन धार्मिक शिक्षण शिविर का उद्घाटन माननीय श्री राजरूप टांक दीप शिखा जलाकर कर रहे है। पास में श्री वर्द्धमान जैन मंडल के अध्यक्ष श्री बंशीधर बोहरा दिखाई दे रहे है

माननीय श्री राजरूप टांक उद्घाटन भाषण देते हुए। मंच पर उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष श्री आदर्श किशोर सक्सेना जिलाधीश बाड़मेर, शिविर समिति के अध्यक्ष श्री सुल्तानमल जैन, बाड़मेर विधायक श्री वृद्धिचन्द जैन विराजमान है

जैन धार्मिक शिक्षण शिविर समिति के अध्यक्ष श्री मुल्तानमल जैन उद्घाटन समारोह में शिविर परिचय, इसके उद्देश्य एवं इसकी आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए।
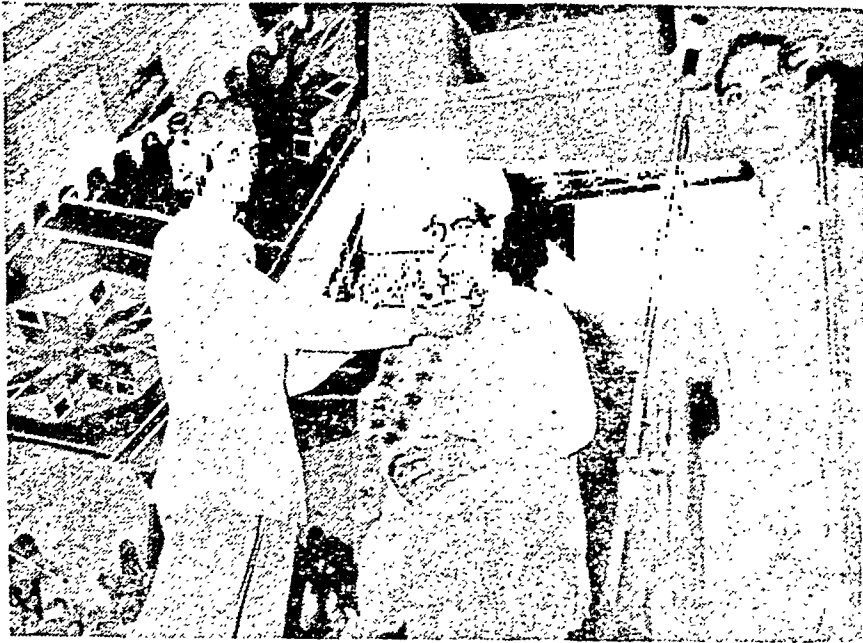
जैन धार्मिक शिक्षण शिविर के उद्घाटन समारोह में जैन विद्वान श्री अगरचन्द नाहटा विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित हुए, जिनका स्वागत शिविर समिति के अध्यक्ष श्री मुल्तानमल जैन करते हुए।

जैन धार्मिक शिक्षण शिविर के उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष श्री आदर्श किशोर सक्सेना जिलाधीश, बाड़मेर ने भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान विषय पर सविस्तार प्रकाश डाल कर जन साधारण को मंत्रमुग्ध कर दिया
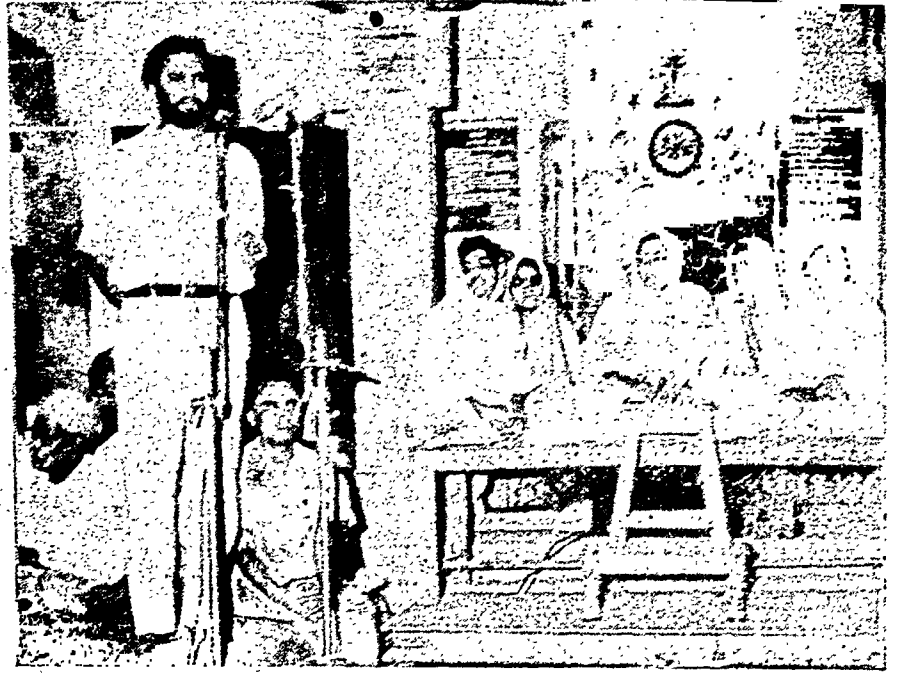
श्री वर्धमान जैन मंडल के अध्यक्ष श्री वंशीधर वोहरा उपस्थित जन समुदाय को धन्यवाद देते हुए

पूज्यवर विचक्षण श्री जी महाराज साहिवा की सुशिष्या मनोहर श्री जी महाराज एवं अन्य साध्वी समुदाय की प्रेरणा से शिविर आरम्भ हुआ। पूज्यवर मनोहर श्री जी उद्घादन समारोह पर आशीर्वाद देते हुए

शिविर के उद्घाटन एवं समाप्ति समारोह कार्यक्रम का संचालन भूरचन्द जैन ने किया

शिविर में गुरू वन्दना करते हुए शिविरार्थी
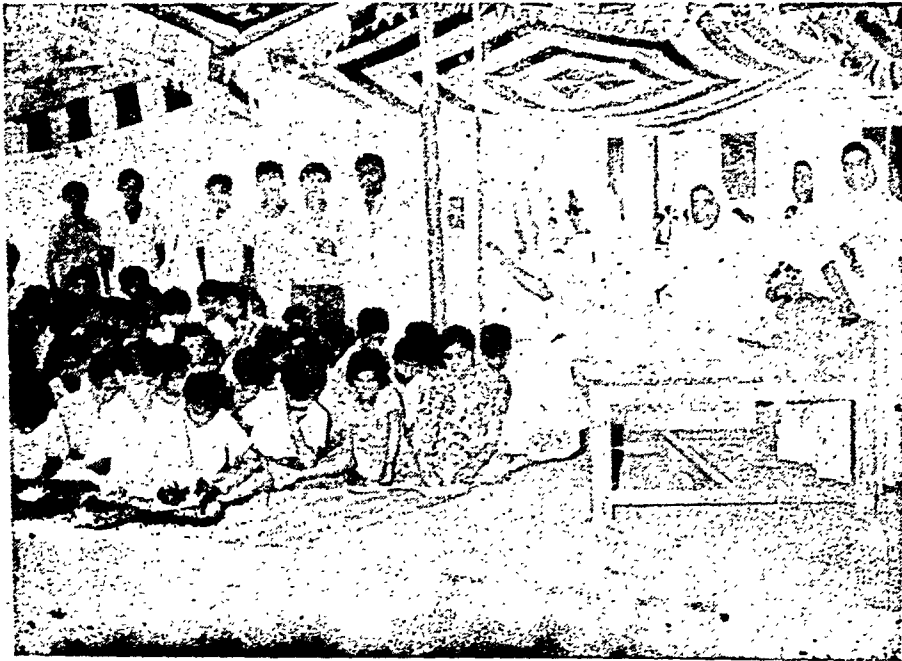
पूज्यवर मनोहर श्री जी महाराज साहिवा एवं अन्य साध्वी समुदाय शिविरार्थियों की सामूहिक कक्षा लेते हुए
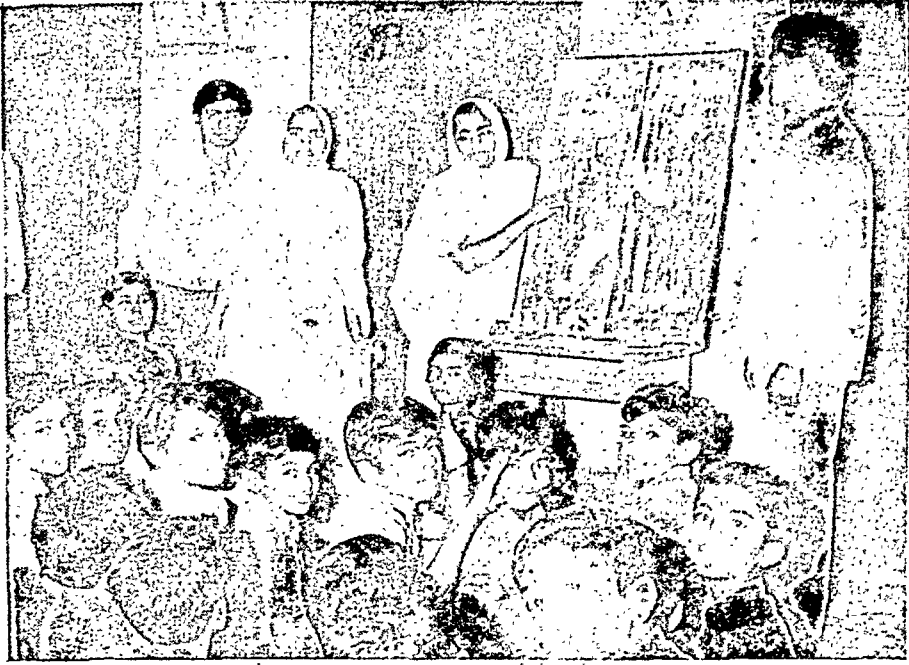
पूज्यवर मनोहर श्री जी महाराज साहिबा शिविरार्थियों को पढाते एहु

पूज्यवर मुक्ति प्रभा श्री जी महाराज साहिबा शिविरार्थियों को पढाते हुए

जैन धार्मिक शिक्षण शिविर में शिविरार्थियों को धार्मिक शिक्षा देने हेतु श्री किशनलाल कोटरिया म० प्र० से पधारे जो समाप्ति समारोह में भाषण देते हुए

म० प्र० से पधारे शिविरार्थियों को धार्मिक शिक्षा देने वाले श्री किस्तुरचन्द लोढा शिविर समाप्ति पर बोलते हुए
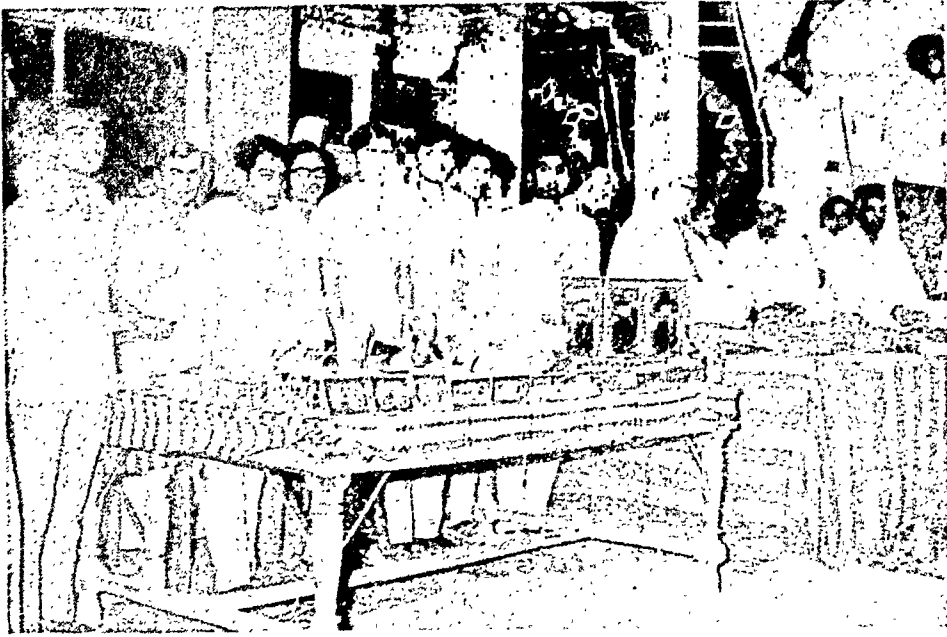
महाराष्ट्र से पधारे श्री धनराज चौपड़ा शिविरार्थियों को धार्मिक अध्ययन कराने में व्यस्त रहे। समाप्ति समारोह में भाषण करते हुए। आगे शिविरार्थियों को वितरण करने वाला पुरस्कार दिखाई देता है। पीछे श्री वर्द्धमान जैन मंडल के कार्यकर्त्ता सलाहाकार श्री हुक्मीचन्द मालू एवं श्री उदयराज जैन दिखाई दे रहे हैं

समाप्ति समारोह पर बोलते हुए श्री हुक्मीचन्द मालू

मंडल की सेवाओं पर जैन श्री संघ ने एक चांदी का मेडल भी मंडल को दिया। मंडल के मंत्री श्री मोहन मेहता मेडल प्राप्त करते हुए

जैन धार्मिक शिक्षण शिविर के संचालन में श्री वर्द्धमान जैन मंडल का सक्रिय योगदान रहा, बाड़मेर जैन श्री संघ की ओर से १००१) रु० मंडल को भेट किये गये, समाप्ति समारोह पर मध्य प्रदेश के श्री हस्तीमल पारख मंडल अध्यक्ष श्री बंशीधर बोहरा को प्रशंस्ति-पत्र देते हुए

शिविर में बालक भोजन का सामुहिक आनन्द लेते हुए। इस में शिष्टाचार एवं धार्मिक नियमों का बालकों ने स्वेच्छा से पालन किया

शिविर में सांस्कृति कार्यक्रम का एक दृश्य

श्री महावीराय नमः

श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ, बाड़मेर

द्वारा आयोजित

ग्रीष्मकालीन जैन धार्मिक शिक्षण शिविर को सफलीभूत बनाने के लिये निम्न गठित समिति के प्रत्येक सदस्य ने अथक प्रयत्न किया जिसकी सर्वत्र सराहना रही

(१)	अध्यक्ष	—	श्री सुरतानमल	फरसराम संखलेचा
(२)	उपाध्यक्ष	—	श्री भगवानदास	वृजलाल बोथरा
(३)	कोषाध्यक्ष	—	श्री रिखबदास	तगामल संखलेचा
(४)	सहकोषाध्यक्ष	—	श्री भूरचन्द	खेतमल संखलेचा

सदस्यः—

(१) श्री भगवानदास लक्ष्मणदास सेठिया
(२) ,, मांणकमल हंजारीमल बोथरा
(३) ,, मांणकमल वस्तीराम धारीवाल
(४) ,, ऊकारचन्द जवानमल मालू
(५) ,, माणकमल समर्थमल मालू
(६) ,, रिखबदास राणामल मालू
(७) ,, सूरजमल केसरीमल धारीवाल
(८) ,, नेमीचन्द मांणकमल बोथरा
(९) ,, नेनमल चिन्तामणदास भन्साली
(१०) ,, पोकरदास चुन्नीलाल संखलेचा
(११) ,, सुरतानमल चिमनीराम संखलेचा
(१२) ,, द्वारकादास अचलदास भन्साली
(१३) ,, सूरजमल केसरीमल भन्साली
(१४) ,, केसरीमल फोजमल लूणिया
(१५) ,, नेमीचन्द जेकचन्द नाहटा
(१६) ,, जांवतराज प्रतापमल सेठिया
(१७) ,, मुल्तानमल समर्थमल छाजेड़
(१८) ,, हीरालास समर्थमल छाजेड़
(१९) ,, शंकरलाल खंगारमल छाजेड़
(२०) ,, रिखबदास गणेशमल गोलेच्छा
(२१) ,, शंकरलाल किस्तूरचन्द गोलेच्छा
(२२) ,, हमीरमल हरखचन्द नाहटा
(२३) ,, आसूलाल पैलादचन्द छाजेड़
(२४) ,, ताराचन्द तगामल बोथरा
(२५) ,, राणामल तगामल धारीवाल
(२६) ,, भगवानदास जोधराज धारीवाल
(२७) ,, आसुलाल तगामल धारीवाल
(२८) ,, मुल्तानमल तगामल बोथरा
(२९) ,, छोटमल प्रतापमल मालू

●●

ग्रीष्मकालीन जैन धार्मिक शिक्षण शिविर बाड़मेर में दान देने वाले

-: दानदाताओं की सूची :-

बाड़मेर नगर में खरतरगच्छीय सुखसागर जी महाराज के समुदाय के वर्त्तमान गणीवर्य हेमेन्द्रसागर जी महाराज साहब के आज्ञानुर्वतिनी विश्व प्रेम प्रचारिका समन्वय साधिका, प्रवर्तनी श्री विचक्षण श्री जी म० सा० की प्रेरणा से उनकी सुशिष्या बाल ब्रह्मचारिणी,कोकल कंठी, शतावधानी साहित्य रत्न, विदुषी मनोहर श्री जी म० सा० आदि साध्वी ठाणा ६ की प्रेरणा से ग्रीष्मकालीन जैन धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसकी पूर्ण सफलता के लिये निम्न लिखित महानुभावों ने दान दिया। आपकी अनुकम्पा एवं दान वृति के कारण शिविर पूर्ण सफल रहा।

११०१/- श्री लाधुराम लीलचन्दजी पड़ाईया
५०२/- श्री पोकरदास चुन्नीलालजी संखलेचा
५०२/- श्री तगामलजी प्रभुलाल मालू
५०१/- श्री मुल्तानमलजी आदमलजी संखलेचा
५०१/- श्री आसुलालजी भगवानदासजी मालू
५०१/- श्री मुल्तानमल जीवनमल छाजेड़
५०१/- श्री केसरीमल धर्मचन्द सेठिया
५०१/- श्री लक्ष्मीचन्द आदमल संखलेचा
३०१/- श्री महालक्ष्मी कम्पनी
३०१/- श्री राणामल ज्वारमल संखलेचा
३०१/- श्री आसुलाल भीखचन्द मालू
३०१/- श्री हजारीमल मांणकमल मालू
३०१/- श्री सुरजमल नेमीचन्द धारीवाल
३०१/- श्री जोरावरमल लूणकरण मालू
३०१/- श्री केसरीमल फोजमल लूणिया
३०१/- श्री भगवानदास राणामल सेठिया
३०१/- श्री प्रतापमल जांवतराज सेठिया
३०१/- श्री मांणकमल समर्थमल छाजेड़
३०१/- श्री विरधीचन्द हीरालाल छाजेड़
३०१/- श्री मुल्तानमल समर्थमल छाजेड़
३०१/- श्री आसुलाल पैलाजमल छाजेड़
३०१/- श्री किस्तुरचन्द सुरतानमल गुलेच्छा
३०१/- श्री रिखवदास सागरमल मालू
३०१/- श्री गुप्तदान
३०१/- श्री मांणकमल मूलचन्द लूणिया
३०१/- श्री हेमराज हरदासमल छाजेड़
३०१/- श्री नेमीचन्द ज्वारमल मालू
३०१/- श्री पूनमचन्द वगतावरमल मालू
३०१/- श्री हमीरमल सुरतानमल धारीवाल
३०१/- श्री आसुलाल सोहनलाल बोथरा
३०१/- श्री टीलचन्द चुन्नीलाल मालू
३०१/- श्री सुरतानमल ज्वारमल लूणिया
३०१/- श्री श्री रिखबदास रावतमल संखलेचा
२५१/- श्री नेमीचन्द लाधुराम नाहटा
२५१/- श्री आसुलाल भंवरलाल वरडिया
२५१/- श्री केशरीमल मूलचन्द भन्साली

बाड़मेर नगर में आयोजित

जैन धार्मिक शिक्षण शिविर का सिंहावलोकन

— भूरचन्द जैन —

आधुनिक युग में भौतिक साधनों को जुटाने में हर इन्सान प्रयत्नशील हैं। आर्थिक दौड़धूप में व्यस्त विलासता से लिप्त स्वार्थ भावनाओं से घिरा इन्सान धर्म की ओर से मुंह मोड़े हुए रहता है। आस्तिक की अपेक्षा नास्तिक भावनाएं दिनों दिन प्रवल वनती जा रही है। जिसके परिणाम स्वरूप प्राचीन भारतीय धार्मिक संस्कृति का ह्रास होने लगा है। लेकिन रत्नगर्भा भारत भूमि में संत महात्माओं, आचार्य, श्रीपूज्यों, साधू साध्वियों, धार्मिक प्रचारकों की भी कतई कमी नहीं हैं। वदलते युग में इनकी प्रेरणा से इनके प्रयत्नों से, इनकी वाणी से, इनके प्रभाव से आज भी धार्मिक संस्कार के वीज जनमानस में वोये जा रहे हैं। धार्मिक क्रियाकलापों से जनजागृति करने हेतु आजकल जैन समाज में ग्रीष्मकालीन जैन धार्मिक शिक्षण शिविरों का जगह जगह जैन साधु साध्वियों की प्रेरणा से आयोजन किया जाने लगा हैं। इन शिविरों में जैन विद्यार्थियों में जो धर्म से दिनों दिन दूर भटकते जाते है उनमें धार्मिक शिक्षा का प्रर्दुभाव उत्पन्न किया जाता है। धर्म क्या है, उसका क्या स्वरुप है, जैन धर्म में तत्वज्ञान, जैन महान् विभूतियों, जैन जगत के संत महात्माओं का जीवन परिचय, जैन धर्म की देन आदि अनेकों विपयों में अल्पकालिन समय में सविस्तार चर्चाएं एवं शिक्षा दी जाती है। इस जैन शिक्षण के साथ शिविर में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को सामायिक प्रतिक्रमण, देवपूजन, गुरु-वन्दना, भगवान की सेवा पूजा आदि करने की क्रिया भी सिखाई जाती है। माता पिता गुरुजनों एवं वड़ों के साथ प्रेम, नम्रता, सहन शीलता से रहने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। जैन संस्कृति को जीवित रखने के लिये इस प्रकार के जैन धार्मिक शिक्षण शिविर अत्यन्त ही उपयोगी सिद्ध हुए है।

ग्रीष्मकाल में विद्यार्थियों के शिक्षण संस्थाओं में अवकाश हो जाते है। इन अवकाश समय का सदुपयोग करने के लिये एवं जैन विद्यार्थियों में जैन धर्म के प्रति अधिक आस्था उत्पन्न करने के लिये जैन धार्मिक शिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाने लगा है। राजस्थान के पश्चिमी सीमावर्ती, रेगिस्तान क्षेत्र के वाड़मेर नगर में विश्व प्रेम प्रचारिका, समन्वय साधिका, व्याख्यान भारती प्रवर्तिनी विचक्षण श्री जी महाराज साहिवा की प्रेरणा से एवं उनकी सुशिष्या वाल ब्रह्मचारिणी, कोयल कंठी, शताव-धानी साहित्यरत्न विदुपी मनोहर श्री जी महाराज साहिवा तथा इनके साथ में विचरण करने वाली पूज्यनीय सर्व श्री मुक्ति प्रभा श्री जी, निरंजना श्री जी, काव्य प्रभा श्री जी दिव्यगुणा श्री जी एवं नय प्रभा श्री जी के तत्वाधान में

पहली वार ग्रीष्मकालीन जैन धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन १० जून १९७३ से २४ जून १९७३ तक १५ दिवस के लिये स्थानीय श्री मल्लीनाथ राजपूत बोर्डिंग हाऊस में किया गया। इस शिविर को सुचारू रूप से संचालित करने के लिये वकील श्री सुल्तानमल जैन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन भी किया गया। शिविर समिति के समस्त सदस्यों के अथक प्रयत्नों से शिविर की विभिन्न गति विधियों 'सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। श्री वर्धमान जैन मंडल के कार्यकर्ताओं ने शिविर को संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वाड़मेर जैन श्री संघ की ओर से लगाये इस जैन धार्मिक शिक्षण शिविर में कक्षा पांच से बारहवीं कक्षा तक के करीबन २११ छात्रों एवं ५ छात्राओं ने प्रवेश प्राप्त किया। कुछ आवश्यक कार्यवश एवं बिमारी के कारण १८ छात्र शिविर छोड़कर चले गये। शिविर में भाग लेने वाले वाड़मेर नगर के अतिरिक्त हरसानी, सियाणी, विशाला, रामसर, अहमदाबाद, व्यावर एवं जोधपुर आदि स्थानों के छात्र भी थे। शिविर में भाग लेने वाले १९८ विद्यार्थियों की जैन धर्म से सम्बन्वित परीक्षाओं का भी आयोजन किया गया जिसमें १६३ उत्तीर्ण, १६ प्रोमेटेड एवं १९ अनुतीर्ण घोषित किये गये। इन विद्यार्थियों को जैन शिक्षा देने के लिये विशेष रूप से श्री महाकौशल मूर्तिपूजक संघ की ओर से भेजे तीन अध्यापक सर्व श्री किशनलाल कोटरिया, धनराज चौपड़ा, एवं किस्तूरचन्द लोढा यहां पधारे। इन अध्यापकों के अतिरिक्त पूज्यवर मनोहर श्री महाराज साहिबा एवं मुक्ति प्रभा श्री जी महाराज साहिबा विद्यार्थियों को जैन शिक्षण देने में सदैव प्रयत्नशील रही। शिविर में वरिष्ठ, कनिष्ठ एवं बाल कक्षाएँ अलग अलग चलती रही। विद्यार्थियों के रहने, खाने–पीने, सोने–बैठने, स्वास्थ्य चिकित्सा आदि का समुचित प्रबन्ध शिविर समिति के सहयोग से श्री वर्द्धमान जैन मंडल द्वारा किया जाता रहा।

इस जैन धार्मिक शिक्षण शिविर का विधिवत् उद्घाटन १० जून ७३ को प्रातः १० बजे जयपुर निवासी आदर्श धर्म प्रेमी, कुशल वक्ता, समाज सेवी, चतुर व्यापारी, स्वतंत्रता संग्रामी माननीय श्री राजरूप जी टांक ने जैन झण्डा रोहण एवं दीप प्रज्जवलित कर किया। इस समारोह की अध्यक्षता वाड़मेर के कुशल एवं कर्त्तव्य-परायण युवा जिलाधीश श्री आदर्श किशोर सक्सेना ने की और भारत विख्यात इतिहासवेत्ता, साहित्य शास्त्री, पुरातत्व के ज्ञाता एवं उदयीमान समाज सेवी बीकानेर निवासी श्री अगरचन्द जी नाहटा विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस उद्घाटन समारोह में नगर के हजारों लोग उपस्थित रहे। इस अवसर पर पूज्यवर मनोहर श्री जी महाराज साहिबा की पीयूषवाणी को सुनकर जनमानस झूम उठा। इस अवसर पर जैन साध्वी पूज्य श्री गुमान श्री जी महाराज साहिबा एवं पूज्यवर श्री प्रियवन्दा श्री जी महाराज साहिबा की सुशिष्या जैन साध्वी श्री इन्दुकला श्री जी भी उपस्थित रही। जिस उत्साह, उमंग एवं हर्षोल्लास से शिविर का उद्घाटन हुआ उसी क्रम से शिविर का समापन समारोह नया पारा राजिम (मध्यप्रदेश) के माननीय श्री हस्तीमलजी पारख की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मध्य प्रदेश के रायपुर निवासी श्री रामलाल जी झावक, बालाघाट से श्री कालूराम जी बाफना और रायपुर से श्री मेघराज जी बेगानी भी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। शिविर के आरम्भ का स्वागत् एवं समाप्ति का धन्यवाद शिविर समिति के अध्यक्ष वकील श्री सुल्तानमल जी जैन ने दिया आगन्तुकों का आभार श्री वर्द्धमान मैन मंडल के अध्यक्ष श्री वंशीधर बोहरा ने किया और शिविर के उद्घाटन एवं समापन समारोह का विधिवत संचालन करने का सौभाग्य मुझे भी मिला।

जैन धार्मिक शिक्षण शिविर में प्रातः ५ बजे से रात्रि १० बजे तक विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम सम्पन्न होते रहे। सभी शिविरार्थियों के लिये नाश्ते, खाने आदि की समुचित व्यवस्था श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ की ओर से की गई। सामुहिक प्रार्थना, सामायिक, सामुहिक देवदर्शन, गुरूवन्दना, भगवान की सेवा-पूजा के अतिरिक्त प्रतिदिन चार घन्टे जैन शिक्षण सम्बन्धी भी होते थे। प्रतिदिन रात्रि में सामुहिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी होता रहा। १९ जून ७३ की रात्रि को

मानव धर्म एवं २३-६-७३ को प्रातः ९ बजे जीवन में सत्य एवं अहिंसा का महत्व पर पूज्यवर श्री मनोहर श्री जी महाराज साहिबा का सार्वजनिक प्रवचन शिविर प्रांगण में हुआ। २३ जून ७३ को विशाल पैमाने पर सफलीभूत सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी हुआ। इस कार्यक्रम में जम्बू स्वामी, सेठ मुनीम, ज्योतिषी, शराबी, सेठानी नौकरानी, सतोली मां आदि लघु नाटक भी प्रस्तुत किये। जिसे हजारों स्त्री पुरुषों ने देर रात तक देखा। १४ एवं २३ जून ७३ को सफेद परिधान पहन कर मंडल के वैण्ड के साथ शिविरार्थियों की प्रभात फेरी का भी आयोजन किया गया।

शिविर में विद्यार्थियों की भजन-गायन, कहानी, चित्र, निबन्ध, भाषण, खेलकूद, परीक्षा एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया, जिसमें प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले शिवरार्थियों की जैन श्री संघ की ओर से पुरुस्कार भी प्रदान किये। वाड़मेर जैन श्री संघ की ओर से विद्यार्थियों को आसन, स्थापना जी, चौवीसी, माला भेंट स्वरूप प्रदान की गई। श्री महाकौशल मूर्ति पूजक संघ की ओर से पुस्तकें एवं तस्वीरें, श्री अमोलखचन्द चिन्तामणदास संखलेचा की ओर से श्री दादा कुशलगुरू की अमर कहानी, श्री सुल्तान मल फौजमलजी वोहरा की ओर से श्री पार्श्वनाथ जैन मन्दिर का इतिहास, श्री हुक्मीचन्द मालू की ओर से पुस्तक सत्यज्ञान और श्री भगवानदास सेठिया की ओर से जैन शिक्षा पुस्तकें एवं जैन चौवीसी की तस्वीरे भेट की गई। मध्यप्रदेश से पधारे सर्वश्री हस्तीमलजी पारख रामलालजी झावक, कालूराम जी वाफना एवं मेघराज जी वेगानी की ओर से प्रत्येक शिविरार्थी को दो दो रुपये भेंट स्वरूप प्रदान किये।

वाड़मेर जैन श्री संघ की ओर से आयोजित इस जैन धार्मिक शिक्षण शिविर में कई महानुभावों ने आर्थिक सहयोग भी दिया। जैन श्री संघ की ओर से बनी शिविर समिति ने शिविर को सफलीभूत संचालित करने के लिये श्री वर्द्धमान जैन मंडल को एक प्रशस्ति पत्र, एक चाँदी का मेडल और १००१ रुपये का पुरुस्कार प्रदान किया। इसी प्रकार एक एक चाँदी का मेडल एवं तीन तीन सौ एक रुपया तीनों अध्यापकों को ससम्मान भेट किये। श्री मल्लीनाथ राजपूत वोडिंग हाऊस को भी ५०१ रुपये सप्रेम भेट किये गये। शिविर में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की स्वास्वथ्य सेवाओं में डा० संचेती, वैद्य वल्लभ शास्त्री, कम्पाउन्डर सर्वश्री प्रेमचन्द एवं खेताराम की अमूल्य सेवाएँ रही। शिविर में भाग लेने वाहर से पधारने वाले महमानों के निवास आदि की समुचित व्यवस्था जैन तीर्थ श्री नाकोड़ा के उपाध्यक्ष श्री आसूलाल वल्द लक्षमण दास जी वोथरा वाड़मेर निवासी ने अपने निवास स्थान में की।

जैन धार्मिक शिक्षण शिविर की सफलता का प्रमुख श्रेय शिविर समिति के सभी सदस्यों को हैं जिन्होंने इतना बड़ा कार्य अपने हाथ में लिया और श्री वर्द्धमान जैन मंडल के सभी कार्यकर्ताओं को है जिन्होंने निस्वार्थ दिन रात सेवा में रत रहकर कार्य किया। पूज्यवर मनोहर श्री जी महाराज साहिबा एवं अन्य उनके साथ विचरण करने वाली पूज्यनीय साध्वियों की लग्न ने ही इस शिविर को जन जन में लोकप्रिय वना दिया। वाड़मेर जैन श्री संघ के दान दाताओं ने दान देकर इसकी व्यवस्था वनाने में अनुकरणीय योगदान दिया। शिविर समिति के समाज सेवी सदस्यगण भी सेवा में पीछे नहीं रहे। शिविर का कार्यक्रम गतिविधियों, धार्मिक क्रियाओं को देखकर जन मानस हर्षोल्लास हुए विना नहीं रहता। जैन धार्मिक एकता का प्रतीक यह शिविर जैन संस्कृति का पोषक वन गया, घर घर में जैन धर्म का जयनाद होने लगा है। इस प्रकार के शिविरों से जैन धर्म को पोषण, जैन संस्कृतिक का उत्थान, आत्मा का कल्याण एवं विश्व शान्ति का मार्ग मिलता है।

**

श्री ग्रीष्मकालीन जैन धार्मिक शिक्षण शिविर, बाड़मेर (राज.)

प्रतियोगिता परिणाम सूचि

(१) भजन-गायन प्रतियोगिता (दि० १२-६-७३)

प्रथम— श्री जगदीश वल्द श्री नेमीचन्दजी रो. नं. २३

द्वितीय-सुश्री विद्या पुत्री श्री लालचन्द जी ,, २२६

तृतीय-श्री बाबूलाल वल्द श्री आसूलालजी ,, १०

तृतीय-श्री बाबूलाल वल्द श्री रिखबदासजी ,, ६३

(२) कहानी प्रतियोगिता (दि० १५-६-७३)

प्रथम--सुश्री मधु पुत्री श्री लालचंद जी ,, २३१

द्वितीय-श्री पारसमल वल्द रिखबदासजी ,, २१

तृतीय-सुश्री विद्या पुत्री श्री लालचन्दजी ,, २२९

तृतीय-श्री भूरचन्द वल्द श्री हजारीमलजी ,, ३५

(३) चित्र प्रतियोगिता (दि० १७-६-७३)

वरिष्ठ-

प्रथम-श्री संपतराज वल्द श्री मांणकमलजी ,, १४

द्वितीय-श्री जगदीश वल्द श्री नेमीचन्दजी ,, २३

तृतीय-श्री लूणकरण वल्द श्री ताराचन्दजी ,, ४०

कनिष्ठ—

प्रथम-श्री प्रकाशचन्द्र वल्द श्री इन्द्रलालजी ,, ४२

द्वितीय-श्री गैनीराम वल्द श्री सागरमलजी ,, ७०

तृतीय-श्री ओमप्रकाश वल्द श्री रिखबदासजी ,, २५

बाल—

प्रथम-श्री केवलचन्द वल्द श्री केसरीमलजी ,, १२७

द्वितीय-श्री प्रकाशचन्द वल्द श्री भूरचन्दजी ,, १४१

तृतीय-श्री बाबूलाल वल्द श्री माणकमलजी ,, १२२

(४) निबन्ध प्रतियोगिता (दि० १८-६-७३)

वरिष्ठ— (विषय-कर्म किसे कहते हैं)

प्रथम-श्री बाबूलाल वल्द श्री हरीरामजी ,, ३४

द्वितीय-लूणकरण वल्द श्री ताराचन्दजी ,, ४०

तृतीय-शंकरलाल वल्द श्री माणकमलजी ,, ३३

कनिष्ठ - (विषय-मार्गानुसारी की विवेचना)

प्रथम- श्री घेवरचन्द वल्द जीवनमलजी ,, ६८

द्वितीय-श्री भूरचन्द वल्द श्री राणमलजी ,, ७४

तृतीय-श्री जसराज वल्द श्री शंकरलालजी ,, ७३

बाल—(विषय-अमरकुमार की कहानी)

प्रथम-श्री कानाराम वल्द श्री गौड़ीदासजी ,, १७०

द्वितीय-श्री लीलचन्द वल्द श्री फौजमलजी ,, १४०

तृतीय-श्री सम्पतराज वल्द श्री करनमलजी ,, १२०

तृतीय-श्री सम्पतराज वल्द श्री आसूलालजी ,, १३१

(५) भाषण-प्रतियोगिता (दि० १९-६-७३)

वरिष्ठ (विषय-धर्म का जीवन में महत्व)

प्रथम–श्री भूरचंद वल्द श्री हंजारीमलजी „ ३५

द्वितीय–श्री बाबूलाल वल्द श्री राणमलजी „ २५

तृतीय–श्री पारसमल वल्द श्री रिखबदासजी „ २१

कनिष्ठ–(विषय-मार्गानुसारी का जीवन में महत्व)

प्रथम–श्री मूलचन्द वल्द श्री आसूलालजी „ ४५

द्वितीय–श्री गैनीराम वल्द श्री सागरमलजी „ ७०

द्वितीय–श्री पीरचन्द वल्द श्री नैनमलजी „ ८८

तृतीय–श्री बाबूलाल वल्द श्री सोनराजजी „ ७१

तृतीय–श्री शान्तीलाल वल्द श्री डामरचन्दजी „ ५२

बाल–(विषय-माता पिता की सेवा)

प्रथम–श्री सम्पत्तराज वल्द श्री ताराचन्दजी „ १९४

द्वतीय–श्री लीलचन्द वल्द श्री फौजमलजी „ १४०

तृतीय–श्री केवलचन्द वल्द श्री प्रभुलालजी „ १५४

(६) खेलकूद-प्रतियोगिता (कबड्डी २३-६-७३)

किशोर टीम (विजेता) श्री बाबूलाल केप्टीन

१. श्री बाबूलाल वल्द श्री हरीरामजी „ ३४

२. श्री भीमराज वल्द श्री मुल्तानमलजी „ २३३

३. श्री लूणकरण वल्द श्री ईश्वरदासजी „ ३१

४. श्री चम्पालाल वल्द श्री हरीरामजी „ १३८

५. श्री मिश्रीमल वल्द श्री वख्तावरमलजी „ २७

६. श्री जगदीश वल्द श्री नेमीचन्दजी „ २३

७. श्री ओमप्रकाश वल्द श्री करणमलजी „ १५२

८. श्री मांगीलाल वल्द श्री लाधुरामजी „ १४४

बाल टीम (विजेता) श्री पुखराज केप्टीन

१. श्री पुखराज वल्द श्री देवीलालजी „ २३६

२. श्री सम्पतराज वल्द श्री माणकमलजी „ १४

३. श्री बाबूलाल वल्द श्री आसूलालजी „ ३

४. श्री जगदीश वल्द श्री सूरजमलजी „ २३७

५. श्री मोहनलाल वल्द श्री ताराचन्दजी „ १००

६. श्री नेमीचन्द वल्द श्री रिखबदासजी „ ४

७. श्री रामलाल वल्द श्री धर्मचन्दजी „ २

८. श्री गैनीराम वल्द श्री प्रभूलालजी „ १२१

(७) सांस्कृतिक-कार्यक्रम (२३-६-७३)

१. कु० मधु सर्व श्रेष्ठ पुरस्कार

२. मौनो एक्टीग श्री किशनलाल कोटड़ीया

३. नाटक-ज्योतिषि सु. श्री शकुन्तला, सर्वश्रीजगदीश एवं हंसराज कोटरिया ।

४. गीत-सुश्री मधु-सासरिएँ नहीं जाऊ ए मां

५. मोनोएक्टीग-सु० श्री मधु

६. नाटक-सेठ सेठानी सुश्री लक्ष्मी पुष्पा

७. पुण्य गीत-श्री बाबूलाल एवं उनका दल

८. मोनोएक्टीग-सेठजी मुनीमजी

९. नाटक शराबी श्री बाबूलाल व श्री पीरचन्द

१०. नाटक-जम्बु कुमार सुश्री विद्या मधु व बालिकाएँ

११. गीत-श्री धनराज चौपड़ा

१२. गीत-श्री किस्तुरचन्द लोढ़ा

१३. गीत-प्रकाशचन्द्र धारीवाल

१४. गीत-श्री शंकरलाल बोथरा

१५. गीत-श्री धनराज जी चौपड़ा

अनुशासन के लिये पुरुस्कृत —

१. श्री मिश्रीमल बोहरा

२. श्री गेनीराम जैन

३. श्री सरुपचन्द संखलेचा

४. श्री मूलचन्द मालू

५. श्री ओमप्रकाश संखलेचा

६. श्री कानाराम छाजेड़

७. श्री बाबूलाल पडाईया

८. श्री मांगीलाल संखलेचा

९. श्री वीरचन्द करनमल वडेरा

१०. श्री लूणकरण संखलेचा

★—★

श्री ग्रीष्मकालिन जैन धार्मिक शिक्षण शिविर

बाड़मेर (राजस्थान)

में

धार्मिक एवं व्यवहारिक शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थी

वरिष्ठ कक्षा के विद्यार्थी

रोल नं०

१. ओमप्रकाश श्री रिखबदासजी मालू कक्षा १० वीं
२. रामलाल ,, वर्मचन्दजी वोहरा ,,
३. बाबूलाल ,, आसूलालजी तातेड़ ,,
४. नेमीचन्द ,, रिखबदासजी धारीवाल ,,
५. प्रकाशचन्द ,, द्वारकादासजी संखलेचा ,,
६. बाबूलाल ,, मूलचन्दजी जैन ,,
७. जगदीश ,, केसरीमलजी वोथरा ,,
८. पुखराज ,, खेमराजजी वोथरा ,,
९. बाबूलाल ,, माणकमलजी धारीवाल ,,
१०. बाबूलाल ,, आसूलालजी वोथरा ,,
११. मोहनलाल ,, आसूलालजी धारीवाल ,,
१२. मांगीलाल। ,, सुल्तानमलजी संखलेचा ,,
१३. प्रकाशचन्द ,, मेवारामजी वोहरा ,,
१४. सम्पतराज ,, माणकमलजी छाजेड़ ,,
१५. रतनलाल ,, आसूलालजी छाजेड़ ,,
१६. प्रकाशचन्द ,, बन्सीधरजी धारीवाल ,,
१७. पारसमल ,, सूरजमलजी मेहता ,,
१८. छगनमल ,, नेमीचन्दजी मेहता ,,
१९. जेठमल ,, मुल्तानमलजी जैन ,,
२०. नेमीचन्द ,, माणकमलजी जैन ,,
२१. पारसमल ,, ऋषभदासजी वडेरा ,,
२२. बाबूलाल ,, आसूलालजी सिंघवी ,,
२३. जगदीशचन्द्र ,, नेमीचन्दजी छाजेड ,,

रोल नं०

२४. मांगीलाल श्री गुणेशमलजी वोथरा कक्षा १० वीं
२५. बाबूलाल ,, राणमलजी संकलेचा ,,
२६. बाबूलाल ,, चितामनदासजी वोहरा ,,
२७. मिश्रीमल ,, बख्तावरमलजी मालू ,,
२८. बाबूलाल ,, केवलचन्दजी मालू ,,
२९. मांगीलाल ,, करनमलजी संकलेचा कक्षा ११ वीं
३०. गंगाराम ,, द्वारकादासजी भंसाली ,,
३१. लुणकरण ,, ईश्वरदासजी गोलेच्छा ,,
३२. सम्पत्तराज ,, केवलचन्दजी संकलेचा ,,
३३ शंकरलाल ,, माणकमलजी नाहटा ,,
३४. बाबूलाल ,, हरीरामजी पड़ाईया ,,
३५. भूरचन्द ,, हजारीमलजी वोथरा कक्षा १० वीं
३६. प्रकाशचन्द ,, आसुलालजी जैन कक्षा ११ वीं
३८. रतनलाल ,, व्यापारीलालजी वोहरा कक्षा १० वीं
३९. गेनीराम ,, प्रभूलाल जैन ,,
४०. लुणकरण ,, ताराचन्दजी संकलेचा ,,
२२९. कु. विद्या श्री लालचन्दजी श्रीश्रीमाल ,,
२३०. कु. पुष्पेंद्र श्री गोरधनदासजी ,,
२३१. कु. मधुबाला श्री लालचन्दजी श्री श्रीमाल ,,
२३३. भीमराज श्री मुल्तानमलजी छाजेड कक्षा ११ वीं
२३६. पुखराज श्री देवीलालजी कक्षा १० वीं
२३७. जगदीशचन्द श्री सूरजमलजी छाजेड ,,
२३८. सम्पत्तराज श्री मेवारामजी वोथरा ,,
५०. अनिलकुमार श्री मुल्तानमलजी जैन ,,

कनिष्ठ कक्षा के विद्यार्थी

रोल नं०

४१. विनोदकुमार श्री भगवानदासजी पारख कक्षा ६ वीं
४२. प्रकाशचंद ,, इंद्रलालजी पारख ,,
४३. जेठमल ,, आसूलालजी छाजेड़ ,,
४४. सम्पतराज ,, देवीचन्दजी बोहरा ,,
४५. मूलचन्द ,, आसूलालजी जैन ,,
४६. जगदीश ,, राणमलजी बोथरा ,,
४७. वीरचन्द ,, बोरीदासजीजैन ,,
४८. बाबूलाल ,, नेमीचन्दजी बोथरा ,,
४९. बाबूलाल ,, रावतमलजी सेठिया ,,
५०. अनिलकुमार ,, मुल्तानमलजी जैन ,,
५१. भूरचन्द ,, बख्तावरमलजी मालू ,,
५२. शान्तिलाल ,, डुगरचन्दजी जैन ,,
५३. रतनलाल ,, शंकरलालजी जैन ,,
५६. जगदीशचन्द ,, मेवारामजी बोथरा ,,
५७ वीरचन्द ,, करणमलजी वडेरा ,,
६०. भूरचन्द ,, चितामनदासजी जैन ,,
६२. चंपालाल ,, भूरचन्दजी मेहता ,,
६३. बाबूलाल ,, रिखबदासजी जैन ,,
६४. बाबूलाल ,, रिखबदासजी जैन ,,
६५. सोहनलाल ,, आसूलालजी बोथरा ,,
६६. शंकरलाल ,, हजारीमलजी जैन ,,
६७. प्रकाशचन्द ,, हस्तीमलजी ,,
६८. घेवरचन्द ,, जीवनमलजी जैन ,,
७०. गेनीराम ,, सागरमलजी जैन ,,
७१. बाबूलाल ,, सोनराजजी जैन ,,
७२. जगदीशचन्द्र ,, माणकमलजी भंसाली ,,
७३. जसराज ,, शंकरलालजी जैन ,,
७४. भूरचन्द ,, राणमलजी जैन ,,
७५. मांगीलाल ,, दुर्गादासजी संकलेचा ,,
७६. कु. लक्ष्मी ,, इंदरलालजी पारख ,,
७७. मिश्रीमल ,, आसूलालजी बोहरा ,,
७८. सम्पतराज ,, धनराजजी जैन कक्षा ८ वीं
७९. पारसमल ,, मेवारामजी जैन ,,
८३. सम्पतराज ,, शंकरलालजी जैन ,,
८४. पुखराज ,, नेमीचन्दजी छाजेड़ ,,
८६. बाबूलाल ,, मेवारामजी सिंघवी ,,
८७. सम्पतराज श्री देवीचंदजी जैन कक्षा ८ वीं
८८. पीरचंद ,, नैनमलजी सिंघवी ,,
८९. मूलचन्द ,, हुकमीचन्दजी जैन ,,
९०. अशोककुमार ,, सूरजमलजी जैन ,,
९१. जुगराज ,, उदयचन्दजी गुलेच्छा ,,
९२. भगवानदास ,, सागरमलजी मालू ,,
९३. सम्पतराज ,, मुल्तानमलजी बोथरा ,,
९४. सोहनलाल ,, चितामनदासजी पड़ाईया ,,
९५. पारसमल ,, खीमराजजी नाहटा ,,
९६. बाबूलाल ,, नारायणदासजी नाहटा ,,
९७. प्रकाशचंद ,, मेवारामजी बोहरा ,,
९८. रतनलाल ,, शंकरलालजी बोथरा ,,
१००. मोहनलाल ,, ताराचन्दजी बोहरा ,,
१०१. लुणकरण ,, ताराचन्दजी बोहरा ,,
१०२. गजरमल ,, आसूलालजी संकलेचा ,,
१०३. स्वरूपचन्द ,, चांदमलजी संकलेचा ,,
१०४. वंशीधर ,, आईदानजी जैन ,,
१०५. हस्तीमल ,, मेवारामजी जैन ,,
१०६. रतनलाल ,, रिखबदासजी जैन ,,
१०७. सम्पतराज ,, माणकमलजी बोथरा ,,
१०८. सोहनलाल ,, शंकरलालजी वडेरा ,,
१०९. देवीचन्द ,, कल्याणदासजी बोथरा ,,
११०. जगदीशमल ,, मुल्तानमलजी जैन ,,
१११. भगवानदास ,, सरुपचन्दजी जैन ,,
११२. माँगीलाल ,, करणमलजी बोथरा ,,
११३. घेवरचन्द ,, माणकमलजी जैन ,,
११४. रतनलाल ,, देवीचन्दजी वडेरा ,,
११५. मांगीलाल ,, भीखचन्दजी छाजेड़ ,,
११६. प्रकाशचन्द ,, मघराजजी जैन ,,
२३२. कु० शकुन्तला श्री लूणकरणजी धारीवाल ,,
२३९. सम्पतराज श्री खेतमलजी बोहरा ,,
२४०. जगदीशचंद श्री बख्तावरमलजी बोथरा ,,
२४१. प्रकाशचन्द श्री शंकरलालजी छाजेड़ ,,
२४२. शंकरलाल ,, चिमनीरामजी नाहटा ,,
२४३. जगदीशचंद ,, चिमनीरामजी नाहटा ,,
१३७. मिश्रीलाल ,, आसूलालजी जैन

बाल कक्षा

रोल नं०

११७. बाबूलाल श्री चिमनीराम कक्षा ७ वीं
११८. सम्पतराज ,, मेवाराम संखलेचा ,,
११९. सुखरामदास ,, केवलचन्द संखलेचा ,,
१२०. सम्पतराज ,, करणमल संखलेचा ,,
१२१. गेनीराम ,, प्रभूलाल मालू ,,
१२२. बाबूलाल ,, माणकलाल ,,
१२३. रतनलाल ,, भंवरलाल ,,
१२४. पारसमल ,, मुल्तानमल ,,
१२५. पारसमल ,, भगवानदास ,,
१२६. सोहनलाल ,, बाबूलाल ,,
१२७. केवलचन्द ,, केसरीमल ,,
१२८. प्रकाशचन्द ,, पन्नालाल ,,
१२९. बाबूलाल ,, कल्याणदास ,,
१३१. सम्पतराज ,, आमूलाल बोथरा ,,
१३३. हस्तीमल ,, मेवाराम पारख ,,
१३४. सम्पतराज ,, हीरालाल मालू ,,
१३८. चम्पालाल ,, हीराराम पडाईया ,,
१४०. लीलचन्द ,, फौजमल मालू ,,
१४१. प्रकाशचन्द ,, सूरचन्द बोहरा ,,
१४२. पारसमल ,, भंवरलाल ,,
१४३. जगदीशचन्द ,, नेमीचन्द सखलेचा ,,
१४४. मांगीलाल ,, लाधूराम पडाईया ,,
१४५. भीमराज ,, मुल्तानमल छाजेड ,,
१४७. सम्पतराज ,, शंकरलाल सिंघवी ,,
१४८. जगदीशचन्द ,, आमूलाल मेहता ,,
१४९. अमृतलाल ,, नेमीचन्द पारख ,,
१५१. छगनलाल ,, आमूलाल छाजेड ,,
१५२. ओमप्रकाश ,, करणमल मालू ,,
१५४. केवलचन्द ,, प्रभूलाल मालू ,,
१५५. चम्पालाल ,, माणकमल बोथरा ,,
१५६. चतुर्भुज ,, आमूलाल बोहरा ,,
१५७. चम्पालाल ,, केसरीमल भंसाली ,,
१५९. मांगीलाल ,, माणकमल बोहरा ,,

१६१. पारसमल ,, मोतीदास बोथरा ,,
१६४. बाबूलाल ,, रिखबदास धारीवाल ,,
१६७. कन्हैयालाल ,, लाधूराम बोथरा ,,
१६८. फुसाराम ,, रिखबदास जैन ,,
१७०. कानाराम ,, गोड़ीदास छाजेड़ ,,
१७६. जगदीश ,, करणमल बोथरा ,,
१७७. ओमप्रकाश ,, हेमराज ,,
१७८. हंसराज ,, चिंतामनदास पडाईया ,,
१७९. प्रकाशचन्द ,, राणामल मालू ,,
१८०. जगदीशचन्द ,, हस्तीमल बोथरा ,,
१८१. चम्पालाल ,, भगवानदास बोथरा ,,
१८२. रतनलाल ,, आमूलाल छाजेड ,,
१८३. बाबूलाल ,, पारसमल धारीवाल ,,
१८४. वंशीधर ,, केवलचन्द श्रीश्रीमाल कक्षा ६
१८५. मांगीलाल ,, हीरालाल छाजेड ,,
१८६. मांगीलाल ,, जेठमल ,,
१८७. लुनकरण ,, नेमीचन्द धारीवाल ,,
१८८. सुखराज ,, धनराज ,,
१८९. सम्पतराज ,, मुल्तानमल छाजेड ,,
१९०. हनुमानदास ,, रिखबदास बोहरा ,,
१९१. पारसमल ,, शंकरलाल बडेरा ,,
१९२. सम्पतराज ,, नेमीचन्द बोथरा ,,
१९३. पारसमल ,, नेनूराम जैन ,,
१९४. सम्पतराज ,, ताराचन्द संखलेचा ,,
१९६. सम्पतराज ,, आमूलाल जैन ,,
१९८. पारसमल ,, मेवाराम संखलेचा ,,
२००. पारसमल ,, गेनीराम लालण ,,
२०१. ओमप्रकाश ,, रिखबदास भंसाली ,,
२०३. सम्पतराज ,, मोहनलाल जैन ,,
२०४. लूणकरण ,, भवरलाल ,,
२०५. हस्तीमल ,, केसरीमल संखलेचा ,,
२०७. प्रकाशचन्द ,, भीमराज बोथरा ,,
२१०. बाबूलाल ,, माणकमल छाजेड ,,
२११. मांगीलाल ,, विरदीचन्द ,,
२१२. ओमप्रकाश ,, रतनमल छाजेड ,
२१३. भूरचन्द ,, मगराज ,,

२१४. मांगीलाल ,, सुल्तानमल वोहरा ,,
२१६. वावूलाल ,, भंवरलाल वोथरा ,,
२१८. ओमप्रकाश ,, भंवरलाल ,,
२२०. चन्द्रशेखर ,, द्वारकेश जैन ,,
२२१. भूरचन्द ,, नेमीचन्द श्रीश्रीमाल ,,
२२२. ओमप्रकाश ,, मुल्तानमल संखलेचा ,,
२२३. भूरचन्द ,, नानकदास वोहरा ,,
२२४. सम्पतराज ,, वोरीदास ,,
२२५. पारसमल ,, कस्तूरचन्द ,,
२२८. रामलाल ,, मेवाराम पारख ,,
२३५. मूलचन्द ,, मेवाराम ,,
२३६. मांगीलाल ,, आसूलाल मेहता ,,
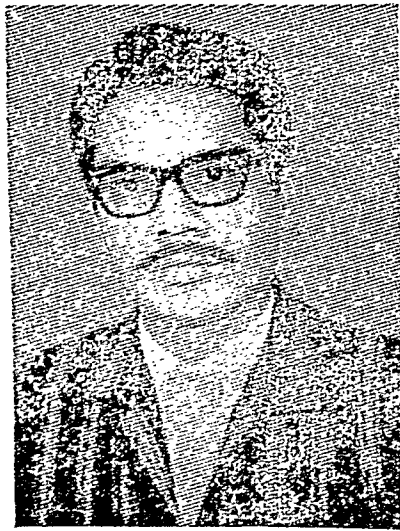
वाड़मेर (राजस्थान) जिले का भारत विख्यात जैन तीर्थ श्री नाकोड़ा

— श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ —

— जहां मनमोहक, आकर्षक एवं दर्शनीय मूल श्री पार्श्वनाथ स्वामी के दर्शनलाभ उठावें।

— जहां अधिष्टायक भैरव देव के चमत्कारों से लाभाविन्त होंवे।

— जहां प्राचीन शिल्पकला कृतियों का अवलोकन करें।

— जहां ठहरने की उत्तम व्यवस्था है।

— सुन्दर भोजन शाला चलती है।

— विजली, पानी एवं टेलीफोन की तीर्थ पर सुन्दर व्यवस्था है।

● नाकोड़ा तीर्थ की उन्नति में हर प्रकार का योगदान दें।

इस तीर्थ की यात्रा के लिये जोधपुर से वालोतरा वस एवं रेल यात्रा से आना सम्भव है। वालोतरा से श्री नाकोड़ा (मेवा नगर) वस यातायात की व्यवस्था है। सिरोही, फालना से भी वस यातायात होती है। वालोतरा से मेवानगर तक पक्की सड़क वनी हुई है।
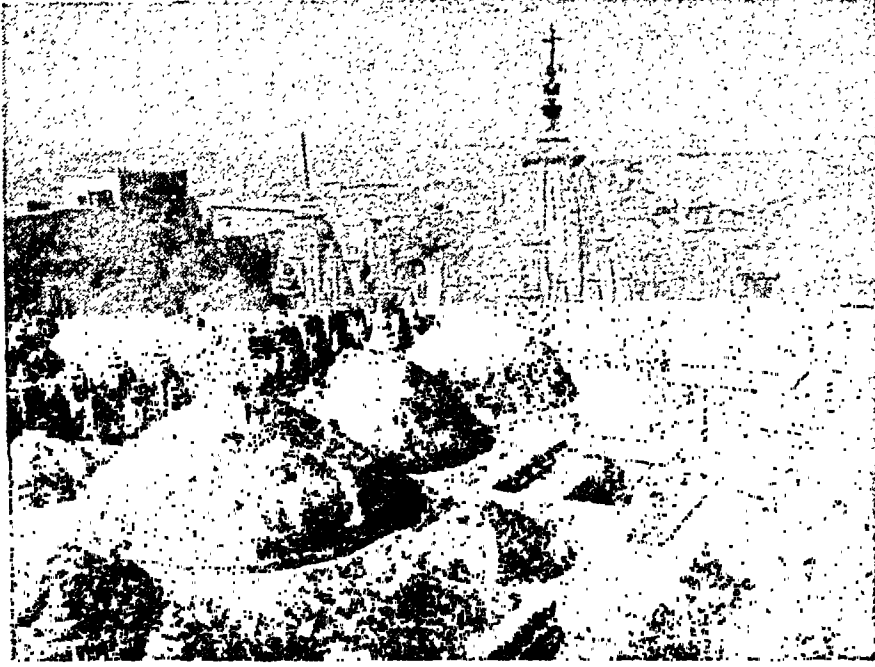
जैसलमेर दुर्ग पर स्थित जैन मन्दिर
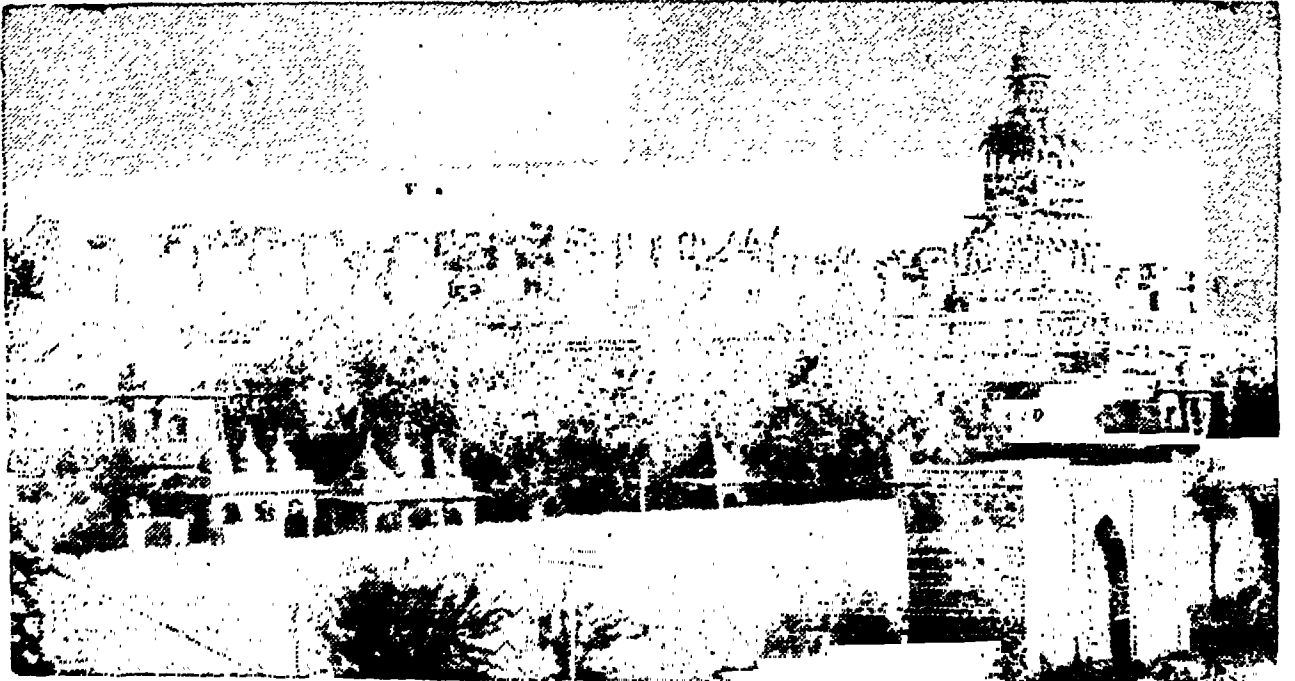
जैसलमेर दुर्ग

अमर सागर (जैसलमेर) का शिल्पकला का सुन्दर जैन मन्दिर
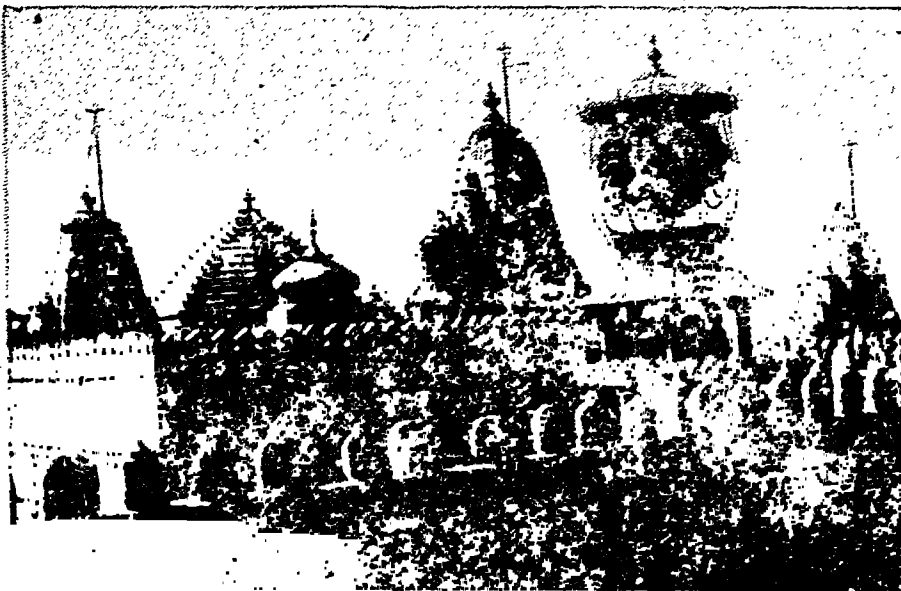
भारत विख्यात लोद्रवा (जैसलमेर) जैन मन्दिर का दृश्य

भगवान महावीर २५०० वीं निर्वाण महोत्सव
के
पावन अवसर पर निम्न अच्छी बातों को जीवन में उतारे

अच्छी बातें—

तीन बातें हमेशा याद रखें

१. ये तीन पूजनीय हैं—	—	देव, शास्त्र और गुरू
२. यही तीन सच्चे रत्न हैं —	—	दर्शन, ज्ञान और चरित्र
३. तीन चीजे किसी का इन्तजार नहीं करती —	—	समय, मौत और ग्राहक
४. तीन चीजे निकलने पर वापिस नहीं होती—	—	वात जवान से, तीर कवान से और प्राण शरीर से
५. तीन चीजे परदे के योग्य है—	—	धन, स्त्री और भोजन
६. तीन से वचने का प्रयास करना चाहिये—	—	बुरी संगत, स्वार्थ और निंदा
७. तीन चीजों में मन लगाने से उन्नति होती है—	—	ईश्वर, महनत और विद्या
८. तीन चीजे कभी न भूलना चाहिये—	—	कर्ज, फर्ज और मर्ज
९. इन तीन का सम्मान करें—	—	माता, पिता और गुरू
१०. तीनों को हमेशा वश में रखें—	—	मन, काम और लोभ
११. तीन चीजों के सेवन से वचे—	—	मांस, मदिरा और परस्त्री

-: कर्म :-

— श्री मांगीलाल संखलेचा
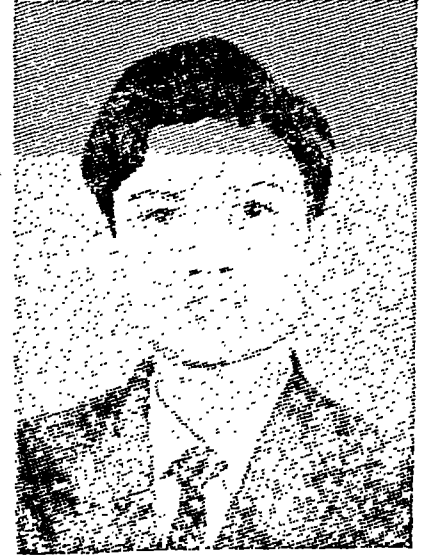
कर्म वह विजातीय तत्व है जो आत्मा में समान शक्तिया रहने पर भी विचित्रता, विषमता एवं विभिन्नता दिखाता है।

"कर्म प्रधान विस्व करि राखा,
जो जस करीह सो तस फल चाखा"

उपरोक्त पंक्तियों में जैन समाज का कर्मवाद स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। कर्म से तात्पर्य जो मनुष्य जैसा काम करता है उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है। मनुष्य का उत्थान या अवरोध (पतन) स्वयं के हाथ में है, यह जानकर उसे अपनी व दूसरों की सहायता करनी चाहिये। जगत की व्यवस्था में कर्मवाद एक ऐसा तत्व है, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है। यह जो चारों ओर विचित्रता एवं विभिन्नता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, यह सब कर्म के ही कारण है। एकेन्द्रिय जीव से लेकर पंचेन्द्रिय जीव तक सभी प्राणियों में कर्म स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

हमारे मस्तिष्क में कई बार प्रश्न उठता है, कि समस्त जीवों की सृष्टि ईश्वर द्वारा की जाती हैं तो फिर ईश्वर इन समस्त जीवों में इतनी विचित्रतायें एवम् विभिन्नतायें उत्पन्न क्यों करता है ? क्यों एक को गरीब एवम् दूसरे को धनवान बनाता है ? इसका स्पष्ट उत्तर है कि जो व्यक्ति जैसा कर्म करेगा उसे वैसा ही फल मिलेगा। भगवान किसी को कहता नहीं है कि तुम काम करो या न करो। वह सिर्फ मानव को जन्म देता है, इसके फलस्वरूप मानव को अपने भले बुरे का विचार उसे स्वय ही सोचना पड़ता है।

इस प्रकार इन कर्मों के कारण ही इतनी विचित्रतायें एवम् विभिन्नतायें नजर आती है। जो मानव अपने कर्मों पर विजय प्राप्त कर लेता है अर्थात् चार घाती कर्मों का नाश कर लेते हैं, उन्हे केवल ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है और जो घाती के साथ अघाती को भी नाश कर लेते हैं उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। यह कर्म मुख्य रूप से आठ प्रकार का होता हैं।

ज्ञानास्यावरणीय दर्शनावरण तथा।
वेदनीय तथा मोह, आयुः कर्म तथैव च ॥१॥
नामकर्म च गौत्रं च, अन्तराय तथैव च।
एवमेतानि कर्माणि, अष्टौ तू समासतः ॥२॥

इस प्रकार ज्ञानावरणी, दर्शनावरणीय, वेदनीय, आयुण्यकर्म, नामकर्म और अन्तराय आदि कर्म आठ प्रकार के होते है। जिनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है।

१. ज्ञानावरणीय कर्म—जब मनुष्य की आत्मा के आगे ज्ञानावरणीय कर्म का आवरण आ जाता है, तो इस आत्मा को ज्ञान की प्राप्ति में बाधा उत्पन हो जाती है यह बाधा निम्न कारणों से उत्पन होती है।

० यह रचना शिविर विद्यार्थी की मूल कृति है।

(१) ज्ञानी द्वारा बताई गई बात को असत्य बताना।
(२) ज्ञानी से द्वेष रखना।
(३) ज्ञानी के साथ व्यर्थ झगड़ा करना।

ज्ञानावरणीय कर्म पांच प्रकार का होता है।

(१) श्रुतज्ञानावरणीय कर्म—इसके कारण सुनने की शक्ति कम होती है।
(२) मतिज्ञानावरणीय कर्म—इसके कारण समझने की शक्ति कम होती है।
(३) अवधिज्ञानावरणीय कर्म—इससे परोक्ष की बातें जानने में नहीं आती है।
(४) मनः पर्यव ज्ञानावरणीय कर्म—इसके द्वारा दूसरों के मन की बात नहीं समझी जाती है।
(५) केवल ज्ञानावरणीय कर्म—इससे सारे ज्ञान को जानने में असमर्थता आती है।

२. दर्शनावरणीय कर्म—मनुष्य की आत्मा में देखने की अनन्त शक्ति होती है, लेकिन जब उस आत्मा के आगे दर्शनावरणीय कर्म का आवरण आ जाता है तो उस आत्मा को देखने में कठिनाई उत्पन्न हो जाती है जैसे किसी को कम दिखता, तो किसी को अधिक, कोई अन्धा होता है तो कोई देखने वाला। ये सब दर्शनावरणीय कर्म के कारण हैं। इसका बंधन निम्न कारणों से होता है।

(१) जो अच्छी तरह देखे उसे अन्धा कहना।
(२) जिसके द्वारा चक्षु (आंखे) मिले, उसके उपकार को भूल जाना।
(३) जिसे नहीं दिखाई देता हो उसे धूर्त कहना।
(४) जिसके दुखती हुई आंखो के अच्छे होने में रोड़ा अटकाना। इस प्रकार इन कारणों को दर्शनावरणीय कर्म का बंध होता है हमें ऐसे कार्यो को भूल से भी नहीं करना चाहिये जिससे हमें ऐसे बुरे कर्मों का बंध होता हो।

३. वेदनीय कर्म—आत्मा को जिसके कारण सुख, शान्ति, रोग, चिन्ता आदि होता हो उसे वेदनीय कर्म कहते है। यह कर्म दो प्रकार का होता है।

(अ) **सातावेदनीय कर्म**—इस कर्म के कारण मनुष्य को अपार सुख शान्ति प्राप्त होती है। एकेन्द्रिय जीव से लेकर पंचेन्द्रिय जीव तक के प्राणियों को किसी भी प्रकार से कष्ट या दुख न देने से इस कर्म का बंध होता है।

(ब) **असातावेदनीय कर्म**—इस कर्म के कारण मनुष्य को दुख, कलेश, धन, रोग आदि का कष्ट उठाना पड़ता है इसके कारण फोड़े-फुन्सी, शारीरिक या मानसिक वेदना उत्पन होती हैं। प्राण, भूत, जीव और सत्य, इन चारों को दुख या कष्ट पहुंचाने से असातावेदनीय कर्म का बंध होता है।

४. मोहनीय कर्म—मोहनीय कर्म के कारण मानव को एक दूसरे के प्रति आकर्षण, मोह या लगाव उत्पन्न होता है। माँ को अपने पुत्र के प्रति, पत्नी को अपने पति के प्रति या भाई को अपनी बहिन के प्रति जो लगाव या मोह होता है वह मोहनीय कर्म के कारण ही होता है। मोहनी कर्म दो प्रकार का होता है।

(अ) **दर्शनमोहनीय कर्म** दर्शनमोहनीय कर्म के कारण मनुष्य को अच्छे ज्ञान व संयम की प्राप्ति होती है। इस कर्म के कारण मनुष्य सत्य व असत्य के वास्तविक ज्ञान को समझने लगता है।

(ब) **चरित्रमोहनीय कर्म**—संसार के सारे वैभव को त्यागकर, जो आत्मा की साधना करे उसे चरित्र धर्म कहते है उस चरित्र को अंगीकार करने में जो बाधा डालता है उसे चरित्रमोहनीय कर्म कहते है।

५. आयुण्य कर्म—जो कर्म आत्मा को नियत समय तक एक ही शरीर में रोके रखता हो उसे आयुण्य कर्म कहते है। यह कर्म चार प्रकार का होता है—

(अ) नरकायुण्य (ब) तिर्यचायुण्य (स) मनुष्यायुण्य (द) देवायुण्य। इन कर्मो का निम्न कारणों से बंध होता है। लालसा रखने, मांस खाने, पंचेन्द्रिय जीवों को मारने आदि कार्यो से नरकायुण्य कर्म का बंध होता है। कपट करने, असत्य बोलने, कम तोलने आदि से तिर्यंचायुण्य कर्म का बंध होता है। निष्कपट व्यवहार करने, नम्रभाव होने, जीवों पर दया करने आदि से मनुष्यायुण्य कर्म का बंध होता हैं। तपस्या करने से स्वयं व गृहस्थ धर्म पालने से देवायुण्य कर्म का बन्ध होता है।

६. **नाम कर्म**—जिस कर्म के द्वारा वर्ण भेद या स्वर भेद जैसे गोरा काला या स्पष्ट अस्पष्ट की जानकारी हो उसे नाम कर्म कहते है। यह दो प्रकार का होता है।

(अ) **शुभनाम कर्म** - मनुष्य शरीर, देव शरीर, वचन से मधुरता, लोकप्रियता आदि शुभनाम कर्म के कारण होता है। यह कर्म किसी के साथ वैरभाव न रखने व शुभ कर्म करने से होता है।

ब. अशुभ नाम कार्य–तिर्यन्च, नारकीय, वनस्पति में जन्म लेना आदि अशुभ नाम कर्म है। शुभकर्म के विपरित व्यवहार करने से अशुभ नाम कर्म का बंध होता है।

७. **गोत्र कर्म**—एक राजा के यहां जन्म लेता है तो दुसरा भिखारी के यहां, एक सुखी परिवार में जन्म लेता हैं तो दूसरा दुखी परिवार में अर्थात उच्च तथा नीच का भेद जिस कर्म से होता है उसे गौत्र कर्म कहते है। ऊंचे घराने में जन्म लेना, विद्वान होना, बलवान होना, सत्यवान होना, सुन्दर होना आदि सब उच्च गौत्र के कारण है। इन सब बातों के विपरित जो कुछ होता है वह सब नीच कर्म के कारण होता है।

८. **अन्तराय कर्म**— जिस कर्म के उदय होने से इच्छित वस्तु की प्राप्ति में बाधा या रूकावट उत्पन्न हो उसे अन्तराय कर्म कहते है। दान देते हुए के बीच बाधा डालने, जिसे लाभ हो उसे धक्का लगाने, जो सेवा धर्म का पालन करे उसके बीच में रोड़े अटकाने से अन्तराय कर्म का बन्ध होता है।

इस प्रकार राग, द्वेष, मोह, माया, छल, कपट की जड़ कर्म ही है। कर्म के ही कारण आत्मा स्वर्ग या नरक में जाती है। यदि आत्मा शुभ कर्म करती हैं तो वह देव-लोक में जाती है और यदि आत्मा बुरे कर्म करती है तो वह नरक में जाती है। यह कर्म जो संसारी आत्मा ने अपने या अन्य के लिये बाधे हैं, जब इनका उदय होता है तब उसके सम्बंधी या मित्रजन उसके कर्मो में कोई भी बंटवारा नहीं करता है। जिस आत्मा ने कर्म किये है वही आत्मा उन कर्मों को भोगती है। इस प्रकार कर्मों से कोई भी नहीं जीत सकता है।

हमें स्वार्थ के वशीभूत होकर ऐसे कर्म नहीं करने चाहिये जिससे हमारी आत्मा जन्म जन्मान्तर तक नरक के द्वार छानती रहे। जो आत्मा अपने कर्मों पर विजय प्राप्त कर लेती है वह आत्मा मोक्ष में पहुँचती है। इसलिये हमें बुरे कर्म नहीं करने चाहिये ताकि हमारी आत्मा को अधिक कष्ट नहीं उठाना पड़े।

कई मनुष्य दुख को देखकर घबरा जाते है, उन्हें किसी भी प्रकार के दुख को शान्ति, गम्भीरता, अहिंसा सत्यता से निपटना चाहिये जब तक मनुष्य को कर्मों का भेद समझने में नहीं आयेगा, तब तक वह अपना भला बुरा नहीं सोच सकेगा और भाग्य भरोसे बैठा रहकर अच्छे फल की आशा करना मेरे ख्याल से अमावस्या की रात्री को चांद देखने की तमन्ना करना है। मनुष्य को सदैव परहिताय की भावना लेकर कर्म करते रहना चाहिये।
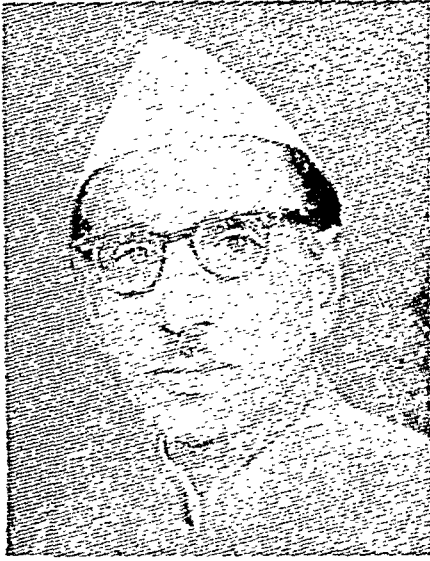
श्री नेमीचन्द जी लूणिया
सक्रिय कार्यकर्त्ता
श्री महाकौशल जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ

फोन नं. २१

❀ नेमीचन्द भंवरलाल लूणिया ❀

अनाज के थोक विक्रेता
मेन रोड़, कवरधा (म. प्र.)

श्री सैसमल जी लोढा
पड़रीया शिविर के प्रणेता जिन्होंने पड़रीया शिविर के लिये ७००१) रू० देने की घोषणा की।

फोन नं. २८

❀ श्री कुनमल सैसमल ❀

अनाज के थोक विक्रेता
पड़रीया (जिला विलासपुर) (म. प्र.)

फोन नं. ४४७

❀ चुन्नीलाल चम्पालाल कोठारी ❀

मफतलाल ग्रूप के होलसेल डीलर
— एवं —

— कोठारी ब्रादर्स —

होलसेल, हेन्डलूम, टेरेलीन, टेरीकोट वस्त्रों व
शक्ति मिल के वस्त्रों के अधिकृत थोक विक्रेता
मेन रोड़, दुर्ग (म. प्र.)

फोन नं. ५६६ पी.पी.

❀ अमरचन्द जसराज जैन ❀

हर किस्म के फेन्सी वस्त्रों के विक्रेता
सदर बाजार, रायपुर (म. प्र.)
— एवं —

— अमर इम्पोरियम —

रेडीमेड वस्त्र के विक्रेता
सदर बाजार, रायपुर (म. प्र.)

रात्रि-भोजन

— श्री बाबूलाल पड़ाईया

रात्रि भोजन का निषेध क्यों ?

आज के युग में कुछ मनचले लोग तर्क किया करते है कि "रात्रि में भोजन का निषेध सूक्ष्म जीवों को न देख सकने के कारण ही किया जाता है न ? अगर हम तेज बिजली जला लें और प्रकाश कर लें, फिर तो कोई हानि नहीं ?" बात यह है कि बिजली जला लेने से रात्रि भोजन के सम्भावित दोष तो दूर नहीं हो सकते। पहली बात तो यह है कि बिजली पर अनेक प्रकार के कीट पतंग मंडराते रहते है, वे उड़-उड़ कर भोजन में भी गिर सकते है। बहुत से सूक्ष्म जीव जो हमें आंखो से दिखाई नहीं देते भोजन के साथ पेट में चले जाते हैं।

दूसरी बात यह है कि स्वास्थ्य के लिये भी रात्रि भोजन त्याज्य माना है। सूर्य के प्रकाश में जो उष्मा रहती है वह अन्न को पचाने में सहयोगी बनती है। दिन में खाने से भोजन और सोने के समय में अन्तर भी काफी रह जाता है, और इस प्रकार अन्न को ठीक तरह पचने का अवसर मिल जाता है। रात्रि में भोजन करने वाले बहुत से लोगों की यही आदत हो गई है कि खाया और बिस्तरे पर लेटे, इससे न पूरा अन्न हजम होता है और न उसका रस ही ठीक से बनता हैं। यही कारण है कि रात्रि में भोजन करने वालों को बदहजमी और कब्ज आदि की अनेक शिकायतें होती रहती है।

त्याग-धर्म का मूल सन्तोष में है। इस दृष्टि से भी दिन की अन्य सभी प्रवृत्तियों के साथ भोजन की प्रवृत्ति को भी समाप्त कर देना चाहिये तथा सन्तोष के साथ रात्रि में पेट को पूर्ण विश्राम देना चाहिये। ऐसा करने से भलिभांति निद्रा आती है। ब्रह्मचर्य पालन में भी सहायता मिलती है और सब प्रकार के आरोग्य की वृद्धि होती है। जैन धर्म का यह नियम पूर्णतया आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दृष्टि को लिये हुए है। आयुर्वेद में भी रात्रि-भोजन को बल, बुद्धि और आयु का नाश करने वाला बतलाया है। रात्रि में हृदय और नाभि कमल संकुचित हो जाते है अत: भोजन का परिपाक अच्छी तरह नहीं हो पाता।

रात्रि भोजन से प्रत्यक्ष हानियां—

धर्म शास्त्र और वैद्यक शास्त्र की गहराई में न जाकर यदि हम साधारण तौर पर होने वाली रात्रि भोजन की हानियों को देखें, तब भी वह सर्वथा अनुचित ठहरता हैं। भोजन में यदि चींटी खाने में आ जाय तो बुद्धि का नाश होता है, जूं खाई जाय तो जलोदर नामक भयंकर रोग हो जाता हैं, मक्खी पेट में चली जाय तो वमन हो जाता है, छिपकली खा ली जाय तो कोढ हो जाता है, सब्जी आदि में मिलकर बिच्छू पेट में चला जाय तो वह तालू वेध डालता है, बाल गले में चिपक जाए तो स्वरभंग हो जाता है इत्यादि अनेक दोष रात्रि भोजन में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होते हैं।

० यह रचना शिविर विद्यार्थी की मूल कृति है।

रात्रि का भोजन वास्तव में ही खतरनाक हैं। एक दो नहीं हजारों ही दुर्घटनाए देश में रात्रि भोजन के कारण होती है। सैकड़ों ही लोग अपने जीवन तक से हाथ धो बैठते हैं।

भोजन के कुछ नियम—

भारत के प्राचीन शास्त्रकारों ने भोजन के सम्बन्ध में बड़े ही सुन्दर नियमों का विधान किया है। भोजन में शुद्धता, पवित्रता, स्वच्छता और स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिये स्वाद का नहीं। माँस और शराब आदि अभक्ष्य पदार्थों से सर्वथा घृणा रखनी चाहिये। और वह शुद्ध भोजन भी भूख लगने पर ही खाना चाहिये। भूख के विना भोजन का एक एक कौर भी पेट में डालना, अन्न का भक्षण नहीं एक प्रकार से पाप का ही भक्षण करना है। भूख लगने पर भी दिन में दो तीन बार से अधिक भोजन नहीं करना चाहिये और रात में भोजन करना तो धर्म एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से भी उचित नहीं हैं।

जैन धर्म में रात्रि-भोजन के निषेध पर बहुत बल दिया गया है। प्राचीन काल में तो रात्रि-भोजन न करना, जैनत्व की पहचान के लिये एक विशिष्ट लक्षण था। रात्रि-भोजन करने में जैन धर्म में हिंसा का दोष बतलाया हैं।

सूर्य अस्त होने के पश्चात् रात्रि के अन्धेरे में कई सूक्ष्म जीवों की उत्पति होती है और रात्रि में मनुष्य की आंखे भी निस्तेज हो जाती है। इसके कारण कई सूक्ष्म जीव भोजन द्वारा हमारे पेट में पहुंच जाते है और बड़ा ही अनर्थ कर बैठते है। जिस मनुष्य ने मांसाहार का त्याग किया है, वह कभी-कभी इस प्रकार मांसाहार के दोष में दूषित हो जाता है। बिचारे जीवों की व्यर्थ ही अज्ञानता से हिंसा होती है। और अपना नियम भंग होता हैं। कितनी अधिक विचारने की बात है।

अतः रात्रि भोजन सब प्रकार से त्याज्य है। जैन-धर्म में तो इसका बहुत ही प्रबल निषेध किया गया है। अन्य धर्मों में भी इसे आदर की दृष्टि से नहीं देखा गया है। कूर्म पुराण आदि वैदिक पुराणों में भी रात्रि-भोजन का निषेध है। महात्मा गाँधी ने जीवन के अन्तिम चालीस वर्षों में 'रात्रि भोजन त्याग' को बड़ी दृढ़ता के साथ निभाया था। यूरोप गए तब भी उन्होने रात्रि-भोजन नहीं किया। प्रत्येक जैन का कर्त्तव्य है कि रात्रि-भोजन का त्याग करें, न रात्रि में भोजन बनाए और न खाएं।

राजा शिवि का धर्म प्रेम

— श्री जगदीश छाजेड़

भारत धर्म प्रधान देश रहा है। जहाँ पर अनेक महापुरुष हुए हैं, उन्होंने समय २ पर अपने धर्म के लिये हजारों कष्ट सहे, धर्म के लिये उन्हें फांसी पर चढ़ा दिया, उनके शरीर के टुकड़े २ कर दिये तो भी वे अपने धर्म पर अडिग रहे। भारत में कई धर्म हैं जिनमें "जैन धर्म" भी एक प्रमुख धर्म हैं। जिसके मुख्य पांच सिद्धान्त है। (१) सत्य (२) अहिंसा (३) ब्रह्मचर्य (४) अचौर्य (५) अपरिग्रह। जैन धर्म इन ही सिद्धान्तों पर स्थित हैं। जैन धर्म में भी कई महापुरुष हुए हैं।

महापुरुषों में से 'राजा शिवि" भी एक थे। जिनकी यश किरणे देश के कोने२ में प्रकाश मान थी। राजाशिवि अपने धर्म पर अडिग, महादानी, अहिंसा पालक, दयालू थे। प्रत्येक जीव की रक्षा करना अपना कर्तव्य समझते थे। उनके दरवार में जो मनुष्य कुछ मांगने आ जाता था तो वह असंतुष्ट होकर कभी नहीं जाता। एक दिन देव राज इन्द्र अपनी सभा में बैठे थे और उन्होंने अपनी सभा में चर्चा की कि मानव लोक में राजा शिवी ऐसे दानी है जिनके पास जो कुछ मांगा जाता है वही दिया जाता है उनके दरवार से कोई वापस असंतुष्ट होकर नहीं जाता। इन्द्र राजा की यह चर्चा सुनकर उनकी सभा में उपस्थित दो देवताओं को राजा इन्द्र की वात पर विश्वास नहीं हुआ और वह सभा में से उठ कर राजा शिवी की परीक्षा लेने के लिये रवाना हुवे।

उनमें से एक ने कवूतर का रूप वनाया और दूसरे ने वाज का रूप। उस समय राजा शिवि अपने ध्यान में वैठे हुवे थे कि अकस्मात एक कवूतर फड़ फड़ाता हुआ उनकी गोद में आ गिरा। राजा का ध्यान टूट गया और उन्होंने कवूतर को फड़ फड़ाते हुवे देखा। उन्होंने कवूतर को हाथ में ले लिया। इतने में एक वाज उड़ता हुआ आया और कहने लगा राजा यह शिकार मेरा हैं आप इसे छोड़ दीजिये। राजा ने कहा मेरी शरण में आया हुआ प्राणी कभी वापस नहीं जा सकता। तुम इस कवूतर के वदले कोई और वस्तु माँगों। तव वाज ने कहा कि इस कवूतर के वरावर किसी मनुष्य का मांस दीजिये। तव राजा ने यह शर्त स्वीकार कर ली और तुला मंगवाकर उन्होने एक पलड़े में कवूतर व दूसरे में अपने पिण्ड का मांस काट २ कर तोलने लगे परन्तु देव लीला से दोनों पलड़े वरावर नहीं हुवे। आखिर काटते काटते वह अपने पूरे शरीर को भी उस तुला में तौल दिया परन्तु तुला वरावर नहीं हुई। उसी समय उस वाज रूपी व कवूतर रूपी देवताओं ने असली रूप प्रकट कर राजा को सारा वृतांत सुना दिया और क्षमा मांग कर उनका शरीर पूर्व स्थिति में वना कर वापिस अपने स्थान से चले गये।

इस वृतांत में राजा शिवि ने अपने आपको एक पक्षी के वदले में वली चढ़ाने के लिये तैयार हो गये। इस प्रकार एक नहीं अनेकों महा पुरुष हुवे हैं जिन्होंने समय २ पर अपने धर्म को वचाने के लिये अनेक कष्ट सहे।

— —

° यह रचना शिविर विद्यार्थी की मूल कृति है।

❀ श्री मुन्नालाल लोढ़ा ❀

रायपुर (म० प्र०)

बाड़मेर शिविर की सफलता पर
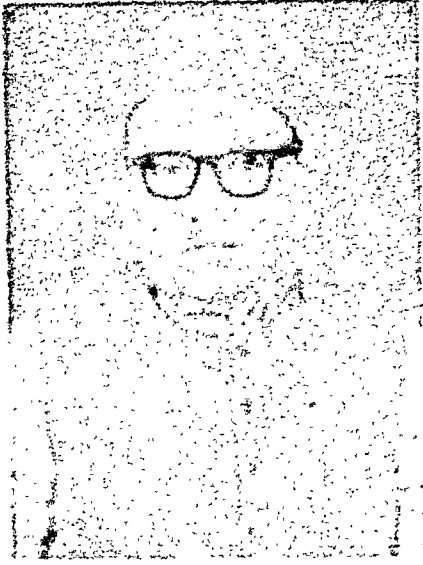
हार्दिक मंगल कामनाएं

श्री मोतीचन्दजी छल्लानी

सहमंत्री

श्री महाकौशल जैन श्वेताम्बर

मूर्तीपूजक संघ

फोन नं० ३५

❀ मोतीचन्द छल्लानी ❀

पेट्रोल, डीजल, मिट्टी तेल एवं फर्शी पत्थर के

विक्रेता

मेनरोड, गंजपारा, राजीम (म० प्र०)

श्री मीसरीलालजी लोढ़ा

उपाध्यक्ष

श्री महाकौशल जैन श्वेताम्बर

मूर्तीपूजक संघ

फोन नं० १६७

❀ जैन ब्रदर्स ❀

संचालक - लक्ष्मी राइस मील

गंजपरा दुर्ग (म० प्र०)

श्री भीखमचन्दजी मालू

अध्यक्ष

श्री महाकौशल जैन

नवयुवक परिषद

❀ विभा इम्पोरियम ❀

स्टील, पीतल, एवं कासे के बर्तन के

विक्रेता

मेन रोड, महासमुंद (म० प्र०)

'सा विद्या या विमुक्तये'

विश्व प्रेम प्रचारिका, समन्वय साधिका, प्रवर्तनी
श्री विचक्षण श्री जी म० सा०

शिक्षा मानव का भोजन है। जैसे शरीर का विकास भोजन के बिना सम्भव नहीं, वैसे ही मानव का चरित्र बिना शिक्षा के विकसित नहीं हो सकता है। शिक्षा मानव में सद्-असद् विवेक बुद्धि को जागृत करती है। बुद्धिवादी मानव बन्धन स्वीकार नहीं करता है, परन्तु शिक्षा मानव के अविवेक पूर्ण कार्यों पर प्रतिबन्ध लगाती है। शिक्षा तभी सफल कहलाती है जब उसके फलस्वरूप जीवन में सुसंस्कार उत्पन्न होते हैं। शिक्षा का उद्देश्य केवल दिमागी शक्ति का विकास ही नहीं है, दिमाग के साथ मनुष्य के दिल और देह का भी विकास होना चाहिये। कहा भी है:—

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मस्ततः सुखम्॥

विद्या मनुष्य को विनय देती है, विनीत होने से वह योग्य बनता है, योग्यता से धन प्राप्त होता है, धन से धर्म होता है और धर्म के फलस्वरूप सुख की प्राप्ति होती है।

एक छोटी-सी कहानी याद आ गई। मूसलाधार पानी बरस रहा था, सड़क पर भी पानी हो गया था। एक विद्यार्थी ने देखा कि सड़क के एक किनारे पानी के गड्ढे में एक बिच्छू तड़फ रहा है। फौरन ही उसके मन में विवेक बुद्धि जागृत हुई, मन में दया उत्पन्न हुई और उसने बिच्छू को पानी से बाहर निकालने का निश्चय किया। जितनी बार वह बिच्छू को पकड़ने का प्रयत्न करता, उतनी बार बिच्छू उसे डंक मार देता। विद्यार्थी को असहनीय पीड़ा हो रही थी, फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी और अन्त में उसने बिच्छू को पानी से बाहर निकाल कर उसके प्राणों की रक्षा करके ही दम लिया। सज्जन व्यक्ति दुर्जनों की कुटिलता को भूल कर अपनी सज्जनता का सदा परिचय देता है। जिस शिक्षा से दुःखी प्राणी को देख कर मन में दया उत्पन्न होती है, उसके कष्ट निवारण के लिये मन तड़फ उठता है, वही सच्ची शिक्षा है।

गुलाब के फूल का जीवन काँटों में बीतता है, फिर भी वह अपना स्वाभाविक गुण नहीं छोड़ता है। वह तो अपनी सुगन्ध बिखेरता रहता है। सच्चा मानव वही है जो संसार के कड़ुवे-मीठे अनुभव होने पर भी कर्त्तव्य रूपी सुगन्ध को चारों तरफ फैलता रहता है। जिस मानव को अपने कर्त्तव्य का ज्ञान नहीं है, वह जीते जी मृतक के समान है। राष्ट्र पिता गाँधीजी का जीवन हमें कर्त्तव्य पालन की बेजोड़ शिक्षा देता है। सारी सुख सामग्रियों को त्याग कर उन्होंने समाज के पिछड़े हुए, दुतकारे हुए प्राणियों के उद्धार का बीड़ा उठा लिया। भारत की करोड़ों गरीब जनता को जैसा रूखा-सूखा भोजन मिलता है, तन ढकने को जितना वस्त्र मिलता है, उतना ही भोजन करके, वैसा ही सादा तन ढकने मात्र का

कपड़ा पहन कर वे दरिद्र-नारायण की सेवा में लग गये। भारत माता की गुलामी की जंजीरों को तोड़कर उन्होंने देश को स्वतन्त्र कराया, पर सत्ता से वे सदैव दूर रहे। धार्मिक विद्वेष और धर्मान्धता के विरुद्ध वे निहत्थे नोआखाली की आग में कूद पड़े और आखिर मानवता की वेदी पर गोलियां खाकर उन्होंने अपना बलिदान दे दिया। कर्त्तव्य-निष्ठा का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है।

शिक्षा से मानव नम्र, विनीत और स्वतन्त्र बनता है। कहा भी है—'सा विद्या या विमुक्तये' विद्या वही है जो हमें मुक्ति दिलाती है। जीवन में हम कदाग्रह, रुढ़ियों, अन्धविश्वासों, अज्ञान तथा अनेक प्रकार के कुसंस्कारों के बन्धनों में जकड़े हुए हैं। शिक्षा हमें इन बन्धनों से मुक्त कराने में सहायक होती है, हमें उदार बनाती है। इसके साथ ही हमें विद्या आत्म-कल्याण का मार्ग भी दिखाती है।

अगर किसी सुवर्णकार के पास कोई व्यक्ति आभूषण बनाने के लिये सुवर्ण लाकर देता है तो वह सुवर्णकार उस सोने को बड़ी हिफाजत से रखता है और अपनी सारी कारीगरी उस आभूषण को सुन्दर से सुन्दर बनाने में लगा देता है। इसी प्रकार शिक्षक, गुरूजन भी सुवर्णकार है और शिष्य शुद्ध सोना है। पर इस सोने में एक विशेषता यह है कि यह सौना चैतन्य है, जड़ नहीं। गुरूजनों को चाहिये कि वे अपने शिष्यों को ऐसी शिक्षा दें कि वे अपने गुरूजन, माता-पिता तथा बुजुर्गों का आदर करना सीखें, सब धर्मों का सम्मान करना सीखें, सब प्राणियों पर दया, प्रेम और मैत्री भाव रक्खें तथा कर्त्तव्य-निष्ठ बन कर देश के आदर्श नागरिक बनें।

अक्सर देखा जाता है कि आज के विद्यार्थी भारतीय संस्कृति को छोड़कर पाश्चात्य संस्कृति के विकृत रूप का अन्धानुकरण करते हैं। नतीजा यह होता है कि उनके चरित्र की नींव आरम्भ से हो कच्ची और कमजोर रह जाती है। विद्यार्थी बन्धुओ ! आप अश्लील गीत सुनने और गाने के बजाय, सस्ते उपन्यास पढ़ने के बजाय, राष्ट्र-भक्ति के, ईश्वर-भक्ति के, गीत गावें और देश-विदेश के महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़कर उनसे शिक्षा ग्रहण करें। अपने जीवन के विकास का आप एक लक्ष्य बनायें और उस मंजिल तक पहुंचने के लिये निरन्तर प्रयास करते जाय। असफलता से कभी नहीं घबरावें। असफलता ही सफलता की कुंजी है।

विद्यार्थियो ! आज आप अपने को पंगु अनुभव करते हो। घर का काम-धन्धा करना, श्रम करना, आप अपनी शान के खिलाफ समझते हो। 'वाणी से ज्ञान बरसे और हाथ से पसीना टपके' इस भारतीय आदर्श को आज आप भूल गये हैं। याद रखिये, देश के नव निर्माण की इस पवित्र वेला में सफेद झक कपड़े पहनने वालों के स्थान पर मिट्टी से सने हुए हाथ वालों की आज ज्यादा प्रतिष्ठा है, ज्यादा सम्मान है। मुझे विश्वास है कि आप श्रम से शर्मायेंगे नहीं बल्कि उसे पुरुषोचित आभूषण समझ कर धारण करेंगे।

बन्धुओं। सन्तों की इस भूमि में, त्याग और तपस्या के इस देश में, इस वैज्ञानिक युग में, आपने जन्म पाया है। आज मानव ने हवा-तूफान और समुद्र पर विजय प्राप्त की है। जड़ अणु में छिपी शक्ति को प्रकट करके, विध्वंसकारी बम निर्माण करके अपने विनाश की सेज सजाई है। दूसरी ओर उसी अणु शक्ति का प्रयोग करके विश्व की गरीबी, दरिद्रता और बीमारियों को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। ऐसे युग में आपको भी भौतिक उन्नति करके देश को समृद्ध करना है, तथा साथ ही साथ अपने अन्दर छिपे हुए राम को प्रकट करना है, उस आत्म-शक्ति को जागृत करना है कि जिसके जागृत होने पर हम मानवता की सेवा करते हुए आत्म-कल्याण कर सकेंगे।

याद रखिये, आपको असत्य में से सत्य में जाना है, अन्धेरे से प्रकाश में जाना है, विकार में से निर्विकार में जाना है। आपको मेरा यही आशीर्वाद है कि आप एक आप एक आदर्श विद्यार्थी बनें, आदर्श माता-पिता बनें, आदर्श नागरिक बनें और मानवता के पुजारी बनें।

०—०

भगवान महावीर और जैन धर्म

— श्री बाबूलाल जैन

जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का जन्म विहार में वैशाली गणराज्य के पास कुण्ड ग्राम में ५९९ ई० पू० में हुआ था। उनके पिता का नाम सिद्धार्थ था और वे वैशाली के अधिपति थे। इनकी माता त्रिशला लिच्छिवी वंशी की थी। भगवान महावीर का वचपन का नाम वर्धमान था। इनका लालन पालन बड़े लाड प्यार से हुआ। और बड़े होने पर इनकी शादी यशोदा से की गई। शादी के पश्चात् उनके एक लड़की उत्पन्न हुई, जिसका नाम प्रियदर्शना रखा गया। भगवान महावीर का मन सांसारिक मोह माया में नहीं लगता था। इस संसार रूपी सागर से पार होने के लिए उनके मन में एक भावना प्रस्फुट्टीत हुई, जो वैराग्य की भावना थी। धीरे धीरे वैराग्य की भावना बढ़ने लगी और तीस वर्ष की आयु में उन्होंने अपना गृहस्थ जीवन त्यागकर संयम जीवन पर चलने के लिए अपने भाई नन्दिवर्धन से आज्ञा मांगी। नन्दिवर्धन ने माता पिता के वियोग के कारण महावीर को आज्ञा नहीं दी भगवान महावीर भाई नन्दिवर्धन की आज्ञा से दो वर्ष तक साधुवत संसार में रहे। ज्ञान प्राप्ति के लिए बारह वर्ष की कठिन तपस्या की और इन्होंने कई संकट सहे। जैसे:-ग्वाले द्वारा कानों में कीले ठोकना, सर्प द्वारा डंसना आदि। फिर इस तपस्या के बाद में ऋजुपालिका नदी के तट पर इन्हें केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई। केवल ज्ञान प्राप्ति के कारण वे अरहंत, सिद्ध निर्ग्रन्थ व महावीर के नाम से पुकारे व जानें मानें जाते हैं। सत्य का ज्ञान होने पर, महावीर ने अपने ज्ञानमय दीपक को लेकर करीब ३० वर्ष तक जनता को सही मार्ग का अनुसरण करवाया। उन्होंने भारत के कौने २ में घुम घुम कर उपदेशों के माध्यम से अहिंसा व अपरिग्रह का प्रचार किया। इस कार्य में भी कई कष्ट झेलनें पड़े। लेकिन यह कष्ट एक युग पुरूष की तीव्र गति को मंद गति में परिणित नहीं कर पाये। इनके उपदेश से सारे विश्व में अहिंसा का झण्डा लहरा उठा। अन्त में पटना में ५२७ ई, पु. में ७२ वर्ष की अवस्था में भगवान महावीर को मोक्ष की प्राप्ति हो चुकी थी। लेकिन उनके मोक्ष पधारने पर उन्होंने अपने ज्ञानमय दीपक को प्रज्वलित रखने के लिए अपने पीछे करीब १४ हजार शिष्य छोड़ गए।

(१) महावीर की शिक्षाएं:—जो भी मनुष्य सत्यज्ञान की खोज करने में तत्पर रहता है। वो महापुरूष समस्त संसार का शिक्षक माना जाता है। वह अपने सरल जीवन दया की भावना, करूणा, गम्भीरता तथा सत्यज्ञान से समस्त समाज पर अपना प्रभाव उत्पादित कर सकता है। फिर उसकी बातें सभी लोगों के लिए, जीवन को सफल बनानें के लिए स्थायी रुप धारण करती है। भगवान महावीर भी ऐसी सत्य ज्ञान की खोज करने वाले थे। उन्होंने उपदेशों द्वारा जनता को नहीं बल्कि आने जाने वाले कई युगों मानव सभ्यता को सही मार्ग बताया।

(१) **आत्म संयमः** – महावीर ने बताया कि सभी दुःख सुख का कारण मनुष्य की आत्मा है। वह अपनी आत्मा पर विजय प्राप्त कर सकता हैं, और आत्मा को भी अपने ज्ञानेन्द्रियों द्वारा वश में कर लेने के पश्चात् मनुष्य काम, क्रोध, मोह, माया आदि से छुटकारा पा लेता है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए महावीर ने त्रिरत्न का बोध कराया है जो (१) सम्यक ज्ञान (२) सम्यक दर्शन (३) सम्यक चरित्र

(२) **पांच आचरणः**—आत्मा को वश में रखकर जीवन को सही रूप में परिणित करने के लिए गृहस्थी लोगों के लिए पांच नियम बताये हैं (१) अहिंसा (२) सत्य (३) अस्तेय (४) अपरिग्रह (५) ब्रह्मचर्य

अहिंसा भगवान महावीर का प्रमुख मूल मन्त्र था। उनके अनुसार धर्म भी आत्मा है। अहिंसा का अर्थ किसी जीव की हिंसा करने से नहीं बल्कि प्राणिमात्र के प्रति समानता, दया और उपकार की भावना से है। मन

° यह रचना शिविर विद्यार्थी की मूल कृति है।

वचन और कर्म से किसी के लिए अहित की भावना नहीं रखना ही वास्तविक अहिंसा है। अहिंसा के साथ सत्य वचन पर भी जैन धर्म को बाध्य किया गया है। जो व्यक्ति संसारिक वस्तुओं का संग्रह नहीं करता वह इस माया से मुक्त रहकर सत्य भाषण कर अहिंसा का पालन कर सकता है।

(३) **तपस्याः**—इन पांचों अच्छाइयों को प्राप्त करने के लिए महावीर ने कार्मकाण्ड, यज्ञ का सहारा लेने की बातों को उपयुक्त नहीं माना। इसके विपरित उन्होंने तपस्या पर अधिक जोर दिया। तपस्या के द्वारा ही मनुष्य को कष्ट सहन की शक्ति पैदा होती है। जिससे विनम्रता, सेवा व क्षमा की भावना तथा उचित कर्तव्य के विचारों का विकास होता है। महावीर ने तपस्या का सर्व सुलभ साधन उपवास बताया है। जिससे शारीरिक एवं आत्मिक शुद्धि होती है।

(४) **पुनर्जन्म तथा कर्म वादः** आत्म शुद्धि कर नैतिक उत्थान करने की आवश्यकता के पीछे महावीर की मान्यता थी जब तक व्यक्ति आत्मा से शुद्ध नहीं बन पाता तब तक उस कर्मों के अनुसार बार २ जन्म मृत्यु के चक्र में घुमता रहता है।

महावीर स्वामी की यह शिक्षाएं अत्यन्त सरल व सुविधा जनक थी। अतः समाज पर इसका काफी प्रभाव पड़ा। कई जातियों के लोग इनके उपदेशों का पालन कर इनके अनुयायी बनें। इतनी सरल व सीधी होंने पर भी यह जैन विचार धारा उस युग में अधिक प्रचलित नहीं हो सकी। फिर भी थोड़े राजाओं का संरक्षक मिलने पर इसका थोड़े समय तक प्रभाव बढा। लेकिन वह भारत से बाहर नहीं जा सकी। आज भी भारत में महावीर स्वामी द्वारा प्रसारित जैन धर्म के करोड़ों मतावलम्वी विद्यमान है। और विदेशों में भी आज जैन धर्म फैल रहा है। साथ ही साथ इस विचार धारा ने भारत में साहित्य तथा कलात्मक दृष्टि से विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

ये थे भगवान महावीर और जैन धर्म। हमको भी इसी महापुरूष के बतलाये गये रास्तों पर चलकर आगे बढना चाहिए जिससे हम अपनी आत्मा का कल्याण कर मोक्ष की प्राप्ति कर सकते है।
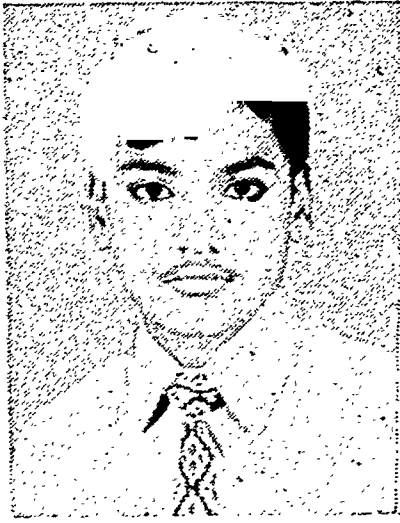
समाजवादी भगवान महावीर

— ओमप्रकाश बांठिया

देश में अशान्ती विषमता, उत्पीड़न की ज्वाला उग्र रूप से भड़क कर देश वासियों का सामान्य जीवन अस्त व्यवस्त कर रही है। प्रत्येक व्यक्ति घाणी के बैल की भांति स्वार्थ की पट्टी अपनी आंखों पर बांध कर स्वार्थी जहाँ में चक्कर लगा रहा है। एक दूसरे के प्रति आज सबके दिलों में घृणा, द्वेष, इर्ष्या व शोषण के अंकूर फूट रहे हैं, व्यक्ति अपने लिए औरों के हक छीन रहा है, वह दूसरे के दोषों पर तो अंगुली उठाने का साहस कर लेता है, लेकिन इससे पहले कि वह अपने भीतर देखे कि वह कितने तुच्छ विचारों का व्यक्ति है। इसके लिए उसके पास समय नहीं है। भौतिकता की चकाचौंध रोशनी से उसकी आंखे चुंधिया गई है, फिर भी व्यक्ति आध्यात्मिकता को छोड़, भौतिकता की ओर आकर्षित होता जा रहा है, परन्तु हर चमकने वाली चीज सोना नहीं होती, आज तो कांच भी स्वयं को हीरा बताता है।

इस प्रकार गलत राहों पर भटकता राही सही मंजिल की तलाश में तो है, लेकिन सही मंजिल तक पहुँचने के लिए उसे उन महापुरूषों की बातों पर आचरण करना होगा, जो बाते उन्होंने दुनियाँ मन्थन के बाद अमृत के प्याले की भांत्ति खोज निकाली है और उस अमृत को पीना इतना सहज नहीं है, इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को उस का मनन करना होगा, उसका आचरण करना होगा और बाद में ही वह सफलता पा सकता हैं।

जब कभी भी समाज में भयंकर विषमता, संकट, चारित्रिक पतन होता है, तब तीर्थंकर अवतार, महापुरूष आदि का अनेक रूपो में पृथ्वी पर अवतरण होता हैं। जो इन धधकती ज्वालाओं से जन-जन को शीतलता दिलाते है। आज से २५०० वर्ष देश में चमकता ज्ञान का सितारा, त्रिशला का राजदुलारा सिद्धार्थ की नैनो का तारा, महलों का हीरा युग प्रवर्तक, समाजवादी, क्रान्तीकारी भगवान महावीर का धरती पर अवतरण हुआ था, उस समय न केवल मानव लोक बल्कि देव लोक में भी जन्म महोत्सव मनाये गये।

भगवान महावीर अपने समय की समाज व्यवस्था के स्वरूप से दु:खी होकर जीवन व जगत की समस्याओं पर गम्भीर चिन्तन व मनन करने के उद्देश्य से राजसी ठाट-पाट को त्याग कर, सत्य की खोज के लिए कठोर तपस्या व साधना के माध्यम को लेकर चल पडे। हांलाकि उस समय आज के मुकाबले में सामाजिक विषमता, उत्पीड़न भी कम थी, लेकिन फिर भी उस महापुरूष, महान ज्ञानी ने समाज को दु:खों का सागर समझकर, आत्मोत्थान के लिए एक नया मार्ग अपनाया।

भगवान महावीर ने इस बात पर जोर दिया कि "परिग्रह" ही दु:खों की जड़ है और हिंसा चाहे वह कितनी भी सुक्ष्म क्यों न हो, इससे बचना चाहिए। हिंसा के अनेक रुप होते है, यह जरुरी नहीं हैं कि तन से ही हिंसा होती है, बल्कि हिंसा मन से भी होती है, किसी को कटु वचन बोलना, किसी का हक छीनना इत्यादि। महावीर ने बताया कि आप ऐसा व्यवहार, कार्य कीजिये जैसा की आप अपने प्रति चाहते हो। जितनी परिग्रह,

हिंसा में वृद्धि होगी, उतनी ही अधिक विषमता, अशान्ति होगी। दौलत सबको चाहिए, सब जीना चाहते है और सब को पेट भर खाना चाहिए फिर क्यों एक दूसरों का हक छीना जाए ? क्यों अपने स्वार्थ के खातिर लाखों लोगों को मौत के घाट उतारा जाय ?

सच्चा समाजवाद वही है कि सबको दौलत, पेट भर खाना चाहिए, लेकिन दूसरों का हक छीनकर या मार कर नहीं। वास्तव में समाजवाद की सर्व प्रथम उद्घोषणा करने वाले भगवान महावीर थे। और वास्तव में उन्होंने इस राह पर चल कर अपनी कथनी व करनी को साकार करके दिखाया। उन्होंने राजसी वैभव को ठुकरा कर जनता की वाणी में जनता को सच्चे समाजवाद पर चलने की राह बताई। आपने कहाकि जितना "अपरिग्रह" आयेगा, समता भाव बढेगा। हिंसा जिसका दूसरा नाम शोषण है उसका नाश होगा और सब एकता के कच्चे धागे में बंध जायेंगे। सत्य, अहिंसा, प्रेम की गंगा घर-घर बहने लगेगी, यहीं भगवान महावीर के मूल संदेश थे।

लेकिन। आज देश के सामने जो तस्वीर है, वह बड़ी ही चिन्तनीय तथा दुःखप्रद है, कारण कि महावीर के अनुयायी ही बड़े परिग्रही बने हुए है। मिलावट, कालाबाजारी, धोखा, भ्रष्टाचारी, चोरी, विश्वास घात, शोषण आदि कई तरीकों से व्यापारी वर्ग लाखों की सम्पति जमा कर, लोगों का हक छीन रहे है, वास्तव में या तो वे महावीर के अनुयायी बनकर स्वयं को छल रहे है ? या भगवान को धोखा दे रहे है।

अतः अब वह समय आ गया है जब हमें आपसी वैर, द्वेष, घृणा, शोषण के नाशक तत्वों का समूल नाश करना है तथा प्रेम, भाई चारे, स्नेह की पावन गंगा बहानी है, और तभी हम महावीर के अनुयायी कहलाने के लायक बन सकेंगें।

भगवान महावीर ने २५०० वर्ष पूर्व जो उपदेश अपनी दुरदर्षिता की दृष्टि से सोच समझ कर दिये थे, यदि हम उन पर अमल करके आचरण में उतारने का प्रयास करेंगे, तब ही भगवान महावीर के उपदेश साकार रुप लेकर देश को उज्जवल बनाने में सहयोगी बनेगें। समाजवादी महावीर ने सच्चे समाजवाद की दिशा में अपरिग्रह व अहिंसा के जो दो महत्वपूर्ण मार्ग बताये हैं। उस पर चल कर ही देश में सच्चा समाजवाद स्थापित किया जा सकता है और तभी देश में प्रेम की गंगा निरन्तर बहेगी। विषमता के अन्धकार पूर्ण वातावरण को चीरते हुए प्रेम की प्रज्वलित किरण समक्ष आकर अन्धकार का नाश करेगी और राष्ट्र अहिंसा, शान्ति, सत्य का अग्रदूत होगा।

महावीर स्वामी की विश्व को देन

— श्री मांगीलाल वडेरा

बाड़मेर नगर में भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण महोत्सव समिति द्वारा महावीर जयन्ती अप्रेल १९७४ पर "महावीर स्वामी की विश्व को देन" लेख प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें यह रचना प्रथम रही। प्रतियोगी की यह मूलकृति है।

अवसान सभी का होता है, अवसान किसका नहीं होता, परन्तु अवसान वही दिव्य है जो अपने पीछे संध्या की लालिमा छोड़ जाता है, रात के सितारे चमका जाता है तथा भौर की आशाओं के उजाले दे जाता है। विश्व रूपी वगीचे में मानव रूपी फूल खिलते है, मुरझाते है और समाप्त हो जाते है, परन्तु याद रह जाते है जो राष्ट्र रूपी क्यारी ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व, सारी मानव जाति का कल्याण कर जाते हैं। विखरा जाते है। अपनी महक सम्पूर्ण वगीचे में। भगवान महावीर एक ऐसे ही फूल थे जिन्होंने विश्व को नई राह दी।

आज से कोई २५०० वर्ष पहले जव भारत की वसुन्धरा पाप भार से कांप उठी थी। धर्म, गुरू, पुरोहित जिसे जनता धर्मावतार मानती थी उन्हीं के मुख रक्त लोलुप हो उठे थे। स्वर्ग, मुक्ति, यश आदि के प्रलोभन देकर यज्ञ करवाते थे तथा पत्तों में धन धान्य, पशु वलि और मानव वलि तक देते थे। अत्याचार, अनाचार, आडम्बर चारों ओर व्याप्त थे। खोपड़ी की मशाले जलाकर रथों की दौड़ की जाती थी, नृशसंता का नंगा नाच होता था। सन्तोष, संयम, समभाव मात्र दिखावा वनकर रह गये थे। भाई २ के खून का प्यासा था। युद्ध व हिंसा आम वात हो गई थी। अमीर रंगरेलियाँ मना रहे थे,गरीव भूख से पीड़ित थे। वर्ग भेद, आर्थिक विपमता का साम्राज्य चहुँ ओर फैला था ऐसे समय में भगवान महावीर ने ५९९ ई० पूर्व वैशाली के निकट कुण्डलपुर में जन्म लेकर विश्व का पथ प्रशस्त किया। समता व विश्व वन्धुत्व हेतु विश्व के समक्ष निम्न आदर्श सिद्धान्त रखे—(१) अहिंसा (२) सत्य (३) अस्तेय (४) ब्रह्मचर्य (५) अपरिग्रह।

पशुवध, हिंसा की लपलपाती आग व युद्धों के विरुद्ध महावीर ने अहिंसा का सन्देश विश्व को दिया। आज विश्व फिर से विनाश की कगार पर खड़ा है। प्रत्येक राष्ट्र अस्त्र-शस्त्रों की होड़ में लगा है। विश्व की स्थिति उस भरी वन्दूक के सामने है जो कभी भी छूट सकती है। मनुष्य का भविष्य अनिश्चित है। विश्व युद्ध का पल २ खतरा वना है। ऐसे में भगवान महावीर का अहिंसा का सिद्धान्त ही विश्व के विनाश को वचा सकता है। अहिंसा-किसी की हिंसा न करना, हिंसा में सहयोग न करना, किसी के मन तक को कष्ट न पहुंचाना, दूसरों के प्रति वही व्यवहार करना जो हम अपने प्रति चाहते है। इसी अहिंसा के सिद्धान्त पर विश्व शान्ति, विश्व वन्धुत्व की भावना निर्भर करती है।

झूठे आडम्वरों के विरुद्ध भगवान महावीर ने सत्य पथ प्रशस्त किया। आज चारों ओर झूठे आडम्बर, दिखावा फैला हुआ है। राजनीति के झूठे हथकण्डे वार २ विश्व को अशान्ति की आग में धकेलते जा रहे है। झूठ आज के मानव परिवेश में घुल सा गया है। ऐसे में अगर सत्य का सिद्धान्त विश्व के सामने रखा जाय, लोग भगवान महाहीर को याद करें झूठ न वोलने की प्रतिज्ञा करें तो विश्व का हित हो सकता है।

मिलावट, चोरी, डाके आदि के विरोध में अस्तेय का सिद्धान्त। आज के जन जीवन में मिलावट, चोर वाजारी, रिश्वत खोरी आदि आम वात हो गई। सफेद वस्त्रो में छीपे आधुनिक समाज के अथाह चेहरे क्या? आज यह कहे तो अतिशयोक्ति न होगी कि विश्व, राष्ट्र व

समाज चोरों का रंगस्थल बना हैं। ऐसे में भगवान वर्द्धमान के उपदेश ही विश्व को सही राह, एक किरण सी प्रदान करते है।

वासना के कुठाराघातों, सांसारिक रंगरेलियों के विरुद्ध भगवान महावीर ने ब्रह्मचर्य का सिद्धान्त दिया। आधुनिक जवान, जवानी के नशे में अपने मूल स्वरूप को भूलकर इन भोग विलास में शान्ति खोजता हैं। उन्हें भगवान महावीर का ब्रह्मचर्य का सिद्धान्त उनका दृढ शील नई दिशा में सोचने हेतु मजबुर कर देते है।

आज मनुष्य परिग्रह में लगा है। वस्तुओं के संग्रह होने के कारण विश्व में वस्तुओं का कृत्रिम अभाव सा पैदा हो गया है इसके विरुद्ध वीर ने अपरिग्रह का सिद्धान्त दिया। अपरिग्रह से ही विश्व को नई प्रकाशधारा प्राप्त होती है।

अनेकान्तवाद विचार व स्याद्वाद की भाषा:—महावीर ने विश्व के समुख एक नया विचार रखा अनेकान्तवाद का विचार अर्थात प्रत्येक वस्तु चाहे जड़ हो या चेतन, उसको अलग २ पहलूओं से देखने पर अलग २ अर्थ निकलते हैं। उदाहरणार्थ–राम दशरथ के पुत्र थे तो दूसरे पहलू में सीता के पति, लव कुश के पिता, लक्ष्मण के भाई भी थे। अत: अगर एक पहलू को लेकर आपस में झगड़ा जाय तो गलत है। इसी विचार को प्रस्तुत करने हेतु उन्होंने स्याद्वाद की भाषा का सिद्धान्त दिया। स्याद्वाद अर्थात एक ही पहलू पर न अड़कर दूसरे की बात भी सत्य मानना तथा उस पर विचार करना। केवल में ही सही हूँ को छोड़कर दूसरे को भी सुनना व भाषा में अपेक्षा शब्द का प्रयोग करना ही स्याद्वाद की भाषा है।

आध्यात्मिक देन:—आज मनुष्य मायादेवी के जाल में फंसा, मोह, माया, भोग विलासों की चमक से चकाचौंध होकर अपने अस्तित्व को भूल सा गया है। वह इन भौतिक सुखों को ही सर्वस्व मानने लगा हैं। इन्हीं में शान्ति की खोज करता है, सुख ढूंढता परन्तु अपनी आत्मा को अपने अन्तर को कभी नहीं टटोलता है जिसमें प्रकाश है जिनपर कर्म की शाख अवश्य लग गई है। परन्तु वह उसे राख की परत का भोग विलास में खोया गहरा करता जा रहा हैं। ऐसे पथ से भटके मानव के लिए भगवान महावीर ने कर्मवाद व आत्मा का सिद्धान्त दिया। महावीर ने कहा शान्ति मन में है, अन्तर में है, बाह्य सुख तो केवल मृग तृष्णा है एक धोखा है। छलावा मात्र है। इस प्रकार विश्व को नया आध्यात्मिक चिन्तन की नई दिशा देने वाले भगवान महावीर को शत् २ प्रणाम है।

आज विश्व पीड़ा संतृप्त है। घृणा, हिंसा, पशुता आदि विश्व रंगमंच पर नृत्य कर रही है। विश्व के सम्पन्न देशों के सम्पन्न नागरिक भी आज अशान्त हैं। भौतिक सुखों से वे अब उब चुके है। चरच, गांजे, एल.एस. डी. आदि में आज के अशान्त नवयुवक सुख की खोज कर रहे हैं। विश्व शान्ति एवं आध्यात्मिक शान्ति हेतु अब भारत ही एक ऐसा राष्ट्र है जिस पर सारे विश्व की नजर हैं। और २५०० वी महावीर निर्वाण महोत्सव पर भारत विश्व को क्या आत्मिक शान्ति,महावीर की देन फिर से दे पाता है। यह अब देखना है। परन्तु इस हेतु हम सबको फिर से दोहराना होगा महावीर के सिद्धान्तों को तथा प्रतिज्ञा करती होगी कि हम महावीर के सिद्धान्तों का अनुसरण कर विश्व को नई राह देंगे, तभी महावीर निर्वाण की २५०० वीं निर्वाण महोत्सव सफल होंगा।

२५०० निर्वाण महोत्सव पर हमें प्रतिज्ञा करनी होगी,
महावीर के सिद्धान्त फैलाकर विश्व शान्ति करनी होगी॥

भगवान महावीर का जीवन चरित्र

श्री पुखराज छाजेड़

बाड़मेर नगर में भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण महोत्सव समिति द्वारा महावीर जयन्ती अप्रेल १९७४ पर "भगवान महावीर का जीवन चरित्र" लेख प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें यह रचना प्रथम रही। प्रतियोगी की यह मूलकृति है।

इतिहास की कसौटी पर परखा हुआ चिरन्तन यह है कि जब जब इस संसार में पापाचार, दुष्टाचार, भ्रष्टाचार, अनाचार और अत्याचार बढ़ता है। पार्थिव एषणाओं के चक्कर में मानव मानव को भूल जाता हैं। अधर्म धर्म का परिधान पहन कर जन-गन मन को भुलावें में डाल देता हैं। धर्म परायण जनता कष्ट पाती हैं और अत्याचारी व पापी लोग आनन्द लूटते हैं। तब कोई महान् आत्मा सोई हुई जनता के भाग्य जगाने के लिये सुख-शान्ति और समानता का महा पाठ पढ़ाने के लिये मानवों के निराशा मय जीवन में नव्य आशा, नया जीवन और नया उत्साह फूंकने के लिये इस धरावम पर जन्म लेता है।

आज से २५०० वर्ष पूर्व इसी शाश्वत सत्य को दोहराया गया था। तब ब्राह्मण और पण्डित लोग अपने मन गरन्त सूत्रों के द्वारा गरीब और निरीह जनता तथा पशुओं पर अत्याचार करते थे। कामुकता, वासना, विलासिता और आडम्बर अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया था। पशु-बलि अपनी परम्परा लांघ चुकी थी। पग पग पर रूढ़ियां और कुरितियां गले का सिरताज बन गई थी। संक्षेप में महान् आत्मा के जन्म का समय परिपक्व हो गया था। जनता का मन और पशुओं की निरिह आंखे किसी महान् आत्मा के आगमन की अपलक प्रतिक्षा कर रही थी।

ऐसे समय में भगवान महावीर का इस धरावम पर प्रादुर्भाव हुआ जब असत्य की काली कालिमा सत्य पर पोत दी थी। धर्म के ठेकेदार मांस वगैहरा खाकर आनन्द मनाते थे।

ईसा ५९९ वर्ष पूर्व क्षत्रिय कुण्ड नगर में राजा सिद्धार्थ राजा राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम त्रिशला था। जब भगवान महावीर की देवलोक से च्युत होकर माता त्रिशला की कुक्षी में प्रवेश किया तब माता त्रिशला ने १४ दिव्य स्वप्न देखे। जिनका परिणाम स्वप्न पाठकों ने इस प्रकार बतलाया कि सिद्धार्थ के घर ऐसा कुल दीपक पुत्र होगा जो अपनी गौरम-गरिमा व महा उज्जवल आदर्शों के प्रकाश से विश्व रंग मंच को महोज्जवल करके समस्त संसार का कल्याण साधन करेगा।

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के पावन दिन त्रिशला की कुक्षी ने एक तेजस्वी पुत्र-रत्न को जन्म दिया। राजा व प्रजा ने समाचार सुना तो उनके हर्ष का आरोपार न रहा। नगर में अनेक दिन महोत्सव मनाये गये तथा बड़ी धूमधाम के साथ पुत्र का नाम वर्धमान रखा गया।

शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की भाँति वर्धमान कुमार बढ़ने लगे तथा साथ ही उनकी वीरता, धीरता, गम्भीरता और शिष्टता आदि सद्‌गुणों का परिचय भी लोगों को होता गया।

एक बार वर्धमान कुमार अपने हम जोली साथियों के साथ खेल रहे थे तभी एक विकराल सर्प दिखाई दिया। सभी बालक चीखने-चिल्लाने लगे और इधर उधर भागने लगे। तब वर्धमान ने उस नागराज को उठा कर दूर फेंक दिया। तब से वे "महावीर" नाम से प्रसिद्ध हो गये।

महावीर बचपन से ही चिन्तनशील और मननशील प्रकृति के थे। वे हमेशा घन्टों अपनी और जनता की

परिस्थिति पर मनन करते रहते। उनको इस तरह चिंतामग्न देखकर उनके माता-पिता बड़े चिन्तित होते। उन्होंने जल्दी ही उन्हें प्रणय वन्ध में वांधने का प्रयत्न किया और समरवीर राजा की पुत्री यशोदा से उनका विवाह हो गया।

महावीर एक राज कुमार थे। सुख वैभव व भोग विलास उनके चारों तरफ विखरा पड़ा था। माता-पिता का वात्सल्य, भाई का भातृत्व, रानी यशोदा, दास-दासी सव कुछ था लेकिन महावीर इस भोग भरे वातावरण में भी अतृप्ति का अनुभव करते, सोचते, सच्चे सुख का मार्ग कोई और ही हैं। आदि-आदि।

एक दिन इन्होंने भाई नन्दीवर्द्धन से प्रव्ज्या का प्रस्ताव रखा। जिससे उन्हे वड़ा आघात लगा। तथा उन्हे वहुत समझाया।

भाई की आज्ञा को वहुमान देते हुए महावीर २ वर्ष और गृहस्थाश्रम में रहे। पर संसार-वासना से पूर्ण अछूते। आखिर भाई ने उन्हे अनुमति दे दी।

मार्गशीर्ष कृष्णा दशमी के दिन महावीर अपनी जवानी, घर-वार, राज-पाट सव कुछ छोड़ कर निर्जनवनों में आत्म मंथन के लिये निकल पड़े।

महावीर का साधना काल में अतीव दुख और कष्टों की विकल घाटियों में से गुजरना पड़ा। उनके साधना काल का जीवन का वर्णन इतना रोमांचकारी है कि सुन कर तन,मन,नयन सहर उठे। उनकी सत्य,अहिंसा की उत्कृष्ठ परिपालना, व्रह्मचर्य की अटल साधना, खान-पान पर अद्भुत संयम, अज्ञानी जनता व जंगली पशुओं के प्राणहारी उपसर्ग और उत्पात सव कुछ सहन करते थे।

कभी उस पहाड़ी गुफा में, कभी शिखर पर तो कभी निर्जन वन में, कभी खुले मैदान और शुन्यागार में [illegible] वे आत्म मंथन में लीन-तल्लीन रहते।

एक वार में एक विषैले सर्प की वाम्वी के पास ध्यानस्थ हो गये। सर्प ने आकर भगवान के चरण पर डंस मारा। वहां से दूध की धारा वह निकली, सर्प सम्व में पड़ गया। तभी उसे अमृतमय वाणी सुनाई दी और उसे पूर्व भवों का ज्ञान हुआ। उस दिन से उसने किसी को भी काटना छोड़ दिया।

महापुरुषों की दिव्य दृष्टि केवल मानव समाज तक ही सिमित नहीं रहती परन्तु जीवमात्र के लिये उनकी करुणा दृष्टि होती है।

वैशाख शुक्ला दशमी को भगवान महावीर जाम्यिव के ग्राम पास ऋजुवालुका नदी के तट पर मौन आत्म साधना में तल्लीन थे। मन के सारे मैल धुल चुके थे। साधना अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई थी। अतः महावीर को केवल ज्ञान और केवल दर्शन की प्राप्ति हुई। चार घाती कर्मो का नाश हुआ। जैन संस्कृति की भाषा में वे केवली अर्हंत या जिन हो गये।

महावीर ने सोचा इस समय पावापुरी में महान अंधकार हैं और धर्म की हानि हो रही हैं। अतः मुझे सर्व प्रथम वहां जाना चाहिये। वहीं भगवान का समवसरण लगा। इन्द्रभूतिगौतम भगवान से शास्त्रार्थ करके उन्हें अपने ज्ञान से कायल वनाने की भावना से भगवान के पास पहुँचे। भगवान ने उनकी शंकाओं का समाधान किया तथा निग्रन्थ धर्म का उपदेश दिया। जिससे इन्द्र-भूति गौतम, अनेक ब्राह्मण और अन्य जनसाधारण प्रतिवोधित हुए। अनेकों ने प्रव्ज्या ग्रहण की। अनेकों ने श्रावक धर्म स्वीकार किया। इस तरह भगवान के चतुर्विध संघ की स्थापना हुई।

भगवान महावीर सत्य के प्रखरवक्ता थे। असत्य का विरोध और सत्य का प्रतिपालन करने में किसी के साथ रियायत करना उनकी नीति के विरूद्ध था।

भगवान केवल ज्ञान के पश्चात ३० वर्ष तक अनेक ग्रामों व नगरों में धर्म का प्रचार करते रहे। उनके प्रयत्नों से अनेक भव्य जीवों ने धर्म आराधना करके अक्षय अमर पद प्राप्त किया।

अन्तिम वर्षावास भगवान ने पावापुरी में किया। ३॥ मास व्यतीत हो चुके थे। कार्तिक अमावस्या की प्रभात वेला थी। स्वास्ति नक्षत्र का योग चल रहा था। भगवान ने पदम से अपनी मृत्युनजय वानी की अजस्व

धारा बहाते रहे। हजार हाथ भर कर के आत्म ज्ञान की सम्पति लुटाते रहे। अपनी अन्तिम सांस में भी ज्ञान किरनों का विकीरण करते हुए वे समाविष्ट हो गये। उनका निर्वाण हो गया। अर्थात आत्म शान्ति। पूर्ण शान्ति ।। अक्षय, अजर, अभर व अविनाश पद की प्राप्ति।

आज महावीर की ज्ञान साधना की सुलगति चिनगारी हमें आज भी दानवी हिंसा, सामाजिक विषमता, अन्याय अनीति, शोषण और स्वार्थ परता के नग्न ताण्डव को भूमिसात् करने के लिये सजीव प्रेरणा दे रही है। आवश्यकता है, भौतिकता की चकाचौन्धता का चश्मा उतार कर निर्मल दृष्टि से देखने की। उनका जीवन चरित्र अध्ययन या पढ़ने की वस्तु न होकर उनकी ज्ञान साधना से एक चिनगारी लेकर उसे अपने जीवन में विराट रूप देने की।

वाड़मेर का श्री पार्श्वनाथ जिनालय

श्री वशीधर वोहरा

भारत की संस्कृति के विकास में धार्मिक भावनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। धार्मिक भावनाओं के विशिष्ठ दृष्टि कोण के कारण भारत में हिन्दू और जैन धर्म ने विशेष प्रगति की। कई धार्मिक स्मारक आज भी भारत की गौरव गरिमा को अपनी गोद में संजोय हुए हैं।

राजस्थान का पश्चिमी भूखण्ड जहां विहड़रेतीले टीवों में प्राचीनकला कौशल के भगनावशेष आज भी धार्मिक दृष्टिकोण से दर्शनीय है। जोधपुर से वाड़मेर तक जाने वाली रेल मार्ग पर वाड़मेर मुख्य एवं बड़ा रेलवे स्टेशन है। जहाँ से मुनावा को रेल मार्ग जाता है। वाड़मेर जिला मुख्यावास होने के कारण यहां कई स्थानों के लिये बस यातायात की व्यवस्था है। जैन यात्री और भ्रमणकारियों का दल जैसलमेर की यात्रा का आनन्द लेकर वहाँ से प्रसिद्ध जैन तीर्थ नाकोड़ा के दर्शनार्थ आते है तो जैसलमेर से १०० मील सड़क मार्ग पर स्थित वाड़मेर मुख्य नगर आता है। वाड़मेर से जोधपुर रेल मार्ग पर वालोतरा रेलवे स्टेशन है जहां से ७ मील दूर ही प्रसिद्ध एवं प्राचीन तीर्थ श्री मेवानगर (नाकोड़ा) आया हुआ है।

वाड़मेर नगर में भी अत्यन्त ही सुन्दर जैन मन्दिर वना हुआ है। जो पहाड़ी पर वना हुआ। आकाश को छूने वाला शिखर कई मीलों से ही दृष्टिगोचर होता हैं। मन्दिर की शिल्पकला देखने लायक हैं जिसमें कांच की कारीगरी का कार्य मन मोहने वाला है। इसका निर्माण श्री नेमीचन्द वोहरा द्वारा करवाया गया था। जो प्रतिदिन देव दर्शन करने के पश्चात ही संसारिक कार्यों में लगते थे, यह उनका नियम था। एक वार आप पास के जैन मन्दिर में दर्शन करने के लिये पधारे। तव तक मन्दिर वन्द हो चुका था। पुजारी को मन्दिर खोलने का आग्रह किया गया लेकिन पुजारी ने द्वार नहीं खोले। उसे समझाने का प्रयास किया लेकिन वह नहीं माना और भवावेप में कह दिया यदि इतने भक्त हो तो अपना स्वयं का मन्दिर क्यों नहीं वनाते। इसी ताने के कारण श्री नेमीचन्द वोहरा ने मन्दिर का निर्माण करवाया जिसकी रांगों में पानी के स्थान पर घी (घीरत) का

उपयोग किया।

यह विशाल जैन मन्दिर ई० स० १२०० के आसपास का बनाया हुआ है। इस समय मुगल कालिन सत्ता का प्रभाव था और उनके पश्चात अंग्रेजों का शासन ही नव निर्मित शिखर वन्ध जैन मन्दिर को आधुनिक विशाल रुप देने में असफल रहा। शिलालेख के अनुसार इस मन्दिर की संवत १६८५ में प्रतिष्ठा करवाई गई। आज से ४० वर्ष पूर्व इस मन्दिर को नया रूप देने में विशेष कार्य किया गया।
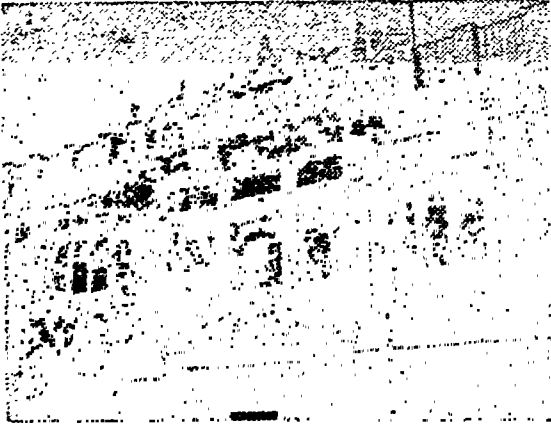
पहाड़ी पर स्थित इस विशाल जैन मन्दिर के अग्र भाग में जोधपुर और जैसलमेर के पीले पत्थरों पर शिल्प कला का सुन्दर निर्माण किया हुआ है। जोधपुर पत्थर पर वनी लक्ष्मी, पहरिये दिखाई देते हैं। वहा जैसलमेर के पीले पत्थर पर बना तोरण, द्वार, लताओं, अप्सराऐं, सिंह अन्य जनमानस और पशु पक्षियों की आकृतियों जनमानस को स्वतः ही अपनी ओर आकर्षित कर देती है।

मन्दिर का ऊपरी भाग जो सदियों पुराना था, उसकी मरम्मत कर नया रूप प्रदान दिया गया है। मन्दिर का श्वेत शिखर मीलों दूर से भी दृष्टिगोचर होता है। मन्दिर के भीतरी भाग में आधुनिक चित्रकला और मीनागीरी का कार्य दर्शकों का मनमोह लेता है। दर्शक घंटो टकटकी लगाये देखते ही रहते है। ऐसा कोई भी भाग शेष नहीं है जिस पर चित्रकारी एवं मीनागीरी न की हुई हो। श्री भैरवजी और चक्रेश्वरी माता की प्रतिमाऐं अत्यन्त ही सुन्दर बनी हुई है। हाल ही में आंचलगच्छ के दादा श्री कल्याणसागर श्री महाराज की भी प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई है। इस श्री पार्श्वनाथ स्वामी के
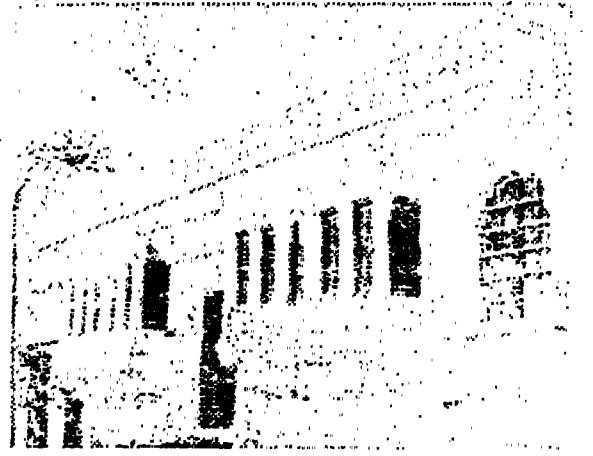
छोटा श्री पार्श्वनाथ मन्दिर

वड़े मन्दिर के अतिरिक्त एक छोटा श्री पार्श्वनाथ स्वामी का मन्दिर भी पास में बना हुआ है जिसकी बाहरी एवं आंतरिक शिल्पकला देखने लायक है।

मन्दिर में २०॥ इन्च चौड़ी और ३१इन्च ऊंचाई की २३ वें तीर्थन्कर श्री पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित की हुई है। जिसकी कलात्मक वनावट देखने लायक हैं। श्री पार्श्वनाथ मन्दिर की प्रतिमा के दर्शन करने से मन को तृप्ती, सन्तोष एवं शान्ति का अनुभव होता है। प्रतिमा अत्यन्त ही चमत्कारी है।

जैन त्यौहारों एवं दीपावली पर इस मन्दिर को खूब सजाया और संवारा जाता है। विजली की रोशनी से यह मन्दिर जगमगा उठता है। त्यौहारों पर भगवान की आंगी रचना को देखने के लिये जन समुदाय उमड़ पड़ता है। वाड़मेर नगर का यह एक मात्र सुन्दर दर्शनीय स्थान है तो जैसलमेर एवं नाकोड़ा के वीच आने के कारण आज वर्तमान तीर्थ स्थल वन गया है। वाड़मेर पार्श्वनाथ के दर्शन करने के लिये हजारों तीर्थ यात्री यहाँ की यात्रा कर आनन्द लाभ उठाते है।

□□

बाड़मेर का प्राचीन श्री आदेश्वर जैन मन्दिर

श्री लूणकरण संखलेचा
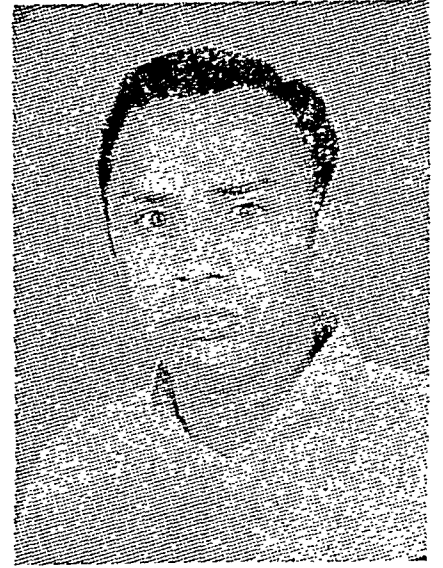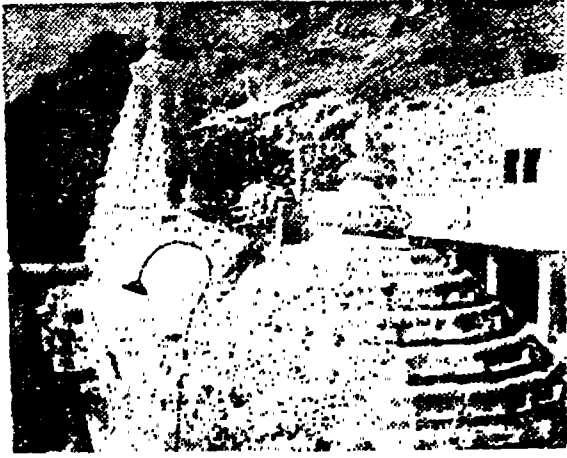
धार्मिक प्रवृतियों का प्रचार करने के लिये भारत में कई संत महात्माओं, साधु सन्तों ने विशेष रूप से धार्मिक स्थानों के निर्माण करवा कर उसका सद् उपयोग किया है। भारत में ऐसे धार्मिक स्थान एक नहीं अनेकों है और वे भी विभिन्न सम्प्रदायों के धार्मिक महत्ता के साथ ही साथ ये स्थल प्राचीनता और शिल्पकला की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बने हुए है। ऐसे स्थान देश के विभिन्न भागों में मौजूद हैं। जैन धर्म के प्रथम तीर्थन्कर श्री ऋषभदेव (आदेश्वर) प्रभू का भव्य जैन मन्दिर, बाड़मेर मुख्यावास पर आज भी दर्शनीय ही नहीं अपितु प्राचीन शिल्पकला के लिये भी विख्यात है। बाड़मेर की महत्ता भारत-पाक सीमावर्ती क्षेत्र का मुख्य स्थान होने के कारण और भी अधिक बढ़ गई है। मारवाड़ शासन काल में मोहम्मद गौरी ने जब मुल्तान पर आक्रमण किया तो बाड़मेर के अति प्राचीन ऐतिहासिक स्थान किराड़ू को भी तहस नहस किया। किराड़ू के निवासी आत्मरक्षा के लिये आस पास के स्थानों पर आ पहुंचे। बाड़मेर जो किराड़ू से २२ मील दूर है वहां पर भी लोग आकर बसने लगे। उस समय आज का यह बाड़मेर बाप्पड़ाऊ, बाहड़मेर के नाम से विख्यात था।

मारवाड़ की राजधानी खेड़ जहां राठौड़ों का अधिपत्य था। जैन समाज ने राठौड़ों के सहयोग से बाड़मेर में जैन मन्दिर के निर्माण का कार्य हाथ में लिया। राठौड़ों के कामदार श्री उड़दराज जैन ने बाड़मेर के जैन समाज के इन विचारों का स्वागत किया स्वयं श्री उड़दराज बाड़मेर में ही विवाहित थे। इनके कोई सन्तान नहीं थी। बिना सन्तान के बड़े ही दुखी थे। एक रात स्वप्न में कुल देवी को दर्शन के रूप में देखा और यह कहते हुए पाया कि यदि सन्तान का सुख देखना चाहते हो तो बाड़मेर (बाहड़मेरू) के जैन समाज को जैन मन्दिर बनाने की कामना को पूर्ण करो। राठौड़ों को अपने विचार बताये। पूर्ण सहयोग मिला। देव स्थान का निर्माण हो गया। उस समय मुगल शासकों के आक्रमण होने के कारण उसमें प्रतिमा को विराजमान नहीं किया जा सका। १३ वीं शताब्दी में बना यह देव स्थान बिना देवता के सुना रहा, १५ वीं शताब्दी में मूर्ति विराजमान की गई।

भाखरों को तलहटी और नगर के दो बड़े भाखरों के खागल (खण्डहर से नामांकित) मौहल्ले में यह पवित्र जैन मन्दिर आया हुआ है। जिसके चारों तरफ ऊंची ऊंची दीवारें ऊपर की तरफ जैन दादा बाड़ी और सामने की भाखरी पर बाड़मेर का गढ़ आया हुआ है।

मन्दिर के मूल मंडप में श्री आदेश्वर प्रभू की अत्यन्त ही सुन्दर प्रतिमा विराजमान है। जिसके आस

पास कई छोटी बड़ी जैन प्रतिमाएँ विराजमान है। गूढ मंडप में कई जैन तीर्यन्कारों के भीती चित्र मन्दिर की सुन्दरता में चार चांद लगाये हुए हैं। आगे का सभा मंडप कई खम्भों पर आधारित है जहां जन समुदाय भक्ति रस का आनन्द लेते है। मन्दिर के ऊपरी भाग पर छोटी धर्मशाला है जिसमें समय समय पर धार्मिक कार्यक्रम होते रहते हैं। मन्दिर के सामने ही भक्तजनों के नहाने एवं केशर आदि सामग्री के लिये छोटे २ कमरों का निर्माण किया हुआ है। इसके ऊपर कई सीढ़ियों पार करने पर दादावाड़ी की ओर रास्ता जाता है।

मन्दिर का विशाल शिखर दो पहाड़ियों की घाटी में अत्यन्त ही सुन्दर लगता हैं। मन्दिर दक्षिणा मुख है जो अत्यन्त ही छोटा है। प्रवेश द्वार पर सुन्दर शिल्पकला कृतियों की हुई है। दो पहरेदार की बनावट, हाथियों का रूप मन को स्वत: ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

जैन पर्व, त्यौहारों पर इस मन्दिर पर विशेष सज्जावट की जाती है। बाड़मेर नगर की स्थापना के बाद तत्काल बने इस भव्य मन्दिर के १३ वीं शताब्दी के किवाड़ आज भी सही सलामत दृष्टिगोचर होते हैं। बाड़मेर का यह प्राचीन जैन मन्दिर जन प्रिय बना हुआ है।
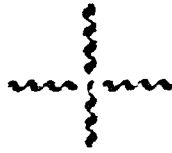
जैन धर्म का राष्ट्रीय स्वरूप

श्री मोहनलाल धारीवाल

भारतीय राष्ट्रीयता को अविछिन्न एवं अखण्ड बनाये रखने में जैन धर्म का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। प्रत्येक दृष्टिकोण से चाहे वह भाषा, साहित्य, सिद्धान्त व दर्शन हो या भौगोलिक सीमा ही, जैन धर्म राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत रहा है। जैनियों के समुन्द्र से विशाल दृष्टिकोण ने सम्पूर्ण देश को एकत्व प्रदान करने में पूरा प्रयत्न किया। धर्म के मनीषियों ने सहस्त्रों वर्षो से अपनी उदात एवं उदार भावना एवं भक्ति से भारतीय जीवन, विचार एवं व्यवस्थाओं को पुष्ट एवं परिष्कृत किया। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जैन धर्म अपनी विचार एवं जीवन संबंधी व्यवस्थाओ के विकास में कभी भी संकुचित दृष्टिकोण का शिकार नहीं बना। भौगोलिकता, भाषा, धार्मिक लोकभावनाएं, साहित्य एवं दर्शन इत्यादि प्रत्येक दृष्टिकोण से जैन धर्म का राष्ट्रीय स्वरूप हमेशा काल की कसौटी पर खरा उतरा है।

सर्व प्रथम भौगोलिक दृष्टिकोण को ही ले लीजिए जैन धर्म के मनीषियों ने अपने देश के कभी भी किसी एक भाग को ही अपनी भक्ति का क्षैत्र नहीं बनने दिया। उत्तर से दक्षिण एवं पश्चिम से पूर्व सम्पूर्ण देश जैन धर्म के प्रचार एवं प्रसार का क्षैत्र रहा है। भगवान महावीर का अवतरण बिहार के उत्तर में हुआ तो उनका उपदेश एवं निर्वाण दक्षिण बिहार में। तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म उत्तर प्रदेश (बनारस) में हुआ तो उन्होंने तपश्चर्या बिहार (सम्मेद शिखर) में की। बाइसवें तीर्थंकर नेमिनाथ ने अपनी तपोभूमि उपदेश एवं निर्माण का क्षैत्र पश्चिम प्रदेश (काठियावाड) बनाया। प्रथम तीर्थंकर आदि नाथ का जन्म अयोध्या में हुआ तो उन्होंने तपश्चर्या कैलाश पर्वत पर की। संक्षेप में अभिप्राय यह है कि जैनियों ने अपनी तपश्चर्या एवं उपदेशों से इस देश के किसी भी कोने को अछूता नहीं रखा। उत्तर में हिमालय पूर्व में बिहार एवं पश्चिम में काठियावाड व दक्षिण में कर्नाटक को सम्मिलित कर देश की अखण्डता को बनाये रखने में पूर्ण योगदान दिया। इन्ही सीमाओं के अन्तर्गत अनेक जैन मुनियों व आचार्यो ने अपने जन्म तपश्चर्या एवं उपदेशों से इस पवित्र भूमि को अपनी श्रद्धा एवं भक्ति का विषय बनाया है। जैनधर्म की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जैनी कभी भी इस देश के बाहर नहीं भागे। इसी पवित्र भूमि की सेवा की। देश के उतर, पश्चिम एवं पूर्व भाग को ही नही वरन दक्षिण के अनार्य प्रदेश को भी अपनी श्रद्धा एवं भक्ति का पात्र बनाया। तमिल के अनेक बड़े २ आचार्य एवं ग्रन्थकार हुये हैं तथा अनेक स्थान आज भी प्राचीन मन्दिरों के ध्वसों से अकुलंत है। कर्नाटक प्रान्त में श्रवण बेलगोला व कारकल पर बाहुबलि की विशाल मूर्तियां आज भी इस देश की कला को गौरवान्वित कर रही हैं। निस्सन्देह प्रान्तीयता की संकुचित भावना एवं देशाटन के प्रति अनुचित अनुराग से दूर रहकर जैनियों की देशभक्ति विशुद्ध अचल एवं स्थिर रही है।

केवल भौगोलिकता के दृष्टिकोण से ही नहीं वरन धार्मिक लोकभावनाओं एवं मान्यताओं के संबंध में भी वहीं उदात एवं उदार नीति रही है। अन्य धर्मानुभाइयों की प्राचीन धार्मिक लोकमान्यताओं एवं भावनाओं का सम्मान कर विधिवत अपनी परम्परा में

यथास्थान सम्मिलित कर लिया गया है। राम, लक्ष्मण, कृष्ण एवं बलदेव के प्रति देश की जनता का पूज्यभाव रहा है। अतः इनको जैनियों ने तीर्थंकरों के साथ साथ तेरसठ शलाका पुरुषों में आदरणीय स्थान प्रदान किया है। तथा पुराणों में उनके जीवन चरित्र का वर्णन किया है। यहां तक कि रावण व जरासंघ जैसे अनार्य राजाओं को जिनकी वैदिक परम्परा के पुराणों में घृणा से देखा गया है, उनको भी जैन पुराणों में यथायोग्य सम्मान प्रदान कर अनार्य जातियों की भावनाओं की रक्षा की हैं। रामायण में सीता रावण के प्रसंग को बड़ी कौशल से प्रस्तुत किया है। रावण को राक्षसी वृति से उपर उठाया गया है एवं सीता के अक्षुण सतित्व को शंका से परे प्रमाणित किया है। देश में यक्षों एवं नागों की पूजा होती आयी है जिनकी मूलतः उपासक अनार्य रहे हैं। यद्यपि इनको हिंसावृति का निषेध जैन-ग्रन्थों में किया है, लेकिन नागों को अपने तीर्थंकरों के रक्षक रूप में स्वीकार कर उनका यथास्थान सम्मान किया है।

भाषा एवं साहित्य के प्रश्न को ले लीजिए। वैदिक परम्परा में संस्कृत के दैविक वाक्य मानकर हमेशा उसी में ही साहित्य की रचना की गई है। इससे चाहे कितना ही भला हुआ हो लेकिन निश्चित तौर से प्रदेशीय लोक भाषाओं का कोई प्रतिनिधीत्व नहीं हो पाया तथा जनसाधारण वैदिक साहित्य का कभी भी आनन्द नहीं उठा सका। तथा न ही लोकोपकारी हो सका। परिणामतः पाखण्ड एवं अनावश्यक क्रिया कलापों का बोलबाला रहा। जबकि भगवान महावीर ने जनसाधारण की भाषा अर्धमागधी को अपनी वाणी एवं साहित्य का माध्यम बनाकर लोकोपकार किया तथा जनसाधारण में निष्ठा स्थापित कर उनके मन, वचन एवं कर्म को प्रभावित किया। इसी प्रकार जैनचार्य जब जब भी धर्म प्रचारार्थ जहां जहां भी गये उन्होंने उन्हीं प्रदेशों की लोकभाषाओं में साहित्य रचना की। उनके विशाल साहित्य में शोरसेनी महाराष्ट्री, अपभ्रंश आदि प्राकृत भाषाएँ, हिन्दी गुजराती आदि आधुनिक भाषाएँ तथा दक्षिण की तमिल एवं कन्नड़ का यथास्थान पूरा २ प्रतिनिधित्व दिया।

केवल भौगोलिकता, भाषा, साहित्य एवं धार्मिक लोकभावनाओं के आदर के दृष्टिकोण से ही नहीं वरन जैन धर्म के सशक्त एवं सुदृढ़ राष्ट्रीयत्व का सैद्धान्तिक एवं दार्शनिक आधार भी है। वेदान्त दर्शन में केवल एक तत्व ब्रह्म को स्वीकार किया गया है तथा शेष दृश्यमान पदार्थों का असत एवं मायाजाल रूप बताया है। इसी प्रकार एक अन्य दर्शन चार्वाक के अनुसार केवल भौतिक तत्वों की सता ही स्वीकार की गई है। जबकि जैन दर्शन जीव व अजीव दोनों तत्वों को स्वीकार करता है। संसार में चेतन्य गुणयुक्त आत्मतत्व भी है और चैतन्यहीन मूर्तिमान, भौतिक तत्व भी है। इन सभी तत्वों में उत्पति, विनाश एवं प्रत्युत्पति अवस्थाएं विद्यमान हैं। अतः जैन दर्शन अन्य दर्शनों की अपेक्षा व्यापक है। इसे स्याद्वाद व अनेकान्तरूप भी कहते है।

देश के प्राणीमात्र को यहां तक कि पेड़-पौधों को भी जीवन एवं विकास का हक है, जिससे देश उतरोत्तर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होवे तथा फले-फूले। इस उद्देश्य से अहिंसा के सिद्धान्त की सार्वभौमिकता स्वीकार की गई है। लघुतम प्राणी को कष्ट पहुचाना तथा पेड़ पौधों तक को भी काटना हिंसा है। उक्त अहिंसा का सिद्धान्त सैद्धान्तिक ही नहीं वरन व्यवहारिक भी है। संसार में अनेकानेक प्राणी हैं तथा प्रत्येक प्राणी में अपने ज्ञानात्मक विकास के द्वारा परमात्मपद प्राप्ति की योग्यता है। अतः शक्तिरूप से सभी समान है। अतः उनमें परस्पर सम्मान सद्भाव एवं सहयोग का व्यवहार होना चाहिये। यही जनतंत्रात्मकता की चरम स्थिति है क्योंकि आधुनिक जनतंत्रवाद केवल मनुष्य समाज तक सीमित है जबकि जैन धर्म ने प्राणीमात्र को उसकी सदस्यता का मात्र बनाया है। बहुधा जैन धर्म के इस मौलिक सिद्धान्त को देश में कायरता के लिये उतरदायी ठहराया जाता हैं लेकिन जैन धर्म में अहिंसा का सिद्धान्त कभी भी कायरों के लिये नहीं रहा है वरन वीरों एवं बलिष्ठों के लिये रहा है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि प्राचीन काल में अनेक जैन धर्मावलम्बी पुरुष हुये है, जिन्होंने धर्मपालना के साथ साथ योद्धा एवं सेनापति का भी दायित्व निभाया है। अतः इसी अहिंसा के सिद्धान्त ने सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में बांध रखने का भरसक प्रयत्न किया है। —

स्थापना—१ जनवरी, १९५७

* श्री बाल वीर मण्डल *

बाड़मेर (राजस्थान)

बाड़मेर नगर में श्री बालवीर मण्डल की स्थापना १ जनवरी १९५७ को श्री पार्श्वनाथ जिनालय में की। मण्डल ने बाड़मेर नगर में कई धार्मिक, सांस्कृतिक एवं समाज सुधार के कार्यक्रम किये। मण्डल ने समाज सुधार से अनेकों कार्य किये जिससे न केवल बाड़मेर जैन समाज ने उसकी प्रशंसा की अपितु जैन एवं अजैन समाजों ने सराहना की। इस मण्डल ने कई वर्षों तक कार्य किया और इसके कई सदस्य आज भी समाज सेवा में रत हैं।

ठे—सर्व श्री शंकरलाल वडेरा, वंशीधर पड़ाईया, लूणकरण संखलेचा, मोहनलाल, वंशीधर जैन
र्सी पर सर्व श्री छोगालाल, बोहरीदास मेहता, भूरचन्द जैन, मोहनलाल बोहरा, भूरचन्द संखलेचा
ड़े पहली पंक्ति—सर्व श्री मोहनलाल बोहरा, शंकरलाल, शंकरलाल लूणिया, शंकरलाल वडेरा, शंकरलाल वडेरा
ड़े दूसरी पंक्ति—सर्व श्री वंशीधर बोहरा, पारसमल बोहरा, शंकरलाल संखलेचा, जेठमल सिंघवी, मोहनलाल वडेरा

महावीर तेरे बन्दे हम !

महावीर तेरे बन्दे हम,
कैसे हैं हमारे कर्म,
लोभी हम बने और,
भोगों में फंसे,
कैसे टूटेंगे ये कुकर्म····महावीर····

तूने क्या-क्या हमें न दिया,
जैन धर्म में जन्म मिला,
सच्चे धर्मी बने न अहिंसक बने,
कैसे मोक्ष में जाएंगे हम····महावीर····

एक 'नवक्कार' मंत्र ही काफी,
यदि जपें इसे हम जरा भी,
चित्त न चंचल बने, नैंन कोमल बने,
तो जैन कहलाएंगे हम····महावीर ····

तूने दुखियों का दर्द मिटाया,
सच्चे धर्म का रस्ता दिखाया,
अब लेकर अवतार, तूं जन-जन को तार,
मिट जाए 'मोहन' का भ्रम···· महवीर ····,

श्री मोहनलाल मेहता (बाड़मेर)

अहिंसा-परमो धर्म

किसी भी प्राणी की हिंसा न करना ही ज्ञानी होने का सार है। अहिंसा-सिद्धान्त ही सर्व श्रेष्ठ है, विज्ञान केवल इतना ही है- महावीर.

॥ जय जिनेन्द्र ॥ स्थापित : २७-३-१९७२

श्री वर्द्धमान जैन मंडल, बाड़मेर (राज.)

कार्यकारिणी-सभा के सदस्य

२७ जनवरी १९७४
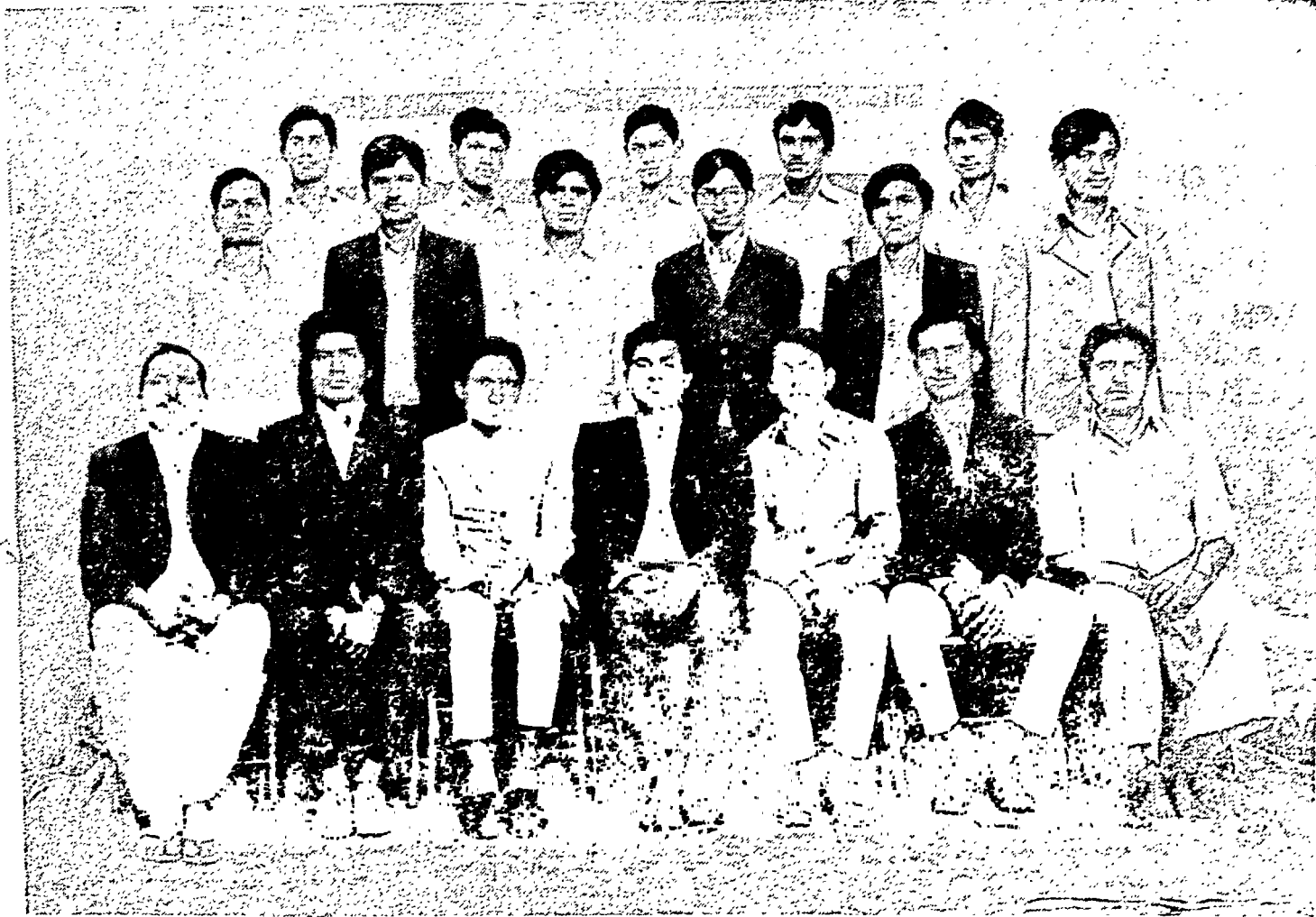
बैठे हुए– बांए से दांए —सर्वश्री भंवरलाल बारीवाल (प्रचार मंत्री), हस्तीमल मेहता (मंत्री), मोहनलाल मेहता (महामंत्री), बंशीधर वोहरा (ग्रध्यक्ष), पारसमल संखलेचा (उपाध्यक्ष), जेठमल सिंघवी (समाज सुधार मंत्री) व शंकरलाल बोथरा (संगीत मंत्री).

खड़े हुए– बांए से दांए—सर्व श्री खेतमल वोहरा (व्यवस्था मंत्री), बाबूलाल सिंघवी (सदस्य) पारसमल छाजेड़ (खेलकूद मंत्री), प्रकाशचन्द्र संखलेचा (सदस्य), सोहनलाल सिंघवी (कोषाध्यक्ष), मांगीलाल गुलेच्छा (सदस्य), चम्पालाल बोथरा (स्वास्थ्य मंत्री), मांगीलाल वडेरा (भंडार मंत्री), मांगीलाल गोठी (सदस्य) महेशकुमार छाजेड़ (सदस्य) व बाबूलाल संखलेचा (साहित्य मंत्री)

संक्षिप्त परिचय

वाड़मेर जैन समाज की सेवा के लिये विभिन्न समय में विभिन्न प्रकार के मंडलों की समय समय पर स्थापना होती रही है और कई रचनात्मक एवं समाज सुधार के कार्य होते रहे। समाज के कुछ नवयुवकों ने मिलकर नई संस्था का गठन करने के लिये दिनांक १६-३-७२ को श्री भूरचन्द जैन की अध्यक्षता में श्री पार्श्वनाथ जिनालय प्रांगण में बैठक बुलाई और नये श्री वर्धमान जैन मंडल का गठन करने का निर्णय लिया गया। १९-३-७२ को सम्पूर्ण मंडल की साधारण सभा का आयोजन किया गया जिसमें मंडल का संविधान बनाया गया और मंडल के अध्यक्ष पद पर श्री वंशीधर बोहरा एवं महामंत्री पद पर श्री मोहन मेहता को चुना गया। मण्डल स्थापना से अब तक की कार्यकारिणी में निम्न महानुभावों का सक्रिय योगदान रहा।

१. अध्यक्ष — श्री वंशीधर बोहरा
२. उपाध्यक्ष —श्री वंशीधर छाजेड़
— ,, सोहनलाल सेठिया
— ,, हस्तीमल मेहता
— ,, पारसमल संखलेचा
३. महामंत्री — ,, श्री मोहन मेहता
४. कोषाध्यक्ष — ,, सोहनलाल सिंघवी
५. व्यवस्था मंत्री — ,, पारसमल संखलेचा
— ,, बाबूलाल बोहरा
— ,, पारसमल छाजेड़
— ,, पारसमल छाजेड़
— ,, खेतमल बोहरा
६. खेलकूद मंत्री — श्री हस्तीमल बोथरा
— ,, पारसमल संखलेचा (खेल-कूद व स्वास्थ्य मंत्री)
— ,, पारसमल छाजेड़
७. उप-व्यवस्था मंत्री— ,, बाबूलाल बोहरा
८. शिक्षा मंत्री — ,, छगनलाल सिंघवी
९. सांस्कृतिक मंत्री — ,, जेठमल सिंघवी
१०. स्वास्थ्य मंत्री — ,, वंशीधर मेहता
— ,, चम्पालाल बोथरा
११. श्रम व नियोजन मंत्री — ,, शंकरलाल संखलेचा
१२. भंडार मंत्री — ,, बाबूलाल बोहरा
— ,, मांगीलाल बडेरा
१३. प्रचार मंत्री — ,, भंवरलाल गांधी
— ,, भंवरलाल धारीवाल
१४. साहित्य मंत्री — ,, वंशीधर बोहरा
— ,, बाबूलाल संखलेचा
१५. संगीत मंत्री — ,, शंकरलाल बोथरा
१६. समाज-सुधार मंत्री— ,, लूणकरण संखलेचा
— ,, जेठमल सिंघवी
१७. अन्य सदस्य — ,, मिश्रीमल संखलेचा
,, वंशीधर सिंघवी
— ,, बाबूलाल पड़ाईया (कल्याणपुरा)
— ,, मांगीलाल गुलेच्छा (,,)
— ,, मांगीलाल गोठी (सरदारपुरा
— ,, मांगीलाल बोथरा (खागल)
— ,, सम्पतराज सिंघवी (ढ़ाणी)
— ,, वंशीधर मेहता (खागल)
— ,, शंकरलाल बोहरा (ढ़ाणी)
— ,, महेश कुमार छाजेड़ (ढाणी)
— ,, प्रकाशचन्द्र छाजेड़ (पांवर)

इस मंडल की स्थापना के समय निम्न सलाहाकार रहे—

(१) श्री सुलतानमल जैन वकील
(२) ,, हस्तीमल पड़ाईया
(३) ,, आसूलाल मेहता
(४) ,, नेमीचन्द बोथरा
(५) ,, भूरचन्द जैन
(६) ,, श्री नैनमल जैन
(७) ,, हुक्मीचन्द मालू

उपरोक्त कार्यकारिणी के सदस्यों के अतिरिक्त इस समय मंडल की कार्यकारिणी में निम्न सदस्य-गण सेवारत है।

अध्यक्ष	– श्री वंशीधर बोहरा
उपाध्यक्ष	— ,, पारसमल संखलेचा
महामंत्री	— ,, मोहन मेहता
कोषाध्यक्ष	— ,, सोहनलाल सिंघवी
व्यवस्था मंत्री	— ,, मेतमल बोहरा
खेलकूद मंत्री	— ,, पारसमल छाजेड़
स्वास्थ्य मंत्री	— ,, चम्पालाल बोथरा
भंडार मंत्री	— ,, मांगीलाल बडेरा
प्रचार मंत्री	— ,, भंवरलाल धारीवाल
साहित्य मंत्री	— ,, बाबूलाल संखलेचा
संगीत मंत्री	— ,, शंकरलाल बोथरा
समाज-सुधार मंत्री	— ,, जेठमल सिंघवी
अन्य सदस्य	– ,,बाबूलाल पड़ाईया कल्याणपुरा
	– ,, मांगीलाल गुलेछा ,,
	– ,, मांगीलाल गोठी सरदारपुरा
	– ,, मांगीलाल बोथरा नागल
	– ,, शंकरलाल बोहरा ढाणी
	– ,, महेशकुमार छाजेड़ ढाणी
	– ,, प्रकाशचन्द्र छाजेड़ पांधर

इस समय मंडल के निम्न सलाहकार है—

(१) श्री हस्तीमल पड़ाईया
(२) ,, आनूलाल मेहता
(३) ,, भूरचन्द जैन
(४) ,, हुकमीचन्द मालू

महावीर जयन्ती

मंडल ने अपना विधिवत स्थापना दिवस महावीर जयन्ती २७ मार्च १९७२ मनोनीत किया। मंडल ने १९७२ की महावीर जयन्ती को विशाल पैमाने पर मनाने का अथक प्रयत्न किया।

वर्ष १९७३ की महावीर जयन्ती १५ अप्रेल को मंडल द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों के साथ मनाई। मंडल की ओर से विशाल जलूस का आयोजन किया गया जिसमें कई प्रकार की सुन्दर झांकियों का प्रदर्शन किया गया। इन झांकियों में जैन धर्म से सम्बन्धित धार्मिक एवं ऐतिहासिक झांकियों का आयोजन किया गया।

वर्ष १९७४ को महावीर जयन्ती ४ अप्रेल को भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण महोत्सव समिति, बाड़मेर द्वारा सभी जैन सम्प्रदायों के सामुहिक प्रयत्नों से आयोजित की गई जिसमें मंडल ने अपनी ओर से मंडल बैण्ड, ऊंट पर नगारे, घोड़े पर जैन ध्वज श्री पार्श्वनाथ कमठ तपस्या की झांकी, भगवान महावीर के कानों में किले ठोकने, महावीर भगवान को चन्दन बाला द्वारा पारणा करवाने की झांकी एवं श्री नाकोड़ा जैन तीर्थ के चांदी के रथ को जलूस में सम्मलित करने में मंडल का सक्रिय योगदान रहा। सुन्दर झांकी प्रदर्शन की सभी ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की।

धार्मिक उत्सवों का आयोजन

ओली आराधना—बाड़मेर जैन श्री संघ की ओर से मुनिवर श्री विमल सागरजी महाराज साहब के सान्निध्य में दिनांक २१-३-७२ से २९-३-७२ (चैत्र शुक्ला सप्तमी से पूर्णिमा) तक ओली आराधना का कार्यक्रम हुआ। इस तपस्या में भाग लेने वाले स्त्री-पुरुषों को समय पर धार्मिक भोज की समुचित व्यवस्था करने में मंडल का सक्रिय योगदान रहा। इस तपस्या का पारणा ३०-३-७२ को मंडल द्वारा समुचित व्यवस्था के साथ परिपूर्ण किया करवाया गया।

पर्यूषण पर्व

वर्ष १९७२ में दिनांक ४-९-७२ से १२-९-७२ तक मनाये जाने वाले पर्यूषण पर्व में मंडल ने कई धार्मिक कार्यक्रमों को सफल बनाने का प्रयत्न किया। इस पर्व काल में भजन मंडली, जुलूस, प्रभात फेरी आदि कार्यक्रमों के अतिरिक्त स्वाम भावना पत्रों पर हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। संवत्सरी महापर्व पर क्षमा याचना पत्र प्रकाशित भी किया गया। वर्ष १९७३ में पर्यूषण पर्व पर कई प्रकार के धार्मिक कार्यक्रमों को आयोजित करा कर सराहनीय कार्य किया गया।

श्रीनाकोड़ा तीर्थ में माल महोत्सव

दिनांक १३-१२-७२ (मिगसर शुक्ला अष्टमी, सवत २०२१) को सुविख्यात जैन तीर्थ स्थान श्रीनाकोड़ाजी पर श्री भंवरलाल वल्द सोनराज जी वोहरा द्वारा कराए गए उपधानतप समाप्ती के अवसर पर **'माल-महोत्सव'** मनाया गया। इस अवसर पर मंडलने परमपूज्य म० सा० श्री कांति सागर जी व दर्शन सागरजी आदि की प्रेरणा से शान्ति व्यवस्था वनाए रखने सामूहिक भोजन के समय व प्रभावना वितरण के दौरान अपना प्रशंसनीय योग दिया। इस महोत्सव के समापन-समारोह के अवसर पर रात्रि को सभा में मंडल की ओर से अध्यक्ष श्री वंशीधर वोहरा ने तीर्थ के चेयर मैन श्री सूरजमल जी को माला पहनकर सम्मानित किया। उपधान तप करवाने वाले श्री भंवरलाल सोनराज वोहरा का भी तीर्थ की ओर से मान पत्र देकर सम्मान किया गया उस अवसर पर मंडल ने भी हार पहनाकर उपधान पति का सम्मान किया। इसी शुभ अवसर पर उपधान-तप समिति द्वारा मंडल को प्रोत्साहन के रूप में रू० ५०१/- की राशि का पुरस्कार प्रदान किया गया जो अपने आप में मंडल के लिए एक अविस्मरणीय उपलब्धी रही।
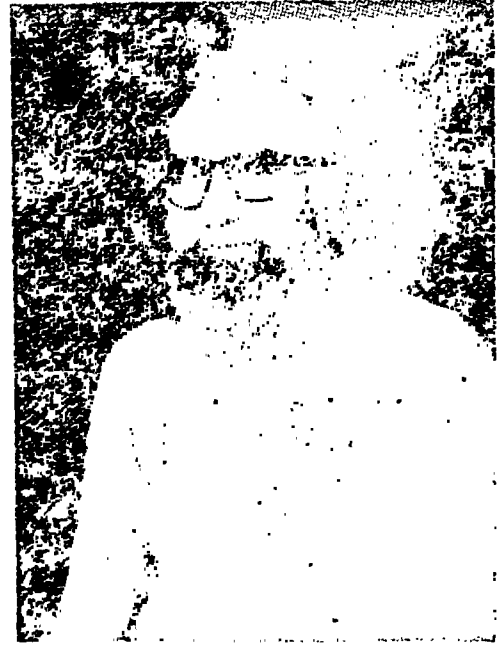
जैन कन्या पाठशाला की व्यवस्था

वाड़मेर जैन कन्या पाठशाला की स्थिति में सुधार करने हेतु मंडल ने अथक प्रयास किया। इस एक मात्र जैन समाज की धार्मिक शिक्षण संस्था को व्यवस्थित रूप से चलाने के लिये मंडल ने समाज की एक समिति का गठन भी करवाने में अथक प्रयास किया।

जैन धार्मिक शिक्षण शिविर

वाड़मेर नगर में प्रथम वार पूज्यवर मनोहर श्री जी महाराज साहिवा की प्रेरणा से जैन श्री संघ वाड़मेर की ओर से दिनांक १०-६-७३ से २४-६-७३ तक ग्रीष्म-कालीन जैन धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में लगभग २२५ जैन विद्यार्थियों ने धार्मिक संस्कार पाकर जैन धर्म के प्रारंभिक ज्ञान का उपार्जन किया। इस शिविर को संचालित करने में मंडल ने जो महत्वपूर्ण सेवाएं अर्पित की उसके लिए प्रोत्साहन के रूप में श्री जैन श्री संघ वाड़मेर ने मंडल को नकद १००१/- प्रदान किए एवं प्रशंसा पत्र तथा चांदी का एक मेडल भेंट किया जो मण्डल के लिए महान् उपलब्धी है। इन दो महान उपलब्धियों के अलावा समाज द्वारा वेरोजगार व गरीव जैन महिलाओं के हितार्थ दिनांक २१-१०-७३ से चल रही श्री वर्द्धमान जैन उद्योगशाला की स्थापना हेतु भी अपना हर संभव योगदान दिया।
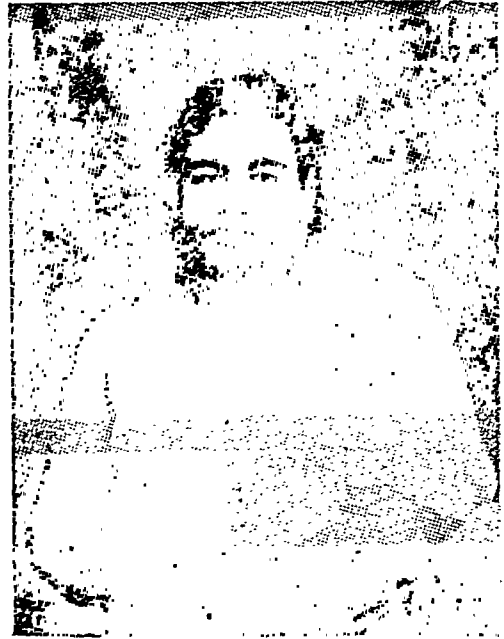
पूज्यवर मुनि श्री कांतिसागरजी म० सा०

पूज्यवर दर्शनसागरजी म० सा०

श्री विचक्षण महिला मण्डल

बाड़मेर नगर में परम् पूज्य विचक्षण श्री जी महाराज साहिबा की विदुषी सुशिष्या मनोहर श्री जी म. सा. की अध्यक्षता में श्री विचक्षण महिला मंडल का उद्घाटन दिनांक १२-७-७३ को दिन के २ बजे ढाणी जैन धर्मशाला पर हुआ। जिनमें एक कार्यकारिणी कमेटी का गठन परम पूज्य मनोहर श्री जी म. सा. के तत्वाधान में हुआ जिनमें निम्न पदाधिकारी गण चुने गये।

अध्यक्ष—श्रीमती सतीदेवी

उपाध्यक्ष—श्रीमती मोहनीदेवी

महा मंत्री—श्रीमती कमलादेवी हालोंवाली

मंत्री—श्रीमती मोहनीदेवी

कोषाध्यक्ष-गजीदेवी एवं अन्य सदस्य ७० के करीब है

महिला मंडल के खुलने से पूर्व बाड़मेर में कोई भी महिला मंडल नहीं कार्य कर रहा था। महिला मंडल ने बाड़मेर संघ के सामने जो सांस्कृतिक कार्यक्रम किये वह बहुत ही प्रशंसनीय रहे। मंडल ने जो सांस्कृतिक कार्यक्रम किये उनका विवरण निम्न है—

१. मंडल ने पूर्यषण पर्व के नौ दिन श्री आदिश्वर जैन मन्दिर में पूजा पाठ पढाने का कार्य किया।

२. अक्षय निधि तप के भव्य जुलूस में महिला मंडल सम्मिलित हुआ। सब सदस्यों ने सफेद पोशाकों में कार्य किया और सब से आगे महिला मंडल का झंडा रहा।

३. पर्यूषण पर्व के संवत्सरी के दिन महिला मंडल ने जो सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये वो तो चीर स्मरणीय रहेंगे। जिसमें निम्न नाटक प्रस्तुत किये गये।

(१) सरस्वती वंदना (२) डांडिया रास (३) कृष्ण राधिका संवाद (४) गरबा (५) नेम राजुल का नाटक (६) रूमाल से डांस जिसमें एक गायन था मोरा (महावीर ना भक्त चाल्या मंदिर में) डांस।

४. बाड़मेर के समस्त मण्डलों द्वारा स्नात्र पूजा पढाई गयी जिसमें महिला मण्डल का सक्रिय योगदान रहा।

५. नवपद ओली आराधना में कल्याणपुरा जैन धर्मशाला पर मण्डल ने कव्वाली, मारवाड़ी गीत, आ दुनिया की रंग भूमि पर आदि कई लोकगीत एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जिसमें महिला मण्डल को कई पुरस्कार प्राप्त हुए। (शेष पृष्ठ ११८ पर)
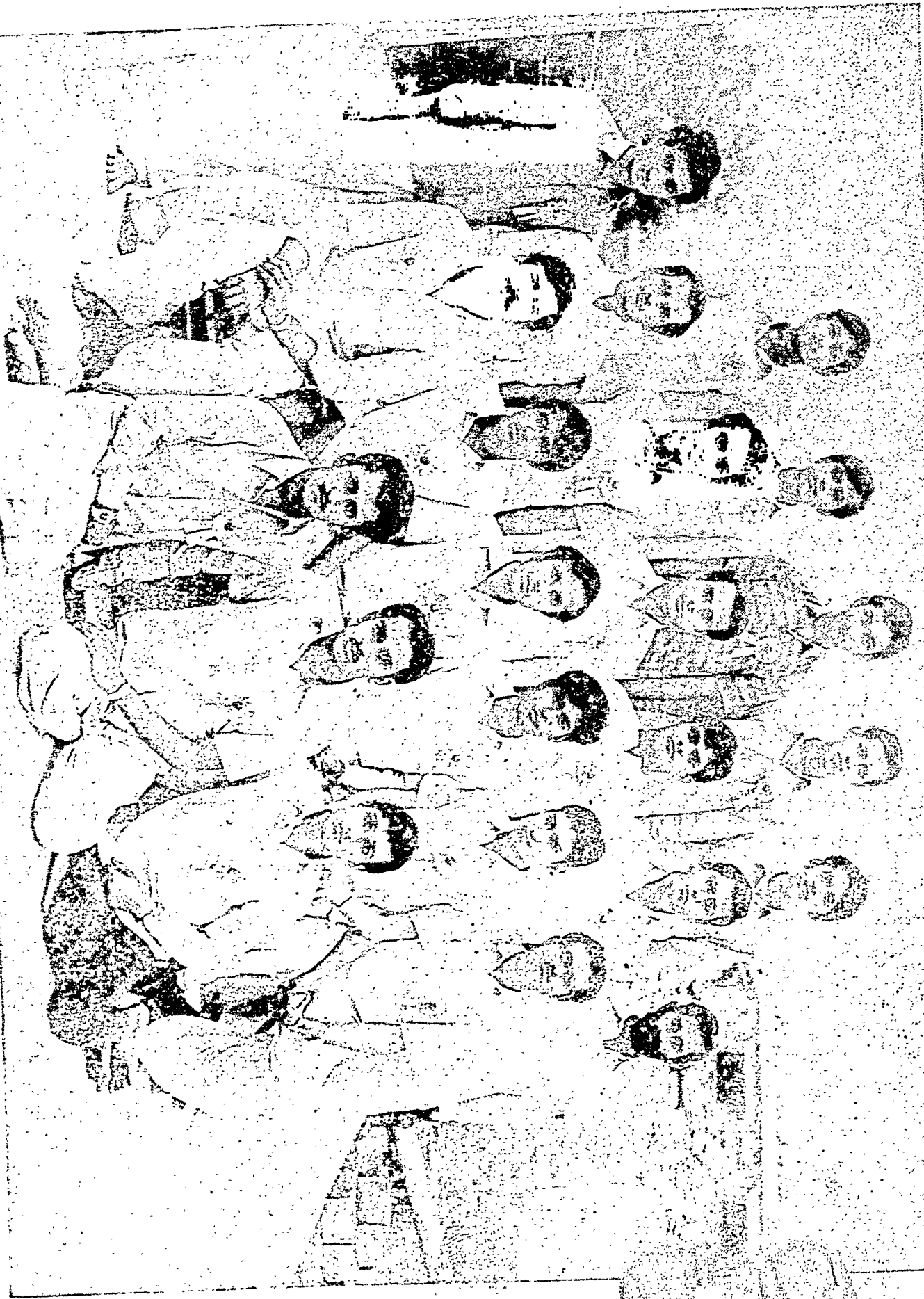
संक्षिप्त परिचय

साध्वी श्री मनोहर श्री जी मा० सा० की प्रेरणा से इस मण्डल की स्थापना दिनांक २४-५-७३ को रात्रि के १० बजे ढाणी श्रीआदेश्वर जिनालय के प्रांगण में भारी संख्या में एकत्रित नवयुवकों की आयोजित सभा में की गई। सभा की अध्यक्षता श्री नैनमल भंसाली ने की।

इस मण्डल का उद्देश्य जैन श्री संघ बाड़मेर द्वारा समय २ पर आयोजित धार्मिक, सामाजिक कार्यो में हाथ बंटाना तथा नवयुवकों में जैन धर्म के प्रति नई सामयिक चेतना जाग्रत करना हैं। आज इस मण्डल के सदस्यों की संख्या करीब २०० हैं। इसकी अपनी एक कार्यकारिणी है जिसके सदस्यों की संख्या २१ है। कार्यकारिणी का कार्य किसी भी कार्य को सुव्यवस्थित व योजना बद्ध तरीके से करने हेतु विचार करना तथा उसका अनुमोदन करना। इसीमें से पदाविकारियों का चयन किया गया। इस मण्डल के मुख्य पदाविकारी निम्न हैं—

१. श्री वंशीधर सिंघवी—अध्यक्ष
२. ,, लालचन्द भंसाली—उपाध्यक्ष
३. ,, मोहनलाल वोथरा—महामंत्री
४. ,, मोहनलाल वोहरा—मंत्री
५. ,, चिन्तामणदास संखलेचा—कोषाध्यक्ष
६. ,, पारसमल संखलेचा—व्यवस्थापक
७. ,, मेवाराम मालू—स्टोरकीपर
८. ,, वंशीधर तातेड़—लेखक

इस मण्डल ने स्थापना से लेकर अब तक सिर्फ अपने अल्प काल में विभिन्न क्रिया कलापों द्वारा वाड़मेर जैन समाज पर एक अमिट छाप छोड़ दी।

किये गये कार्यो का ब्यौर निम्न प्रकार से हैं—

१. दादा श्री जिनदत्त सूरिश्वर जी के निर्वाण दिवस पर शानदार जलूस मय झांकिया के दिनांक १७-७-७३ को दादाजी निर्वाण दिवस बड़ी धुमधाम से मनाया गया। जिसमें विभिन्न प्रकार की (दादाजी पर) झांकिया का प्रदर्शन करते हुए विशाल जलूस नगर के मुख्य भागों से निकाला गया। यह आयोजन वाड़मेर नगर में पहली वार था।

२. सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन—

पर्यूषण पर्व के शुक्रवार पर इस मण्डल द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें नगर के अन्य मण्डलों ने भी भाग लिया। इस आयोजन में एक विशेषता यह थी इस मण्डल में श्री आदेश्वर विचक्षण महिला मण्डल ने भाग लिया। जैन वालिकाओं ने पहली वार स्टेज पर प्रदर्शन किया जिनका नेमराजुल नाटक वड़ा रोचक था। इस मण्डल द्वारा प्रस्तुत भरत वाहुवल नाटक ने उपस्थित हजारों की संख्या में उपस्थित

श्री आदेश्वर जैन मण्डल, वाड़मेर

कार्यकारिणी के सदस्य व पदाधिकारी ता० ७-८-७३

नीचे बैठे हुए वांये से दांये - भंवरलाल छाजेड़, मोहनलाल सिंघवी, उपसंगीत मंत्रीं, वावूलाल संखलेचा।

कुर्सी पर बैठे हुए वांये से दांये—व्यवस्थापक पारसमल संखलेचा, बंशीधर ततेड़ लेखक, महामंत्री मोहनलाल वोथरा अध्यक्ष वन्शीधर सिंघवी, उपाध्यक्ष लालचन्द भन्साली कोषाध्यक्ष चिन्तामणदास संखलेचा।

खड़े हुए प्रथम पंक्ती वांये से दांये - संगीतमंत्री वावूलाल सिंघवी, स्टोरकीपर हीरालाल वोथरा, उपकोषाध्यक्ष रतनलाल संखलेचा, उपव्यवस्थापक मोहनलाल संखलेचा, हस्तीमल सिंघवी, मोहनलाल छाजेड़, स्टोरकीपर मेवाराम मालू।

खड़े हुए द्वितीय पंक्ती वांये से दांये—मांगीलाल संखलेचा, मगराज, प्रकाशचन्द संखलेचा, सूचना मंत्री, मांगीलाल वोथरा, मंत्री मोहनलाल वोहरा।

लोगों के दिलों को मोह लिया जिसकी सभी ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

३. गीत सागर मस्तक—

मण्डल द्वारा आधुनिक गीतों पर आधारित श्री वंशीधर तातेड़ द्वारा लिखित गीतों की पुस्तक का प्रकाशन भी किया है।

४. श्री आदेश्वर विचक्षण पुस्तकालय—

मण्डल द्वारा एक पुस्तकालय का भी उद्घाटन करवाय जिसकी व्यवस्था इस मण्डल के कार्यकर्ताओं ने अपने कंधों पर ली है जो आज भी सुचारू रूप से चल रहा है।

५. चुतर्मास में किये गये व्याख्यानों के आयोजन की व्याख्या—

मण्डल ने विशाल व्याख्यान मण्डल को बनाने के साथ ही साथ अपने सदस्यों को नियमित रूप से आयोजित व्याख्यानों की व्यवस्था के लिए दिन रात जुटाये रखा। इसके अतिरिक्त ढाणी जैन मन्दिर व धर्मशाला व जैन न्याति नोहरों की पर्यूषण पर्व पर बड़े शानदार ढंग से सजाया गया। विभिन्न प्रकार की पोले, द्वार रंग विरंगी झण्डियों लगाकर अपने-आपमें मण्डल के सदस्यों की कर्तव्य परायणता का परिचायक, होने के साथ २ उनकी जैनधर्म के प्रति विशाल आस्था को प्रगट करता है जो कि इसका एक महत्व पूर्ण उद्देश्य रहा है।

६. विराट जलूस का आयोजन—

पर्यूषण पर्व के समापन दिवस पर हमारे मण्डल ने एक शानदार जुलूस को निकाला जिसमें विभिन्न प्रकार की झांकिया जैसे शैयांस कुमार की झांकी जिसमें भगवान आदेश्वर को पारणा करवाते हुए दिखाया गया। दूसरी झांकी चन्दन वाला की थी जिसमें भगवान महावीर को बांकला वैराया गया इसके अतिरिक्त चण्डकोशिक, क्षमा विरस्य भूषणम आदि विभिन्न प्रकार की झांकियों को बड़े ही रोचक ढंग से प्रदर्शित किया गया था। इस जुलस में हजारों की संख्या में वालक वालिकाएं, युवक वृद्धों व औरतों ने भाग लिया। यह अपने आप में अनुठा प्रयास था।

स्मरण रहे कि यह जुलूस पर्यूषण पर्व के समापन दिवस पर नगर में प्रथम वार निकाला था तथा यह म० सा०श्री मनोहर श्री जी के प्रेरणा से प्रेरित होकर मण्डल के सदस्यों में एक नवीन जोश का संचार हुआ जिसके कारण मण्डल ने इस कार्य को बड़ो सफलता के साथ निभाने के साथ ही साथ कर्तव्यनिष्ठा व सजगता का परिचय दिया।

७. जैसलमेर पैदल संघ यात्रा—

वाड़मेर से जैसलमेर (लोद्रवपुर) पैदल चतुर्विध संघ यात्रा दिनांक ३१-१-७४ को वाड़मेर से जैन श्री संघ के तत्वाधान में रवाना हुआ। जिसमें पैदल यात्रा करने का लाभ मुनिराज सम्यानन्द जी एवं मुनि श्री जयानन्द जी महाराज तथा साध्वी समुदाय मनोहर श्री जी आदि ठाणा ६ एवं साध्वी प्रवासीजी आदि ठाणा ७ तथा ७३ श्रावक एवं २७७ श्राविकाओं ने उठाया। यह संघ गन्तव्य तीर्थ स्थान दिनांक १२-२-७४ फागुण वदी ६ मंगलवार को तेरह दिन के निरन्तर यात्रा करते हुए सकुशल पहूंचा। इस कार्य में आदेश्वर जैन मण्डल ने अपनी सेवाएें निम्न प्रकार से दी। पैदल चलने वाले यात्रियों की सेवा करना, खाने-पीने की व्यवस्था करना, यात्रियों के लिए दवाईयां वितरण करना, पैदल यात्रियों के सामान को लाने व ले जाने की व्यवस्था करना आदि प्रमुख रही। आदेश्वर जैन मण्डल के कई सदस्य लगातार पैदल संघ के साथ रहे। तथा अन्य सदस्यों ने भी समय समय पर अपनी सेवाएें दी। जैन श्री संघ एवं यात्रियों ने मण्डल के कार्यकर्ताओं की भूरी-भूरी प्रशंसा की, तथा जैन श्री संघ की ओर से मण्डल को २५१ रु. की नकद राशि व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

८. महावीर जयन्ती—

वाड़मेर नगर में गठित सभी जैन सम्प्रदायाओं की भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण महोत्सव समिति की ओर से ४ अप्रेल १९७४ को महावीर जयन्ती के कार्यक्रम में मंडल ने सक्रिय योगदान दिया। मंडल ने इस जयन्ती के अवसर पर श्री महावीर स्वामी के जन्म कल्याण महोत्सव मेरू पर्वत स्नान एवं पूज्यनीय त्रिशला माता को आये चौदहा स्वप्न की अत्यन्त ही सुन्दर झांकियों का प्रदर्शन किया। जिसकी सभी ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

श्री पार्श्व जैन मंडल

कल्याणपुरा, बाड़मेर

卐

संक्षिप्त मंडल परिचय

कुर्सियों पर बायें से दायें–सर्व श्री भूरचन्द (क्रीडा मंत्री), जेठमल जैन (सचिव) बख्तावरमल जैन (अध्यक्ष), बंशीलाल (पुस्तकालय मंत्री) सोहनलाल (साहित्यमंत्री खड़े बांये से दायें–सर्व श्री छगनलाल (व्यवस्था मंत्री), वंशीधर (समाज सेवी मंत्री), पोकरदास (सजावट मंत्री), हस्तीमल (स. कोषाध्यक्ष), टीकमचन्द (स. सांस्कृतिक मंत्री), शंकरलाल (सलाहकार) ।

अस्थाई चुनाव —

कल्याणपुरा में युवा वर्ग काफी संख्या में है। धर्म के बारे में जानकारी प्राप्त करने, युवकों को अपने जीवन में धर्म की महत्ता और आवश्यकता का बोध कराने के लिये विचार किया और अपने को गठित करने का फैसला किया। बुजुर्गों ने इस कार्य की सराहना करते हुए प्रोत्साहित किया। फलस्वरूप ३० युवकों की एक बैठक हुई और इस कार्य को शुरू करने का निर्णय लिया गया। इस प्रकार से ये ३० युवक इस मण्डल के प्रथम सदस्य बने। अस्थाई तौर पर दो सदस्यों की एक कार्यकारिणी बनायी गई। अध्यक्ष पद का भार श्री बख्तावरमल जैन और सचिव पद श्री सोहनलाल सेठिया को सौंप कर विधान तथा नियम बनाने का आदेश दिया गया।

चुनाव —

दिनांक १९-९-७३ को इस मण्डल की कार्यकारिणी के चुनावों हेतु १९० सदस्यों ने अपनी उपस्थिति दी। इसमें विधान का मसविदा पेश किया गया। कुछ संशोधन के पश्चात विधान सर्व सम्मति से पारित किया गया। उसी दिन आम सभा में अस्थाई कार्यकारिणी को हटाकर आम चुनाव किये गये। जिनमें विधान की धारा के अनुसार केवल दो पदों क्रमश: अध्यक्ष एवं सचिव के लिये चुनाव का अधिकार आम सभा को दिया गया। जिनमें सर्व सम्मति से अध्यक्ष पद के लिये श्री बख्तावरमल जैन तथा सचिव पद के लिये श्री जेठमल संखलेचा को चुना गया तथा उन्हें अन्य कार्यकारिणी के पदों के लिये पदाधिकारियों को चुनने का अधिकार भी दिया गया।

निम्नानुसार कार्यकारिणी का गठन किया गया

१. साहित्य मंत्री — श्री सोहनलाल सेठिया
२. सांस्कृतिक मंत्री — श्री वोहरीदास
३. क्रीड़ा मंत्री — श्री भूरचन्द जैन
४. कोषाध्यक्ष — श्री पारसमल जैन
५. व्यवस्था मंत्री — श्री छगनलाल जैन
६. पुस्तकालय एवं वाचनालय मंत्री श्री वंशीलाल मेहता
७. स्वागत मंत्री — श्री छगनलाल छाजेड़
८. समाज सेवी मंत्री — श्री वंशीधर
९. सजावट मंत्री — श्री पोकरदास
१०. जन सम्पर्क मंत्री — श्री भगवानदास बोथरा

उपरोक्त मंत्रीगणों के सहयोग एवं सहायक के तौर पर दो-दो अन्य सदस्यों को भी लिया गया।

इसके अतिरिक्त मण्डल के मार्गदर्शन एवं प्रगति के लिये सलाह देने के लिये समाज के कुछ लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्तियों की एक सलाहकार समिति भी बनायी गई जिनमें निम्न सदस्य हैं—

१. श्री सुल्तानमल जैन एडवोकेट
२. श्री मांणकमल बोथरा
३. श्री जोरावरमल मूता
४. श्री बख्तावरमल मालू
५. श्री हीरालाल छाजेड़
६. श्री पन्नालाल
७. श्री वस्तीराम वोहरा
८. श्री धर्मचन्द वोहरा
९. श्री देवीचन्द
१०. श्री दयारामदास

उदघाटन समारोह—

दिनांक २३-९-७३ को प्रात: ८ वजे विद्यालय निरीक्षक श्री चन्दनमल गुडलिया (जैन) द्वारा इस मण्डल का उद्घाटन श्री पार्श्व जैन धर्मशाला कल्याणपुरा बाड़मेर में किया गया। उद्घाटन के ठीक पश्चात परम विदूषी विश्व प्रचारिका समन्वय साधिका श्रीविचक्षण श्री जी म. सा. की सुशिष्या कोयल कण्ठी श्री मनोहर जी म. सा. द्वारा इस मण्डल की कार्यकारिणी तथा सदस्यों का विधिवत शपथ ग्रहण करवाई गई तथा श्री टीकमचन्द पड़ाईया के मधुर भजनों द्वारा सब को रसास्वादन कराकर कार्यक्रम का समापन किया गया।

करना, खाने-पीने की व्यवस्था करना, बिस्तरों की व्यवस्था करना एवं देव दर्शन कराने की व्यवस्था करना आदि तथा यहां निम्न प्रकार से तीर्थयात्री एवं संघ आये हैं—

(१) ऊझा उ. गुजरात
(२) गुजरात
(३) अहमदाबाद
(४) सुमेरपुर
(५) बम्बई।

सांस्कृतिक गतिविधियां—

मण्डल उद्घाटन के ठीक पन्द्रह दिन बाद हमारे मण्डल ने एक शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रम ओलियाँ के सुअवसर पर पेश किया। जिसमें नृत्य, गीत, भजन, कव्वाली, विचित्र वेशभूषा तथा मनमोहक नाटक श्री पाल मैना सुन्दरी, रात्रि भोजन, दहेज, कन्जूस सेठ आदि थे।

जुलूस एवं भजन मण्डली—

समय-समय पर साधुवों एवं साध्वियों के चातुर्मास के बाद विहार के आगमन पर हमारे मण्डल द्वारा स्वागत के लिये जुलूस निकाले गये तथा कार्तिक पूर्णिमा को आंगी रचना, रात्रि को विभिन्न प्रकार की रोशनियों से मन्दिर व धर्मशाला को सजाया गया और भजन मण्डली द्वारा सुमधुर गीतों तथा भजनों से लोगों का रसास्वादन करवाया गया।

तीर्थ यात्री एवं संघ

श्री नाकोड़ाजी एवं लोद्रवपुर के दर्शन करने वाले श्रावकों को आते व जाते समय में बाड़मेर विश्राम करते हुए जाते हैं। इस बीच समय में हमारा मण्डल उनकी सेवाओं में तत्पर रहता हैं। जैसे ठहरने की व्यवस्था

अन्य सेवा—

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष पौष वदि दसवी को भारत विख्यात जैन तीर्थ श्री नाकोड़ाजी पर जैन धर्म के तेवीसवें तीर्थङ्कर भगवान श्री पार्श्वनाथ जी के जन्म महोत्सव पर आयोजित होने वाले मेले में यात्रियों के ठहरने, ओढने बिछाने के बिस्तरों एवं भोजनशाला में भोजन की सुव्यवस्थित व्यवस्था करने में श्री पार्श्व जैन मण्डल के कार्यकर्ताओं ने अपनी सेवायें दी। अध्यक्ष के नेतृत्व में मण्डल के करीब ५० कार्यकर्ताओं ने दिन रात मेले के दिनों में मेले की समुचित व्यवस्था बनाये रखने में सक्रिय योगदान दिया। देव दर्शन एवं भोजन की भीड़ पर नियंत्रण रखने में मण्डल की सेवाओं की सभी क्षेत्रों में प्रशंसा की गई। श्री पार्श्व जैन मण्डल को उनकी सेवाओं के प्रति श्री श्वेताम्बर जैन तीर्थ नाकोड़ा की पेढ़ी की ओर से ५०१/- रू० पुरस्कार के रूप में दिये गये।

जैसलमेर पैदल संघ यात्रा—

बाड़मेर से जैसलमेर (लोद्रवपुर) पैदल चतुर्विध संघ यात्रा दिनांक ३१-१-७४ को बाड़मेर से जैन श्री संघ के तत्वाधान में रवाना हुआ। जिसमें पैदल यात्रा करने का लाभ मुनिराज सम्यानन्द जी एवं मुनि श्री जयानन्द जी महाराज तथा साध्वी समुदाय मनोहर श्री जी आदि ठाणा ६ एवं साध्वी प्रवासीजी आदि ठाणा ७ तथा ७३ श्रावक एवं २७७ श्राविकाओं ने उठाया। यह संघ गन्तव्य तीर्थ स्थान दिनांक १२-२-७४ फागुण वदी ६ मंगलवार को तेरह दिन के निरन्तर यात्रा करते हुए सकुशल पहूंचा। इस कार्य में श्री पार्श्व जैन मण्डल ने अपनी सेवाऐं निम्न प्रकार से दी। पैदल चलने वाले यात्रियों की सेवा करना, खाने-पीने की व्यवस्था करना, यात्रियों के लिए दवाईयां वितरण करना, पैदल यात्रियों के सामान को लाने व ले जाने की व्यवस्था करना आदि प्रमुख रही श्री पार्श्व जैन मण्डल के कई सदस्य लगातार पैदल संघ के साथ रहे। तथा अन्य सदस्यों ने भी समय समय पर अपनी सेवाऐं दी। जैन श्री संघ एवं यात्रियों ने मण्डल के कार्यकर्ताओं की भूरी-भूरी प्रशंसा की, तथा जैन श्री संघ की ओर से मण्डल को २५१ रु. की नकद राशि व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

पुस्तकालय एवं वाचनालय

मण्डल ने पुस्तकालय का कार्य भी विधिवत शुरू कर दिया हैं। उसमें जैन धर्म सम्बन्धी पुस्तकें, समाचार पत्र एवं पत्रिकायें मुख्य है। उसके अलावा भी समाचार पत्र दैनिक, साप्ताहिक, मासिक मंगवाये जाते हैं। उनसे कई श्रावक पढ़कर लाभान्वित होते है। ऐसी व्यवस्था मण्डल ने की है।

महावीर जयन्ती उत्सव—

बाड़मेर नगर में सभी जैन सम्प्रदाओं की गठित भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण महोत्सव समिति द्वारा महावीर जयन्ती का विशाल पैमाने पर आयोजन किया गया जिसमें इस मण्डल ने भगवान महावीर के जीवन से सम्बन्धित दो झांकियों का प्रदर्शन किया गया। महावीर भगवान पर संगम देव एवं अनार्य देश में हुए उपसर्गों को मंडल की झांकियों में दिखाया गया जिसकी सभी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

महावीर जयन्ती पर संगीत प्रतियोगिता में इस मंडल के कई कार्यकर्त्ता पुरूस्कार से सम्मानित हुए।

(शेष पृष्ठ १११ का)

६. बाड़मेर नगर में श्री वर्द्धमान जैन उद्योग शाला का उद्घाटन हुआ जिसमें महिला मण्डल ने उद्-घाटन समारोह के समय भरपूर सहयोग दिया।

चौमासा समाप्ति पर भव्य जलूस निकला जो बाड़मेर नगर के मुख्य २ रास्ते से होता हुआ कल्याणपुरा पहुंचा जिसमें महिला मण्डल ने सक्रिय सहयोग दिया। भजनों एवं नारों की झडी लगादी।

बाड़मेर नगर में सभी जैन समुदायों द्वारा गठित भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण महोत्सव समिति द्वारा महावीर जयन्ती पर आयोजित जलूस में महिला मंडल ने सास बहु की सुन्दर झांकी का प्रदर्शन भी किया।

बाड़मेर जैन श्री संघ की ओर से पूज्यवर मनोहर श्री महाराज साहिवा के तत्वाधान में जो पैदल संघ जैसलमेर निकला गया उसमें मंडल ने सक्रिय सेवा करने में सहयोग दिया।

महिला मंडल सदैव बाड़मेर जैन श्री संघ की सेवा करने में सक्रिय रहेगा।

बाड़मेर जैन समाज द्वारा स्थापित–

श्री वर्द्धमान जैन उद्योग शाला एक उपलब्धि

—श्री देवीचन्द गुलेच्छा

रोजगार जीवन की ग्रहम् समस्या है प्रत्येक व्यक्ति को जीवन संचालन के लिए काम प्राप्त करना अनिवार्य होता है। पश्चिम राजस्थान का अविकसित बाड़मेर जिला रोजगार व शिक्षा की दृष्टि से पिछड़ेपन का शिकार रहा है। स्त्री शिक्षा तो इस जिले में पूर्णत: उपेक्षित रही है, परिणाम स्वरूप रोजगार प्राप्त कर पारिवारिक जीवन में स्त्रियां का आर्थिक योगदान ग्रंश मात्र ही होता है, तकनिकी या अन्य प्रकार के उद्योग सम्बन्धी समूचित प्रशिक्षण के अभाव में महिलाओं का रोजगार प्राप्त करना प्राय: कठिन होता है। सामाजिक विपमताओं से प्रभावित परिवारों की महिलाओं को आर्थिक सफलता प्रदान कराने के लिए, स्थानीय जैन समाज का ध्यान कुछ वर्ष पूर्व पड़े दुर्भिक्ष-अकाल के दिनों आकृपित कर चेष्टाएं की गई थी कि महिलाओं के रोजगार हेतु बाड़मेर नगर में विशेष कर प्रौढ़ महिलाओं व बाल विधवाओं के लिए उद्योग शाला स्थापित की जाय।

जैन मुनि श्री कान्ति सागर म० सा० व श्री दर्शन सागर म. सा. के प्रयत्नों द्वारा स्थानीय जैन समाज ने एक निम्न ३० सदस्यों की समिति का गठन किया।

१. श्री शंकरलाल पड़ाईया
२. ,, हस्तीमल ,,
३. ,, नेमीचन्द ,,
४. ,, सुल्तानमल वकील संखलेचा
५. ,, सागरमल संखलेचा
६. ,, दयारामदास ,,
७ ,, रिखबदास ,,
८. ,, राणमल सेठिया
९. ,, हमीरमल नाहटा
१०. ,, वोरीदास लुंणिया
११. ,, भगवानदास वोथरा
१२. ,, मुल्तानमल ,,
१३. ,, मॉणकमल ,,
१४. ,, ताराचन्द ,,
१५. ,, हुकमीचन्द मालू
१६. ,, ग्रासुलाल ,,
१७. ,, ग्रासुलाल ,,
१८. ,, माणकमल वोहरा
१९. ,, सुरतानमलजी ,,
२०. ,, वीरचन्द वोहरा
२१. ,, शंकरलाल वडेरा
२२. ,, रिखवदास ,,
२३ ,, भूरचन्द बाड़ीवाल
२४. ,, सूरजमल ,,
२५. ,, रिखवदास भंसाली
२६. ,, ग्रासुलाल छाजेड़
२७. ,, केसरीमल श्रीश्रीमाल
२८. ,, देवीचन्द गुलेच्छा
२९. ,, राजमल तातेड़
३०. ,, करनमलजी वडेरा

उद्योग स्थापन व संचालन हेतु निम्न प्रकार गण मान्य महानुभावों द्वारा तत्काल २४०००/– की धन राशि सहर्ष प्रदान करने की घोषणा की—

१००१) श्री द्वारकादास राठी
१००१) ,, रिखबदास जैन (ठेकेदार)
१००१) ,, मुल्तानमल आदमल संखलेचा
१००१) ,, जीवणमल मुल्तानमल छाजेड़
१००१) ,, हजारीमल मांणकमल बोथरा
१००१) ,, केसरीमल देवीचन्द वडेरा
१००१) ,, हीरालाल किस्तुरचन्द मालू
१००१) ,, पोकरदास रिखबदास वडेरा
१००१) ,, फौजमल आदमल ऊकारचन्द
१००१) ,, मथरादास फौजमल पड़ाईया
५०१) ,, ताराचन्द तगामल बोथरा
५०१) ,, अमोलकचन्द द्वारकादास संखलेचा
५०१) ,, पीरचन्द उदयचन्द बोथरा
५०१) ,, दयारामदास शम्भूराम
५०१) ,, गोड़ीदास टीकमचन्द
५०१) ,, मुत्तावालचन्द शेरमल मालू
५०१) ,, वृजलाल मदुमल बोथरा
५०१) ,, लीछमनदास आसुलाल बोथरा
५०१) ,, वस्तीराम चिन्तामणदास झन्डामल बोहरा
५०१) ,, चिमनीराम खीमराज छाजेड़
५०१) ,, जैकचन्द पुनमचन्द पड़ाईया
४०१) ,, डूगरमल रीखबदास माणकमल नगराज मालू
३५१) ,, नेमीचन्द खीमराज बोथरा
३५१) ,, वगतावरमल हजारीमल पड़ाईया
३५१) ,, पन्नालाल सुरतानमल जैकचन्द संखलेचा
३५१) ,, भंवरलाल सागरमल संखलेचा
३५१) ,, सुरतानमल चिमनीराम संखलेचा
३०१) ,, करनमल वनेचन्द बोहरा
२५१) ,, केसरीमल हरखचन्द बोथरा
२५१) ,, मुल्तानमल मोहनलाल
२५१) ,, केसरीमल मुलचन्द भन्साली
२५१) ,, माणकमल खीमराज मोढोवाला
२५१) ,, केसरीमल गंगाराम बोथरा
२५१) ,, वगतावरमल रूगनाथमल छाजेड़
२५१) ,, आसुलाल शंकरलाल एण्ड पार्टनर
२५१) ,, केसरीमल तगाराम संखलेचा
२५१) ,; कल्याणदास हीरालाल बोथरा
२५१) ,, घमण्डीराम धनराज लूणिया
२५१) ,, केसरीमल शंकरलाल बोथरा
२५१) ,, मुत्तारिखवदास झन्डामल धारीवाल
२०१) ,, पुनमचन्द वगतावरमल रामसर
२०१) ,, मुल्तानमल द्वारकादास पड़ाईया
२०१) ,, कल्याणदास मांणककल फौजमल बोहरा
२०१) ,, ताराचन्द आसुलाल संखलेचा
२०१) ,, द्वारकादासं गुणेशमल बोथरा
२०१) ,, राणमल नेमीचन्द शंकरलाल रणधोत्राला
२०१) ,, लाधुराम लीलचन्द पड़ाईया
२०१) ,, लिछमणदास गुलाबचन्द लूणिया
१५१) ,, व्यापारीलाल हाकमचन्द जैन
१५१) ,, राणामल शंकरलाल वडेरा
१५१) ,, हजारीमल पुनमचन्द पड़ाईया
१५१) ,, गोरधनदास अभयकुमार जैन
१५१) ,, केसरीमल कल्याणदास मालू
१५१) ,, गुप्तनाम से ह० रिखबदास ठेकेदार
१०१) ,, शंकरलाल खीमराज बोहरा
१०१) ,, बालकिशन अग्रवाल

२०१) ,, धरूमल सेऊमल सिन्वी
१०१) ,, राज़मल फरसमल छाजेड़ (सियाणी वाला)
१०१) ,, केसरीमल पूनमचन्द भन्साली
१०१) ,, हमीरमल हरखचन्द नाहटा

वर्ष १९७३-७४ साध्वीजी म० श्री मनोहर श्री जी म० व मुक्ति प्रभाश्रीणी म० आदि ढाणा ६ का चतुर्मास वाड़मेर शहर में होने से स्थानीय जैन व जैनेतर जनता से सामाजिक, धार्मिक जाग्रति व अभिरूची विशेष रही। आपके प्रवचन सुनने को हजारों लोग आते आपके ही उपदेश द्वारा आपके ही सनिध्य में वाड़मेर नगर में जून ७३ में प्रथम ग्रीष्म कालिन धार्मिक प्रशिक्षण शिविर जैन समाज द्वारा आयोजित किया गया। २२५ विद्यार्थी सम्मिलित रूप से शिविर में धार्मिक अध्यात्मिक नैतिक, चारित्रिक व जैन दर्शन सम्ववी शिक्षाओं से लाभान्वित हुए। आपके अथक प्रयत्नों का ही फल था कि शिविर का समापन निर्विघ्न सम्पन्न हुआ, जो नगर के युवकों में धार्मिक अभिरूचि पैदा करने का अनुपम अवसर कहा जा सकता है।

साध्वीजी महाराज के प्रयत्नों द्वारा श्री वृद्धमान जैन उद्योग शाला की स्थापना कर संचालित करने का स्थानीय जैन समाज ने वीड़ा उठाया समिति ने तत्काल निम्न प्रकार कार्य कारिणी का गठन श्री हुक्मीचन्द मालू की अध्यक्षता में किया।

१. अध्यक्ष—श्री हुकमीचन्द मालू
२. उपाध्यक्ष—श्री चिन्तामणदास संखलेचा
३. मंत्री—श्री देवीचन्द गुलेच्छा
४. कोपाध्यक्ष—श्री संपतराज वोथरा
५. सदस्य—श्री शकरलाल पड़ाईया
६. ,,—,,—भगवानदास वोथरा
७. ,,—,,—शंकरलाल वडेरा

कार्यकारिणी द्वारा प्राथमिक तौर पर पापड़ उद्योग लगाने का निर्णय किया जिसको क्रियान्वित करने हेतु उद्योग शाला का उद्घाटन श्री मगराज जैन युवक संयोजक नेहरू युवक केन्द्र, वाड़मेर की अध्यक्षता में २९-१०-७३ को स्थानीय प्रसिद्ध व्यौपारी श्री चिंतामणदासजी पड़ाइया (M/s. चिंतामणदास हंसराज) के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। श्री पड़ाइया ने २६०१) रू० की धन राशि भी उद्योग शाला को भेंट की। ता० १३-११-७३ से उद्योग शाला का पापड़ उद्योग शुरू कर जैन समाज द्वारा संचालित शाला ने प्रौढ़ महिलाओं व वाल विधवाओं के रोजगार के अवसर जुटाने का कार्य शुरू किया। शाला में करीव ४० महिलाएं आंशिक रोजगार व १० महिला एवं पुरुष कर्मचारी पूर्णत रोजगार प्राप्त कर रहे हैं।

उद्योग शाला का उद्देश्य महिलाओं के लिए ज्यादा से ज्यादा रोजगार के अवसर प्राप्त कराना होगा, वहां समाज को पापड़ आदि उपभोगता सामग्री ही नहीं वल्कि अन्य मसाले आदि विशुद्ध विना मिलावट के प्रदान करना भी होगा जो विना लाभ हानि के सप्लाई करने के प्रयत्न किये जायेगे। ऐसे रचनात्मक कार्य को प्रोत्साहन देने हेतु समाज सेवी संस्थाओं व महानुभावों से निवेदन है कि नये उद्योग व उद्योग सम्वन्वी विविध प्रशिक्षण व्यवस्था स्थापना में सहयोग हेतु अपने अमूल्य सुझाव विस्तार से भेजकर जनहित के इस पुनीत कार्य में सहयोग दे।

पत्ता—श्री वर्द्धमान जैन उद्योगशाला
जैन न्याती नोहरा, लक्ष्मी वाजार
वाड़मेर (राजस्थान)

बाड़मेर में—

भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण महोत्सव समिति

विश्व को सत्य और अहिंसा का मार्ग बताने वाले विश्व की महान विभूति भगवान महावीर स्वामी की २५०० वीं निर्वाण महोत्सव १३ नवम्बर १९७४ से एक वर्ष १५ नवम्बर १९७५ तक सम्पूर्ण विश्व में मनाया जा रहा है। शान्तिप्रिय भारत वर्ष में जैन धर्मावलम्बियों के २४ वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के २५०० वां निर्वाण महोत्सव को पूरे वर्ष तक मनाने का निर्णय सरकारी स्तर पर भी किया गया है। भारत के राष्ट्रपति के संरक्षण में एक अखिल भारतीय समिति का गठन किया गया है जो इस निर्वाण वर्ष काल में कई प्रकार के धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं विकास सम्बन्धी कार्यक्रमों को हाथ में लिया गया है। देश में हर स्तर पर सरकारी एवं गैर सरकारी स्तरों पर समितियों का गठन होना आरम्भ हो गया। कई प्रदेशों, जिलों, तहसीलों नगरों में समितियों का गठन हो गया है। कई प्रकार के निर्माण कार्य आरम्भ भी हो गये है। सरकार के सभी स्तरों पर इन समितियों के साथ-साथ जैन धर्मावलम्बियों के सभी सम्प्रदायों द्वारा मिलकर समितियों का गठन किया है जो अपने स्तर एवं सरकारी स्तर पर शीघ्रता से कार्यक्रम सम्पन्न करने का अवलोकन एवं प्रयास करने लगी है। राजस्थान प्रदेश के सीमावर्ती बाड़मेर जिले के बाड़मेर नगर में भी भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण महोत्सव समिति का गठन जैन जगत के सभी सम्प्रदायों ने मिलकर ११ नवम्बर १९७३ को किया। इस समिति में बाड़मेर जैन समाज के श्वेताम्बर मूर्ति पूजक, तेरापंथ एवं बाईस सम्प्रदाय का पूरा पूरा प्रतिनिधित्व किया गया है।

बाड़मेर नगर में इस समिति के गठन करने के लिये श्री भूरचन्द जैन ने पहली बैठक ११ नवम्बर १९७३ को श्री प्रतापजी की पोल में बुलाई और भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण महोत्सव समिति का गठन किया गया। इस समिति की कार्यकारिणी इस प्रकार बनाई गई जिसमें बाड़मेर जैन समाज के श्वेताम्बर मूर्ति पूजक समाज के ११, तेरापंथ सम्प्रदाय के ५ एवं

—श्री उदयराज जैन

बाईस सम्प्रदाय के पांच सदस्यों का प्रतिनिधित्व दिया गया। इस चयन में श्वेताम्बर मूर्ति पूजक समाज के श्री वर्द्धमान जैन नवयुवक मंडल, श्री आदेश्वर जैन मंडल एवं श्री पार्श्व जैन मंडल का, तेरापंथ सम्प्रदायक जैन युवक परिषद् एवं बाईस सम्प्रदाय के जैन युवक संगठन का पूरा पूरा प्रतिनिधित्व भी दिया गया, ताकि समय २

पर आयोजित सभी कार्यक्रमों में युवक वर्ग उत्साह से अपना योगदान दें सके।

१. श्री भंवरलाल चौपड़ा—अध्यक्ष
२. ,, हुक्मीचन्द मालू- उपाध्यक्ष
३. ,, भंवरलाल गांधी—उपाध्यक्ष
४. ,, भूरचन्द जैन—मंत्री
५. ,, नरपतचन्द सालेचा—उपमंत्री
६. ,, लूणकरण संखलेचा—उपमंत्री
७. ,, उदयराज जैन—कोषाध्यक्ष
८. ,, वंशीधर बोहरा प्रचार मंत्री
९. ,, भंवरलाल सालेचा पी. टी. आई.—प्रचार मंत्री
१०. ,, भंवरलाल धारीवाल—सदस्य
११. ,, चिन्तामणदास संखलेचा— ,,
१२. ,, चम्पतराज वोथरा — ,,
१३, ,, वच्छराज सिंघवी — ,,
१४. ,, वगतावरमल पड़ाईया — ,,
१५. ,, हस्तीमल वडेरा — ,,
१६. ,, नेमीचन्द गुलेच्छा — ,,
१७. ,, ओमप्रकाश वांठिया — ,,
१८. ,, ईसरदास माडोत — ,,
१९. ,, मोतीलाल गांधी — ,,
२०. ,, जसराज चौपड़ा — ,,
२१. ,, केवलचन्द मेहता — ,,

इस समिति की कार्यकारिणी गठन के पश्चात वाड़मेर जैन समाज के तीनों सम्प्रदायों के गणमान्य नागरिकों को सलाहकार के रूप में लिया गया। जिसमें छः श्वेताम्बर मूर्ति पूजक समाज के, तीन तेरापंथ के एवं तीन बाईस सम्मुदाय के थे। वाड़मेर विधान सभा के सदस्य जैन होने के नाते उन्हें भी सलाहकार समिति में सम्मलित किया गया। अत: इस समिति की सलाहकार समिति निम्न प्रकार से बनाई गई।

१. श्री वृद्धिचन्द जैन विधान सभा सदस्य, वाड़मेर
२. ,, सुल्तानमल जैन वकील
३. ,, मुल्तानमल जैन
४. ,, आसूलाल भगवानदास मालू
५. ,, हस्तीमल ज्वाहरमल पड़ाईया
६. ,, भंवरलाल सोनराज वोहरा
७. ,, रिखवदास वडेरा
८. ,, राणामल ज्वारमल चौपड़ा
९. ,, बोडमल सिरेमल
१०. ,, चन्दनमल वांठिया
११. ,, रामजीवन
१२. ,, नेमीचन्द गुलेच्छा
१३. ,, भूरचन्द ढ़ेलरिया

इस सलाहकार समिति के अतिरिक्त वाड़मेर नगर में जितने भी सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं में कार्य कर रहे अधिकारी वर्ग के महानुभाव इस समिति के पदेन सलाहकार नियुक्त किये गये जो इस प्रकार है।

१. श्री डा. आर. डी. शाह उपचिकित्सा एवं स्वास्थ्य (प० नि०) अधिकारी, वाड़मेर
२. ,, चन्दनमल गुड़लिया विद्यालय निरीक्षक
३. ,, आर. एम. कोठारी—उपखण्ड अधिकारी
४. ,, बाबूमल मूथा—कोषाधिकारी
५. ,, मगराज जैन—युवक संयोजक, नेहरू युवक केन्द्र
६. ,, केवलचन्द जैन–विकास अधिकारी पं. स. वाड़मेर
७. ,, जी. एम. मेहता–स. रजिस्ट्रार को. आ. सोसाइटी
८. ,, डा. सिंधवी—राजकीय चिकित्सालय
९. ,, डा. संचेती राजकीय चिकित्सालय
१०. ,, उगमराज महणोत–जन सम्पर्क अधिकारी, वाड़मेर
११. ,, भूरचन्द शाह प्रवक्ता राजकीय महाविद्यालय
१२. ,, स्वरूपसिंह–सचिव – नगरपालिका, वाड़मेर
१३. ,, मगनराज जैन मैनेजर राजस्थान बैंक
१४. ,, चम्पालाल मैनेजर कोओपरेटिव बैंक

इन पदेन सलाहकारों के अतिरिक्त जब जब भी निर्वाण वर्ष काल में सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं में जैन अधिकारी आवेगें वे हमारे पदेन सलाहकार के रूप में सहयोग देते रहेंगे।

इस निर्वाण महोत्सव समिति ने अपना कार्य आरम्भ कर दिया और देश के विभिन्न भागों से पत्र व्यवहार से अपना सम्पर्क स्थापित किया। देश एवं राज्य स्तर पर गठित जैन सम्प्रदायों की समितियों से

इस समिति का बराबर एवं नियमित रूप से पत्र व्यवहार द्वारा सम्पर्क है। समिति के कई कार्यकलापों को निर्वाण वर्ष में पूर्ण करने के लिये मौजूदा २१ सदस्यों की कार्य कारिणी को बढ़ाकर ३३ तक कर दिया गया। जो बारह सदस्य लिये गये उनमें मूर्ति पूजक समाज के छः, तेरापंथ समाज के तीन एवं बाईस समाज के तीन निम्न सदस्यों को कार्य कारिणी में सम्मलित किया गया।

१. श्री जेठमल संखलेचा
२. ,, वंशीलाल मेहता
३. ,, रतनलाल संखलेचा
४. ,, मोहनलाल बोथरा
५. ,, जेठमल सिंघवी
६. ,, सोहनलाल सिंघवी
७. ,, लूणकरण गुलेच्छा
८. ,, पुखराज बालकिशनजी
९. ,, नेमीचन्द गुलेच्छा
१०. ,, ओमप्रकाश गुलेच्छा
११. ,, कान्तिलाल ढेलरिया
१२. ,, रतनलाल गुलेच्छा

बाड़मेर नगर में ११ नवम्बर १९७३ से स्थापित भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण महोत्सव समिति ने ४ अप्रेल १९७४ की महावीर जयन्ती के चार मास के कार्यकाल में कई बैठके आयोजित कर भगवान महावीर के निर्वाण वर्ष को सफलीभूत बनाने का भरसक प्रयास किया। समिति ने इस निर्वाण वर्ष में महावीर भवन, महावीर कोलानी, कई महावीर मार्ग, महावीर पुस्तकालय, महावीर प्याऊ, महावीर औषधालय, महावीर बाजार, महावीर बस्ती, महावीर बालकेन्द्र, महावीर मातृ शिशुकल्याण केन्द्र, महावीर उद्यान आदि कई निर्माण कार्य करवाने का निश्चय किया गया। इसी प्रकार महावीर स्टाम्प सरकार से निकलवाने का अनुरोध किया गया। सरकार द्वारा प्रदर्शनी, चलचित्र प्रदर्शन, साहित्य प्रकाशन आदि कई प्रकार के कार्यक्रम सम्पन्न करवाने में इस समिति की भावी योजनाएँ हैं। समिति द्वारा जैन साहित्य जैन पत्र पत्रिकाओं महावीर साहित्य आदि की प्रदर्शनी लगाने के कार्यक्रम की योजना भी है। भगवान महावीर स्वामी के जीवन चरित्र के सभी चित्रों की स्थाई प्रदर्शनी लगाने का भी इस समिति की भावी योजना है। सभी जैन तीर्थों को सड़क, पानी, बिजली एवं टेलीफोन से जुड़वाने का यह समिति पूरा प्रयास करेगी। प्रचार के विभिन्न साधनों से यह समिति नियमित रूप से कार्य कर रही है। इस समिति के माध्यम से जैन युवकों की एक भारत दर्शन यात्रा, जैन शिक्षण शिविर, सेमीनार, गोष्ठियों आदि कार्यक्रम सम्पन्न करने की योजना भी है।

बाड़मेर नगर में गठित भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण महोत्सव समिति की ओर से महावीर जयन्ती के अवसर पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये गये। जिसमें जलूस, लेख प्रतियोगिता, संगीत प्रतियोगिता सार्वजनिक सभा एवं अखिल भारतीय जैन समाचार पत्र पत्रिकाओं की प्रदर्शनी प्रमुख थी। बाड़मेर नगर में इस बार महावीर जयन्ती सभी जैन सम्प्रदाओं ने मिलकर बड़ी घूमधाम से मनाई। जयन्ती के दिन प्रातः एक विराट जलूस का आयोजन किया गया जो प्रताप जी की पोल से आरम्भ होकर ओसवाल भवन मार्ग लक्ष्मी बाजार, जवाहर चौक, रतनसिंह बाजार, सदर बाजार, गांधी चौक, जैन छात्रावास, स्टेशन मार्ग, ऐसो पेट्रोल पम्प, वकील सुल्तानमल जैन के मकान के पास से कल्याण पुरा होता हुआ जैन न्याति नोहरे में आकर समाप्त हुआ।

इस जलूस में सबसे आगे रेगिस्तान के प्रतीक ऊंट पर नगारे, घोड़े पर जैन ध्वज था। पीछे तेरापंथ युवक परिषद् की ओर से महावीर के संदेशों का सुन्दर प्रदर्शन था। जिसके बाद में कई मोटर साइकलों एवं स्कूटरों पर सवार लोग थे। जिसके पीछे श्री वर्द्धमान जैन मण्डल के बालकों का बैण्ड था जो सफेद पोशाक में जलूस की शोभा बढ़ा रहा था। जिसके पीछे भजन मंडली की सुन्दर व्यवस्था थी। धार्मिक गीतों से सारा नगर गुंजायमान होता था। भजन मंडली के पश्चात अहिंसा की प्रतिमूर्ति भगवान महावीर स्वामी का अत्यन्त ही सुन्दर आदमकद रंगीन चित्र था जो जलूस की शोभा

बढ़ा रहा था। जिसके पीछे श्री वर्द्धमान जैन मंडल की तपस्वी कमठ एवं श्री पार्श्वनाथ स्वामी की भांकी थी। जिसके बाद श्री आदेश्वर जैन मंडल की त्रिशला माता के चौदह स्वप्न एवं भगवान महावीर को मेरु पर्वत स्नान की दो अत्यन्त ही सुन्दर एवं कलात्मक भांकियां ट्रकों पर बनाई गई थी। जिसके पीछे स्थान- कवासी जैन समाज द्वारा भगवान महावीर का संसार त्याग की भांकी एक सुन्दर रथ में सजाई गई थी जो दान देते हुई दृष्टिगोचर हो रही थी।

इन भांकियों के प्रदर्शन में इसके पीछे श्री पार्श्व जैन मंडल की ओर से भगवान महावीर पर हुए उपसर्ग एवं चंडकोशिक नाग की दिल को मोहित करने वाली भांकियां थी। जिसके बाद में कन्या पाठशाला द्वारा चन्दनबाला द्वारा सेठ के पैर धोने की अत्यन्त ही सुन्दर भांकी थी। इन भांकियों की कतार में श्री वर्द्धमान जैन मंडल द्वारा आयोजित जीप पर भगवान महावीर स्वामी के कानों में कीले ठोकने एवं चन्दनबाला द्वारा भगवान महावीर को पारणा करवाने की अत्यन्त ही मनमोहक भांकियां थी। जिसके पीछे श्री विचक्षण जैन महिला मण्डल की अत्यन्त ही सुन्दर वस्त्रों एवं गहनों से सजी सास बहू की भांकी थी। इसके पीछे बाईस जैन समाज के युवकों द्वारा ऐतिहासिक महाराणा प्रताप एवं भामा- शाह की बहुत ही सुन्दर भांकी थी। भांकियां के अन्त में भारत विख्यात श्री श्वेताम्बर जैन तीर्थ श्री नाकोड़ा का मनलुभावना चांदी के रथ का प्रदर्शन श्री वर्द्धमान जैन मण्डल द्वारा किया गया था। जिसमें राजा श्रेणिक द्वारा भगवान महावीर को वन्दना करने का प्रदर्शन था।

करीबन एक मील इस विशाल जलूस में भांकियों के पीछे पूज्यवर विचक्षण श्री जी महाराज साहिबा की सुशिष्या मुक्तिप्रभा श्री जी महाराज साहिबा एवं अन्य साध्वियां सम्मलित थी। जिसके पीछे हजारों महिलाऐं चल रही थी। हजारों जैन एवं अजैन नागरिक इस जलूस में सम्मलित हुए। जन साधारण का कहना है कि बाड़मेर के इतिहास में ऐसा ऐतिहासिक सुन्दर एवं विराट जलूस पहले कभी नहीं निकला। सभी जैन एवं जैनेतर समुदाय ने इस जलूस की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

जलूस जैन न्याति नोहरे में आकर पूज्यवर मुक्ति प्रभा श्री जी के मंगलाचरण के पश्चात समाप्त हुआ।

महावीर जयन्ती पर प्रतियोगिता का आयोजन

महावीर जयन्ती के शुभअवसर पर भगवान महा- वीर की २५०० वीं निर्वाण महोत्सव समिति द्वारा लेख एवं संगीत प्रतियोगिता का सार्वजनिक रूप से आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में जैन एवं जैनेतर लोगों ने भाग लिया।

जयन्ती के शुभ अवसर पर हायर सैकन्ड्री स्कूल तक के विद्यार्थियों की भगवान महावीर का जीवन चरित्र पर लेख प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें सर्वश्री पुखराज छाजेड़ प्रथम, श्री प्रकाशचन्द द्वितीय एवं श्री महीपतराज तृतीय रहे। इसी प्रकार कालेज विद्यार्थियों के लिये "भगवान महावीर" की विश्व को देन पर लेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें श्री मांगीलाल प्रथम, श्री बाबूलाल द्वितीय एवं श्री ललीत कुमार तृतीय रहे।

जयन्ती पर धार्मिक संगीत प्रतियोगिता का आयो- जन किया गया जिसमें श्री परमानन्द प्रथम, श्री टीकमचन्द जैन द्वितीय एवं श्री बंशीधर तातेड़ एवं श्री किशनलाल तृतीय रहे।

इन प्रतियोगिता विजेताओं, सभी जैन मंडलों एवं संस्थाओं के अध्यक्षों को श्री सुल्तानमल जैन ने पुरुस्कार देकर सम्मानित किया।

महावीर जयन्ती पर सार्वजनिक सभा का आयोजन

भगवान महावीर जयन्ती के अवसर पर भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण महोत्सव समिति द्वारा गांधी चौक में सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। इस सार्वजनिक सभा की अध्यक्षता श्री राधाकृष्ण त्रिपाठी अतिरिक्त जिलाधीश बाड़मेर द्वारा की गई।

इस सार्वजनिक सभा में वकील श्री वंशीधर प्रव्यकता श्री भूरचन्द शाह, डा० केवलचन्द जैन, जसोल के श्री भंवरलाल भंसाली, श्री नेनमल जैन, चौपड़ा साप्ताहिक के सम्पादक के सम्पादक श्री मीठालाल चौपड़ा एवं सभा के अध्यक्ष माननीय श्री राधाकृष्ण त्रिपाठी ने भाषण दिये। भगवान महावीर के जीवन, उपदेशों एवं उनके बताये सिद्धान्तों पर सविस्तार से प्रवक्ताओं ने देर रात तक भाषण दिये। हजारों की तादाद में बाड़मेर के नगर के लोग धैर्य एवं शान्ति के साथ सुनते रहे।

इस विराट सार्वजनिक सभा में भगवान महावीर स्वामी का आदम कद रंगीन चित्र सभा की शोभा बढा रहा था।

इस रंगीन चित्र को माननीय श्री केसरीमल पुरोहित अवकाश प्राप्त चीफ फोटो ग्राफर जन सम्पर्क विभाग राजस्थान के निर्देशों में फोटो सेन्टर गांधी चौक बाड़मेर ने बनाया। इस चित्र को श्री भंवरलाल S/o सोनराज बोहरा ने रू० ५०१) देकर श्री पार्श्वनाथ जिनालय, जूनी चौकी का वास बाड़मेर को भेट किया। जो इस समय श्री वर्द्धमान जैन मंडल के कार्यालय में चित्र दर्शनार्थ उपलब्ध है।

बाड़मेर में अखिल भारतीय जैन पत्र पत्रिकाओं की प्रदर्शनी का आयोजन—

भगवान महावीर जयन्ती के शुभ अवसर पर भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण महोत्सव समिति की ओर से अखिल भारतीय जैन समाचार पत्र पत्रिकाओं की प्रदर्शनी का आयोजन जैन न्याति नोहरे में किया। इस प्रदर्शनी को तीन दिन तक हजारों लोगों ने देखकर आनन्द प्राप्त किया। इस प्रदर्शनी में जैन शासन श्वेताम्बर जैन, तरूण जैन, जैन गजट, जैन मित्र, शाश्वत धर्म, युगचरण, दिग जैन, अणुदीपक, अणुव्रत सत्यार्थ, जैन शासन, मंगल प्रभात, जिन सन्देश, विश्व-वात्सल्य, दशा श्रीमाली, संस्था न, अहिंसा सन्देश, शान्ति ज्योति, वल्लभ सन्देश, मधु सन्वच, प्रकाश समीक्षा, धर्म ज्योति, हिंसा विरोध, सुख संगम, शान्ति अग्रदूत पदमावती सन्देश, ओसवाल युवक सन्देश, सुघोषा, जैन शिक्षण साहित्य श्री जैन धर्म प्रकाश, गुलाब आत्म धर्म, जैन प्रकाश, श्री महावीर शासन, जैन जागृति, श्राविका विजयानन्द श्रमणोपासक सम्यग दर्शन दिगम्बर जैन, जैन महिला दर्श हिंसा विरोध, जैन भारती, जिनवाणी, मणिभद, सन्मति वाणी, युवा दृष्टि, श्रवण जैन जगत श्री अमर भारती, अणुव्रत, श्रमण, कुशल निर्देश, जैन सिद्धान्त भास्कर, जैन जनरल, सम्बोधि, सन्मति सन्देश, धर्मवाणी, तीर्थंकर, जैन बालक आदि जैन समाचार पत्र पत्रिकाएँ प्रदर्शित की गई थी।

इस जैन पत्र पत्रिकाओं के प्रदर्शनी को लगाने में सभी जैन मण्डलों एवं परिषदों के कार्यकताओं के साथ श्री मांगीलाल संखलेचा एवं बाबूलाल बोथरा के अतिरिक्त कई नवयुवकों का सक्रिय योगदान रहा। बाड़मेर में इस प्रकार की प्रदर्शनी का प्रथम बार आयोजन किया गया था।

समिति के मंत्री श्री भूरचन्द जैन राजस्थान प्रदेश भगवान महावीर की २५०० वाँ निर्वाण महोत्सव समिति का सदस्य एवं जिला भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण महोत्सव समिति गठन करने के लिये संयोजक नियुक्त किये गये। इससे इस समिति को समय समय पर प्रदेश की समस्त गतिविधियों से अवगत होने का अवसर मिलता रहा। बाड़मेर नगर समिति ने राष्ट्रीय प्रदेश स्तर पर गठित समितियों को कई प्रकार के ठोस सुझाव और कार्यक्रम दिये जिसे सभी स्तर पर से हटाया गया।

इस समिति का यह विवरण ४ अप्रेल ७४ महावीर जयन्ती तक का है। मैं सभी जैन बन्धुओं से प्रार्थना करूंगा कि वे इस समिति को अधिक सुदृढ़ बनाने में तन मन और धन से सक्रिय योगदान दें।

●

वाड़मेर से लोद्रवा (जैसलमेर) पैदल संघ यात्रा

—श्री हुक्मीचन्द मालू

यह एक सौभाग्य की वात है कि एक महान वीर्थ लौद्रवपुर (जैसलमेर) के दर्शन करने का सौभाग्य हुआ। यह संघ वीर संवत् २४९९ विक्रम सवत् २०३० मिति माह सुदी ८ तदनुसार दिनांक ३१-१-७४ को प्रातः वाड़मेर से ७-१५ वजे पैदल रवाना हुआ। इस संघ का संचालक वाड़मेर जैन श्री संघ वाड़मेर ने किया।

ऐसा ही प्रथम संघ मुनिराज श्री १००८ श्री कांतिसागरजी की प्रेरणा से आपने संवत् २०१८ माह सुदी ५को निकाला था। यह द्वितीय संघ पैदल यात्रा संघ वाड़मेर से गणिवर्य श्री बुद्धिमुनिजी म० सा० के शिष्य श्री साम्यानन्द मुनिजी एवं श्री जयानन्द मुनिजी म० सा० सहित महान् तपस्वी गणिवर्य पूज्य श्री हेमेन्द्र सागरजी म० सा० की आज्ञानुवर्तीनी श्री विचक्षण श्री जी म० सा० की विदुषी सुशिष्या कोयल कंठी, शतावधानी, साहित्यरत्न मनोहर श्री जी म० सा० व मुक्ति प्रभा श्री जी म० सा० आदि ठाणा ६ के सद् प्रेरणा से निकाला गया था। इस संघ में साध्वी श्री समुद्रय प्रभा श्री जी आदि ठाणा ७ एवं ७३ श्रावक व २७७ श्राविकाएं सम्मिलित रही।

इस चतुर्विध पैदल यात्रा संघ का आयोजन वाड़मेर जैन श्री संघ, वाड़मेर ने किया। यह एक महान् पुण्य का कार्य था। इस पैदल यात्रा चतुर्विध संघ को जैनधर्म में वहुत ही उच्च स्थान दिया गया है।

इस सघ में सभी तरह की सुख-सुविधाऐं उपलब्ध थी। प्रत्येक कार्य को सुचारू रूप से चलाने हेतु एक व्यवस्था कमेटी भी वनाई गई थी जिसमें निम्नलिखित महानुभाव समिति के सदस्य थे।

१. श्री जोरावरमल मालू
२. श्री हुक्मीचन्द मालू
३. श्री भगवानदास बृजलाल बोथरा
४. श्री मांणकमल बोथरा
५. श्री सुरतानमल संखलेचा
६. श्री आदमल संखलेचा
७. श्री सागरमल संखलेचा
८. श्री अमोलखचन्द संखलेचा
९. श्री भगवानदास सेठिया
१०. श्री हस्तीमल पड़ाईया
११. श्री भूरचन्द धारीवाल
१२. श्री लाधूराम पड़ाईया
१३. श्री भंवरलाल आदमल बोहरा
१४. श्री जीवणमल छाजेड़
१५. श्री रिखबदास वडेरा
१६. श्री करनमल वडेरा
१७. श्री आसूलाल लूणिया
१८ श्री द्वारकादास भंसाली
१९. श्री जावतराज परतापमल

श्री भगवानदास सेठिया

इस पैदल सघ यात्रा को आरम्भ करवाने में श्री भगवानदास सेठिया का अनुकरणीय योगदान रहा । वैसे इस समिति के सभी सदस्यों एवं नगर के अन्य कई जैन नागरिकों की इस पैदल यात्रा संघ को निकलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

बाड़मेर से यह पैदल यात्रा संघ प्रथम दिन ८ मील चल कर भाडखा ग्राम पहुँचा। वहां के जैन श्री संघ ने पैदल यात्रा चतुर्विध संघ का भव्य स्वागत बधाकर किया। संघ ने यहां मंदिर में भगवान के दर्शन सामुहिक रूप से किए। यहां से रवाना होकर संघ कोटड़ा पहुँचा। जहां श्री शीतलनाथ भगवान की प्राचीन मूर्ति को देखकर सभी के दिलों में आनन्द छा गया। सबकी इच्छा होती थी कि एक बार फिर दर्शन करें। मूर्ति के दर्शन करने से मन में यह विचार होता ही कि भगवान ने कितने अच्छे कर्म किये है तभी मोक्ष की प्राप्ति हुई। अतः हमें भी ऐसी ही प्रतीज्ञा लेनी चाहिए। इस प्रकार से भावना स्वतः ही बढ़ जाती है। यह बहुत ही प्राचीन मन्दिर है।

कोटड़ा में रात भर विश्राम किया। वहां के जैन संघ ने पैदल श्री संघ से विनती की कि इस पावन भूमि को भी चतुर्विध पैदल यात्रा संघ के पैर करावें यह ग्राम सड़क से ७ मील दूर पड़ता है। इस रास्ते पर चलने के लिए कच्ची सड़क बनी हुई है। फिर भी

चतुर्विध संघ ने विनती स्वीकार करके कोटड़ा पधार के देव दर्शन, पूजा पाठ आदि किये। दिन में एक सार्वजनिक व्याख्यान भी रखा गया जिसमें गांव के जैन व जैनेतर लोगों ने व्याख्यान सुनने का लाभ लिया एवं मंदिर का जीर्णोद्वार भी कराने का निश्चय किया। जैन श्री संघ की ओर से श्री संघ का खूब अच्छी तरह से स्वागत किया।

दूसरे दिन सुबह वहां से रवाना होकर शिव पहुंचे जो कि एक तहसील मुख्यावास है। बीच रास्ते में भूरंट ने काफी तकलीफ दी फिर भी लोगों ने रास्ते को पार किया। वहां से आगे देवका पहुँचे जो कि यात्रा काफी लम्बी व तकलीफ देने वाली थी। उस दिन सब लोग इतने थक गये थे कि जिसका वर्णन करना मुश्किल है, तो भी प्रवासी लोग आगे आगे बढ़ते गये। फिर देवका से जाट की ढाणी एवं वहां से सांगड़ पहुंचे वहां पर ठहरने की अच्छी व्यवस्था थी सांगड़ से देवीकोट पहुंचे। वहां भी जैन प्राचीन मन्दिर है। जिसके दर्शन करके सेवा पूजा से निवृत होकर एक पो पहुँचे। पो से डावली और वहां से सीधे जैसलमेर पहुँचे। जैसलमेर में जैन श्री संघ की ओर से भव्य स्वागत किया गया। जिसमें श्री संघ के प्रमुख व्यक्तियों को मालाऐ पहनाई गई।

१. श्री जीवणमल छाजेड़
२. श्री जोरावरमल मेहता
३. श्री भगवानदास वृजलाल बोथरा
४. श्री भगवानदास सेठिया
५. श्री आदमल बोहरा
६. श्री लाबूराम पड़ाईया
७. श्री आदमल संखलेचा

जैसलमेर जैन श्री संघ
बाड़मेर
जैन श्री संघ का
स्वागत करते हुए

शहर में जुलूस की धूम धाम से शहर गूंज रहा था। यहाँ रात्रि विश्राम किया। सुबह लौद्रवापुर के लिए रवाना हुए। वहां पर ठहरने के लिए जैन श्री संघ जैसलमेर पेढी ने लौद्रवा तीर्थ पर पूरी व्यवस्था की थी। जैन श्री संघ की ओर से पंडल भी खींचा था उसमें दिन में आम सभा का आयोजन भी किया गया। जिसका संचालन श्री भूरचन्दजी जैन ने किया तथा यात्री प्रवासियों की ओर से वाड़मेर जैन श्री संघ को मान पत्र भेट किया गया जिसे मुझे प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। इस संघ प्रवास के दौरान साथ में चलने वाले सभी मंडल के कार्यकर्ताओं, टैंटवाले, कंदोईयों, मजदूरों आदि ने तन व मन से सहयोग दिया वे वास्तव में धन्यवाद के पात्र है।

यात्रियों की सेवा व सुरक्षा के लिए श्री आदिश्वर व श्री पारस जैन मंडल के कार्यकर्त्ताओं ने तन, मन से रात दिन सेवा का कार्य किया। दोनों मंडल के अनेकों कार्य कर्त्ताओं ने तेज आंधी, कड़ाके की सर्दी में पैदल यात्रा संघ में सम्मलित लोगों की हर प्रकार की सेवा की। इन की सेवाएं प्रशंसनीय रही।

इस संघ यात्रा में वास्तव में सम्मलित होने वाले लोगों की अपनी भावना पूरी हुई। धन्यवाद हैं उन कर्मण्ठ कार्य कर्ताओं को जिन्होंने दिन रात एक कर श्री संघ का कार्य क्रम आरम्भ किया। अपना अमूल्य समय निकाल कर सैकड़ों लोगों को धर्म ध्यान, देव दर्शन, पूजा पाठ करने का शुभ अवसर प्रदान करने का कष्ट किया।

किसी ने कहा है कि—

अरव खरब की सम्पदा उदय अस्त हो जाय
धर्म विना सब व्यर्थ है जो पत्थर भर जहाज
तन से सेवा कीजिये, मन से भले विचार
धन से इस संसार में, करे पर उपकार

चतुर्विध संघ की पैदल यात्रा आरम्भ करवाना सौभाग्य की बात होती है। ऐसे सामुहिक पैदल तीर्थ यात्रा परम कल्याण कारक हैं।

इसी चतुर्विध संघ में पैदल यात्रा करने वाले संघ प्रवासियों की सर्दी ने परीक्षा ली। तेरह दिन के निरतंर समय में ५ दिन तो इतनी सांगों पांग सर्दी पड़ी कि जिसका वर्णन करना मुश्किल है। इस कड़ाके की सर्दी में भी संघ प्रवासियों ने निरन्तर पैदल यात्रा शान्ति पूर्वक सम्पन्न की। यह अच्छे मुहर्त का प्रतीक था जिसके कारण प्रवासी को कोई तकलीफ नहीं हुई।

इस संघ की पैदल यात्रा को जिसने सफल बनाया वे वास्तव में धन्यवाद के पात्र है। यद्यपि मैने अपनी ओर से पूर्ण वर्णन किया है, फिर भी इस के दौरान कोई भूल हो गयी हो तो क्षमा चाहता हूँ।

पूज्यवर मुनि श्री कांतिसागरजी एवं दर्शनसागर जी महाराज साहब के तत्वाधान में श्री भंवरलाल वोहरा ने नाकोड़ा में उपधान करवाया। उस समय नाकोड़ा तीर्थ के अध्यक्ष श्री सूरजकरण के० सिंघवी का अभिनन्दन किया गया। श्री वर्धमान जैन मंडल के अध्यक्ष श्री वंशीधर वोहरा स्वागत करते हुए।

श्री वर्द्धमान जैन उद्योग शाला

बाड़मेर (राजस्थान)

श्री चिन्तामणदासजी पड़ाईया (M/S चिन्तामणदास हंसराज)
उद्योग शाला का उद्घाटन करते हुए

उद्घाटन के अवसर पर पापड़ वेलने का दृश्य

श्री विचक्षण महिला मंडल

बाड़मेर (राजस्थान)

द्वारा

बाड़मेर जैन धार्मिक शिक्षण शिविर
में सांस्कृतिक कार्यक्रम के दृश्य

कु० विद्या ने
सांस्कृतिक कार्यक्रम
में महत्वपूर्ण
भूमिका निभाई

जम्बू स्वामी नाटक का दृश्य
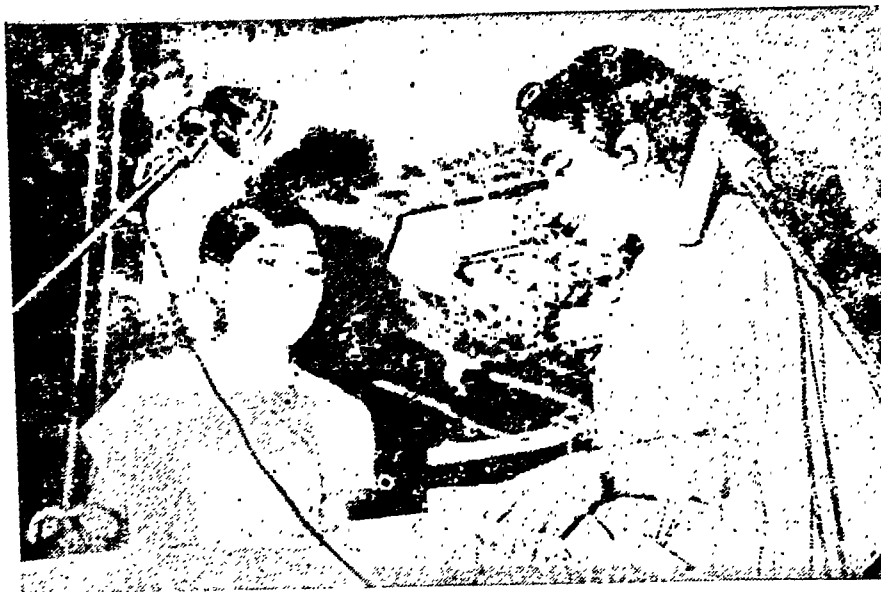
सेठानी नौकरानी नाटक का दृश्य
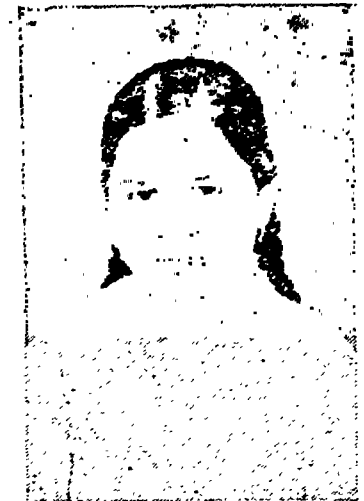
कु० मधु सर्वश्रेष्ठ कलाकार

भगवान महावीर स्वामी के बताये सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, औचित्य का भगवान श्री महावीर के २५००वें निर्वाण महोत्सव के अवसर पर व्यापक रूप से प्रचार करें– तभी सही मायने में हम सबकी इस महान् विभूति के प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी—

— इन्हीं शुभ कामनाओं

* मैसर्स आसूलाल

— अनाज के थोक वि

सिवान्ची गेट, जोध

फोन : २२५६६

भगवान महावीर

२५०० वां निर्वाण महोत्सव

१३ नवम्बर १९७४ से १५ नवम्बर १९७५

तक

सम्पूर्ण भारत वर्ष में बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है

आप भगवान महावीर के उपदेशों

का

अधिक से अधिक प्रचार करें

और

निर्वाण महोत्सव के सभी कार्यक्रमों में तन, मन और धन से सहयोग प्रदान करावें।

— विनीत —

भंवरलाल बोहरा

बोहरा [illegible] एजेन्सी, जोधपुर

卐

नेमीचन्द गोलेच्छा

प्रथम श्रेणी ठेकेदार,

[illegible] की पोल, बाड़मेर (राज)

卐

मैसर्स [illegible]मल शंकरलाल

कपड़े के थोक व्यापारी

[illegible] मार्केट, अहमदाबाद